नवम्बर 2025 रु.20/-

गाँव गिराँव

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

बिहार विधानसभा चुनाव
कौन तोड़ेगा चक्रव्यूह ?

विश्वास करेंगे एक बार, इस्तेमाल करेंगे बार-बार...

SRI HARIVANSH ENTERPRISES

Corp. Of Goel Tower Anura Kala, Chinhat Lucknow-226028 (U.P.)
Production Unit: Sandauli Umarpur, Safedabad, Barabanki - 225003 (U.P.)
Customer Care No.: +91 9415867528

गाँव गिराँव

वर्ष : 14, अंक : 12, नवम्बर 2025, पृष्ठ 44, मूल्य : 20/-

सलाहकार सम्पादक - योगेन्द्र नारायण, दिनेश चंद्र
सम्पादक - श्रीधर द्विवेदी
समाचार सम्पादक - डॉ. पंकज कुमार ओझा
प्रबन्ध सम्पादक - गुरु प्रसाद शुक्ल
सहायक सम्पादक - कमलेश पाण्डेय, रविन्द्र प्रताप सिंह गोपाल मौर्य, महेश कुमार यादव
उप सम्पादक - वीरेन्द्र कुमार विन्द नागेश्वर सिंह, रामप्रसाद यादव
विज्ञापन प्रबन्धक - उमेश चन्द जैन
डिजिटल एग्जिक्यूटिव - इ. अमित पटेल
लेआउट व डिजाइन - मंजीत कुमार गुप्ता

नेशनल मीडिया एक्जक्यूटिव
महेन्द्र प्रसाद गांधी-9415874679

राज्य प्रभारी - दिल्ली - यश सिंह 8882678591
चंडीगढ़ - ओ.पी. राय 8009069795
लुधियाना - गुरदीप सिंह-9815453958
पटना - अमित मिश्रा- 9263056540
पूर्वी उ0प्र0 - प्रदीप राय- 8546055042
पश्चिमी उ0प्र0- अनिल कुमार बाजपेयी-8052159000
लखनऊ - डा. विजयकांत पाण्डेय - 8795506060
प्रयागराज- मनोज पाण्डेय - 9140410568
मिर्जापुर - राजेश कुमार मिश्र- 6393139610
म0प्र0 - प्रहलाद पटेल - 7566126043
रीवा- नन्दलाल पाण्डेय- 9981962439

विशेष प्रतिनिधि- अरविन्द सिंह (वाराणसी) 9919442266 कालीदास त्रिपाठी (चन्दौली) 9838454120, ओमकार नाथ- 9415698795, अशोक जायसवाल- 9451891800, मनोज यादव- 9598155820

कार्पोरेट आफिस

गाँव गिराँव मीडिया प्रा0लि0
मिथिलेश कुमार (ब्यूरो चीफ)
सी-216, सेक्टर-63 नोएडा, गौतम बुद्धनगर
उत्तर प्रदेश पिन-201309
मो0 - 9811191394, 9910768136
ई-मेल – gaongiraw@gmail.com
बेवसाइट - www.gaongiraw.in

मुम्बई ब्यूरो- 704/25 सोनम मारी गोल्ड, राम मन्दिर के पास, ओल्ड गोल्डेन नेस्ट-3 मीरा भयन्दर रोड भयन्दर, (ईस्ट) थाणे महाराष्ट्र-401105 8850955358, 9930046946

हेड ऑफिस पत्राचार- 13, दीपशिखा अपार्टमेंट गांधीनगर, सिगरा, वाराणसी, उ्प्र-221010 मो.- 9450825966, 7525825966

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीधर द्विवेदी द्वारा युग सत्य प्रिंटिंग प्रेस, शिवपुर वाराणसी उ0प्र0 से मुद्रित व शि.15/137 भरलाई शिवपुर, वाराणसी (उ0प्र0) 221009 से प्रकाशित।

RNI No - UPHIN/2012/41296

भीतर के पन्नों पर

विचार बिन्दु :
वायु व ध्वनि प्रदूषण रोकने में असफल सरकारी तंत्र... 2
कवर स्टोरी :
अपनों के चक्रव्यूह में नीतिश 3-8
समीक्षा
गुलाम दिमाग की भारतमाता 9-11
कविता
गोलेन्द्र पटेल की तीन कविताएं 12-13
कमर मेवाड़ी की कविताएं 14
लघुकथा
विज्ञान भूषण की तीन लघुकथाएं 15
सपना चन्द्रा की तीन लघुकथाएं 16
कहानी
कुर्ते की वापसी 17-18
लौ 19-20
व्यंग्य
भैया रिटायर क्या हुए... 21
सराहनीय
शैलेंद्र कुमार की प्रेरक यात्रा 22
उद्यम
बालको ने चलाया... 23
उपलब्धि
पीवीयूएनएल ने हासिल किया... 24
स्मृति शेष 25-30
पर्यटन
नवंबर में घूमने का शानदान मौका 31
ब्यूटी फैशन
दही-चीनी से पाएं ग्लोइंग स्किन 32
खेती बाड़ी
नवंबर महीने में सब्जी... 33
सर्दियों में लगाएं सदाबहार का पौधा 34
धर्म-कर्म- देवउठनी एकादशी से शुरू होगा... 35
ज्योतिष 36
स्वास्थ्य- वैज्ञानिकों ने जारी किया 'महाठंड' अलर्ट 37
खेल-खिलाड़ी
बनेगा आधुनिक आर्चरी सेंटर 38
खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स राजस्थान में 39
सिने-जगत 40

पाठकों से– पत्रिका के लिए आपके प्रतिक्रिया, सुझाव, विचार आमंत्रित हैं।
ई मेल–gaongiraw@gmail.com पर भेजें। – सम्पादक

नोट– पत्रिका में प्रकाशित लेख, विचार लेखकों के अपने हैं, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। पत्रिका में दिये गये पद अवैतनिक हैं। समस्त विवादों का न्यायक्षेत्र वाराणसी न्यायालय क्षेत्र में ही मान्य होगा।

वायु व ध्वनि प्रदूषण रोकने में असफल सरकारी तंत्र...

ध्वनि प्रदूषण नियंत्रण करने में इसी तरह सरकार असफल रही है। पटाखों का शोर, डीजे, हार्न आदि से मानव मस्तिष्क पर प्रतिकूल असर पड़ता ही है पशु पक्षी भी पलायन कर जाते हैं। प्राकृतिक असंतुलन का असर झेल रहे देश के सामने ऐसी कई समस्या है जो खुद उसके द्वारा जनित है तो झेलना भी खुद को ही पड़ेगा। मगर वह एक दूसरे को दोषी ठहरा कर खुद के दायित्व से पलायन कर रहा है। मानव जनित इस तरह के संकटों से निपटने के लिए सरकार और न्यायपालिका को कठोर निर्णय लेने होंगे। सरकारी तंत्र को मजबूत करना होगा।

भारत में मानव जनित वायु प्रदूषण के कारण वर्ष 2022 में 17 लाख से अधिक असामयिक मौतें हुई थी यह दावा प्रतिष्ठित चिकित्सा पत्रिका 'द लांसेट जर्नल' का है परन्तु अब तक तो हालात और गम्भीर हो चुके हैं। केवल वाहन प्रदूषण के आधार पर तैयार आंकड़ों के अलावा वायु प्रदूषण के सभी कारणों को जोड़ने पर यह आंकड़ा बहुत कम पड़ जाता है। औद्योगिक प्रतिष्ठानों, पटाखों और खदानों के प्रदूषण से शहर ही नहीं आम आदमी का जनजीवन प्रभावित हुआ है। पटाखों ने तो रासायनिक जहर के साथ साथ ध्वनि प्रदूषण से भी बेहाल कर दिया है। केवल दिल्ली के हालात से पूरे देश की स्थिति का अंदाजा भी लगाया जाए तो दीवाली के पटाखों ने ही अधिकांश शहरों के हालात बद से बद्तर कर दिया। प्रदूषण से राहत के लिए कृत्रिम वर्षा से नहा भी नहीं पायी दिल्ली। वैसे भी वैज्ञानिकों ने कहा कि यह स्थाई हल नहीं है।

सरकारी तंत्र जब दिल्ली को सुरक्षित नहीं रख सकता तो अंदाजा लगाया जा सकता है कि वह देश के अन्य शहरों गांवों, कस्बों को कैसे सुरक्षित रख सकता है। ध्वनि और वायु प्रदूषण के कारण मानव जीवन पर इतना प्रतिकूल असर पड़ा है कि आंकड़ा जुटाना कठिन है। सरकार और न्यायपालिका को किसानों का प्रदूषण दिखाई दे जाता है मगर इन रासायनिक, औद्योगिक प्रतिष्ठानों और खदानों के धूल धुएं से घुट घुट कर मौत के मुंह में जा रहे मजदूरों की दशा दिखाई नहीं देती।

सवाल यह है कि सरकार के विभाग प्रदूषण पर केवल रिपोर्ट तैयार करने के लिए बनाए गए हैं या इनके पास रोकथाम का भी अधिकार है। आंकड़ों की बाजीगरी, जांच पड़ताल और खानापूर्ति के खेल से बचकर इमानदारी से काम करने की जरुरत है।

ध्वनि प्रदूषण नियंत्रण करने में इसी तरह सरकार असफल रही है। पटाखों का शोर, डीजे, हार्न आदि से मानव मस्तिष्क पर प्रतिकूल असर पड़ता ही है पशु पक्षी भी पलायन कर जाते हैं। प्राकृतिक असंतुलन का असर झेल रहे देश के सामने ऐसी कई समस्या है जो खुद उसके द्वारा जनित है तो झेलना भी खुद को ही पड़ेगा। मगर वह एक दूसरे को दोषी ठहरा कर खुद के दायित्व से पलायन कर रहा है। मानव जनित इस तरह के संकटों से निपटने के लिए सरकार और न्यायपालिका को कठोर निर्णय लेने होंगे। सरकारी तंत्र को मजबूत करना होगा। आम आदमी को इन खतरों के प्रति आगाह करना होगा और राष्ट्र हित में कड़े कानून बनाने होंगे।

घातक रासायनिक पटाखों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाना होगा। कहा गया है कि उपचार से बचाव बेहतर होता है। इस दिशा में सरकारों को सोचना होगा। नियम कानून के दोहरे मापदंड से किसी का हित होने वाला नहीं है। बीमार का निदान करने से बेहतर होगा बीमारी का निदान किया जाए।

अपनों के चक्रव्यूह में नीतिश

अस्तित्व बचाने की लड़ाई में सब अकेले

बिहार विधानसभा चुनाव में एक तरफ सत्तारूढ़ एनडीए है तो दूसरी तरफ इंडिया गठबंधन। इन दो कोणों के बीच जनसुराज के प्रशान्त कुमार मुद्दों के साथ मैदान में उतरे हैं। इस चुनावी जंग में तीनों अकेले हैं। कैसे? विश्लेषण कर रहे हैं वरिष्ठ पत्रकार हरिमोहन मिश्र

पहले चरण के मतदान के लिए पर्चा भरने की वेला बीती जा रही थी, लेकिन सत्ता के दावेदार मुख्य गठबंधनों एनडीए और महागठबंधन में शक-शुबहे, साजिश की अटकलों की शारदीय झड़ी लगी हुई थी। एक ओर पार्टी हित लुटा देने के लिए अपने ही किरदारों को कोसा जा रहा था और 'चिराग नीति' से कभी छोटा भाई के बड़ा बनने के महाजाल में फंसने के आरोप मुख्य दरवाजे पर दस्तक दे रहे थे। दूसरी ओर अपने दायरे फैलाने को उद्धत किरदारों की मुंह फुलवल का संकट इतना बड़ा था कि 6 नवंबर को पहले मतदान के लिए पर्चा भरने के आखिरी दिन के कुछ घंटे पहले देर रात को ही फोटो खिंचवाने का मुहुर्त आया।

दिखावटी मुजाहिरों के इतर, दोनों तरफ दिलों में फांस बदस्तूर कायम दिखता है, जिसके नजारे ईवीएम मशीनों में भितरघात, दोस्ताना लड़ाइयों और साजिशी योजनाओं के रूप में उतरने की आशंकाएं बढ़ती जा रही हैं। फिर, 'सर' वोटर लिस्ट के अक्स भी दिख सकते हैं।

दरअसल 2025 का चुनाव मंडल-कमंडल की पहचान राजनीति के तकरीबन साढ़े तीन दशकों के बाद शायद पहला ऐसा चुनाव होने जा रहा है, जब मुद्दे दिशा बादलने को छटपटाते दिखते हैं और किरदार अपनी जमीन बचाने-फैलाने के लिए हाथ-पांव मार रहे हैं। मुद्दों और किरदारों दोनों की बेचैनी और तुक-तेवर 'अभी नहीं तो कभी नहीं' जैसे हैं। यही वजह है कि इस बार तीसरा प्रशांत कोण भी निकल आया है। तो, इस बार एक मायने में सब वजूद की लड़ाई में अकेले खड़े दिखते हैं।

इसकी साफ पृष्ठभूमि तो 2024 के लोकसभा चुनावों ने तैयार की थी, जब मुद्दों के बदलने से नतीजों पर भारी असर दिखा था। लेकिन प्रत्यक्ष तौर पर कोविड महामारी

के बाद जीवन-मरण, रोजी-रोटी के संकट सुरसा के मुंह की तरह विकराल हुए, तो पहचान की राजनीति की सीमाएं खुलने लगीं और रोजगार, खासकर बिहार में पलायन जैसे मुद्दे आईने के आगे खड़े हो गए। बिहार में पिछले 2020 के चुनावों में इसकी तस्वीर दिखी, जब विपक्ष या महागठबंधन की ओर तकरीबन 7-8 प्रतिशत वोट चले गए थे और आखिर में कुछेक सीटों (महज 12) के हेरफेर से सत्तारूढ़ एनडीए की कुर्सी बच पाई थी।

यह 2024 के लोकसभा चुनावों में भी कुछ हद तक दिखा, जब एनडीए के खाते में कुल 40 में से 30 सीटें ही आईं, वह भी कई सीटें बेहद छोटे अंतर से। 2020 में तो लगभग एक-चौथाई सीटों का फैसला 5,000 से कम वोटों के अंतर से हुआ था। इसलिए इस बार यह देखना अहम हो सकता है कि उम्मीदवारों का चयन कितनी संजीदगी से किया जाता है और नई वोटर लिस्ट के क्या असर होते हैं? ये दोनों मोर्चे अभी साफ नहीं हैं। एनडीए और महागठबंधन दोनों में फिलहाल यही चलन दिखता है कि कैसे अपना दायरा बढ़ाया जाए या जमीन बचाई जा सके।

एनडीए का गुणा-भाग

एनडीए में अपने परिजनों को ही टिकट दिलाने की होड़ दिख रही है। उसके छोटे घटकों उपेंद्र कुशवाहा [illegible] आरएलएसपी और जीतनराम मांझी की पार्टी हम का संकट यही है कि उनके पाले में आई 6-6 सीटें परिवार के लिए ही पूरी नहीं पड़ती हैं। दोनों ही नेता असंतोष का इजहार और कुछ दूसरी सीटों पर लड़ने का इरादा जता रहे हैं, जो उनके हिसाब से चिराग पासवान की लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास पासवान) को इफरात में दे दी गई 29 सीटों में जुड़ गई हैं। मांझी ऐसी ही बोधगया और मकदुमपुर सीटों पर अपने लोग खड़ा करने की बात कर चुके हैं। दरअसल, एनडीए में भाजपा छोटा भाई (भले वह 2020 में नीतीश कुमार की जदयू के 43 के मुकाबले 74 सीटें जीत गई हो) के तमगे से पगहा तुड़ाकर इस बार अपने और जदयू को 101 सीटों पर बराबर ले आई है। इससे कथित तौर पर नीतीश की नाराजगी भी अपने सिपहसालारों संजय झा, विजय चौधरी और राजीव रंजन उर्फ लल्लन सिंह को झेलनी पड़ी, जो भाजपा से सीटों के

बिहार विधानसभा चुनाव दो चरणों में

बिहार विधानसभा चुनाव-2025 दो चरणों में सम्पन्न होने जा रहा है। पहले चरण का चुनाव 6 नवम्बर 2025 को और दूसरे चरण का चुनाव 11 नवम्बर 2025 को सम्पन्न होगा।

गोपालगंज, सिवान, सारण, मुजफ्फरपुर, वैशाली, दरभंगा, मधेपुरा, समस्तीपुर, सहरसा, खगड़िया, बेगुसराय, बक्सर, भोजपुर, पटना, नालंदा, शेखपुरा, लखीसराय और मुँगेर में 6 नवम्बर को मतदान सम्पन्न होगा।

11 नवम्बर को प. चम्पारण, गंडक, पूर्वी चम्पारन, सिवहर, सीतामणी, मधुबनी, सुपौल, अररिया, किसनगंज, पूर्णिया, कटिहार, भागलपुर, बाँका, जमुई, नवादा, गया, जहानाबाद, औरंगाबाद, अरवल, रोहतास और कैमूर में मतदान होगा।

बिहार विधान सभा में कुल 243 विधानसभाएँ हैं। इन दोनों में 6 नवम्बर और 11 नवम्बर को चुनाव सम्पन्न होगा और नतीजे 14 नवम्बर को आ जायेंगे।

ने महिला पेंशन भी बढ़ाई और जीविका दीदीयों का मेहनताना भी दिया और 200 यूनिट तक बिजली मुफ्त देने का वादा भी किया। एक करोड़ रोजगार देने का भी वादा किया गया है। अब नतीजे ही बता पाएंगे कि क्या नजारा उभरता है।

महागठबंधन में झगड़ा व मतभेद

लगभग ऐसा ही नजारा सत्ता के प्रबल दावेदार महागठबंधन में भी दिखा, बल्कि उठा-पटक, उलझन और अपना दायरा बढ़ाने की तपिश कुछ ज्यादा ही आंच पैदा कर रही है। इस कदर कि उसके एक छोटे घटक विकासशील इंसान पार्टी वीआइपी के मुकेश सहनी सीटों के लिए ऐसे अड़े कि पहले चरण के पर्चा भरने की आखिरी तारीख के कुछ घंटे पहले देर रात में ही महागठबंधन के नेताओं को हाथ मिलाकर फोटो खिंचवाने की बारी आई। कहते हैं, बात संभाली भाकपा (माले) के नेता दीपांकर भट्टाचार्य ने यह कहकर कि टूटने का असर बुरा होगा। आखिर सहनी फिलहाल 15 सीटों के साथ हैं। इसी गुरेज से सहनी आखिरी वक्त पर 2020 में एनडीए की ओर चले गए थे। सीटों पर गुरेज माले और बाकी दलों में भी है।

सबसे ज्यादा उलझन कांग्रेस में है। उसमें मतदाता अधिकार यात्रा और राहुल गांधी की वोट चोरी मुहिम से उत्साह है। हालांकि वह 2020 में 70 में सिर्फ 19 सीटें ही जीत पाई थी। इसके अलावा वह 33 सीटों पर दूसरे नंबर पर रही थी। इसी हिसाब से राजद उसे 52 सीटें ही देने को तैयार था। अब शायद कुछ ज्यादा सीटें उसके पाले में आई हैं। अभी तक वह 48 पर अपने उम्मीदवार का ऐलान कर पाई है। कांग्रेस की कोशिश कम लेकिन रणनीतिक रूप से चुनिंदा सीटों पर चुनाव लड़ने की दिख रही है। इसलिए सुपौल जैसी कुछ सीटों पर पेच फंसा हुआ है। पार्टी की उम्मीद अति पिछड़ों और दलितों

तालमेल और जदयू में टिकट बंटवारे का हिसाब-किताब लिख रहे थे।

असल में जब नीतीश के समता पार्टी के जमाने के कई भरोसेमंद साथियों के टिकट कट गए और वे विरोध तथा धरने पर उतर आए तो जदयू में मनीष वर्मा का खेमा सक्रिय हुआ, जो जदयू के पिछड़ा, अति पिछड़ा आधार के झंडाबरदार माने जाते हैं। इसी मूल आधार और महिलाओं तथा पसमांदा मुसलमानों को मिलाकर नीतीश ने अपना समर्थन तैयार किया है। कहते हैं, उसकी उपेक्षा से नीतीश इस कदर नाराज हुए कि कई सीटों पर अपने ऐसे लोगों को टिकट दे दिया, जिन्हें दूर रखा गया था और कई सीटों पर अपना दावा ठोक दिया, खासकर अपने गृह जिले नालंदा, राजगीर के मामले में। ये भी खबरें उड़ीं कि उनकी लालू प्रसाद से भी बात हुई है। शायद उन्होंने यह भी मांग रख दी है कि उन्हें मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार फौरन घोषित किया जाए। इसके संकेत 16 तारीख को एक रैली में उनके भाषण में भी मिला। उन्होंने कहा, 'अब तक काफी कुछ हुआ है। अगले पांच साल भी मुझे काफी काम करना है।' हालांकि अमित शाह ने पटना में 17 अक्टूबर को कहा कि मुख्यमंत्री तो विधायक ही तय करेंगे। अब शायद जदयू की कोशिश यह है कि उसकी सीटों पर पिछली दफा की तरह चिराग-पेच न फंसे। ये भी अटकले हैं कि खासकर चिराग की पार्टी की सीटों पर तिरछी नजर रह सकती है।

इन टंटे-टकरावों के बावजूद एनडीए ने लगभग सभी 243 सीटों पर औपचारिक उम्मीदवारों का ऐलान कर दिया है। हालांकि सत्तारूढ़ गठजोड़ और खासकर नीतीश को एहसास है कि मुद्दे काफी बदल चुके हैं। इसीलिए ऐसी घोषणाएं की गईं, और ऐसे वादे किए गए, जिससे नीतीश हमेशा परहेज करते रहे हैं और उसके खिलाफ भी बोलते रहे हैं। यह नजारा इससे पहले नहीं ही या शायद ही दिखा है, जो राज्य में आदर्श आचार संहिता लागू होने से पहले बिहार के मुख्यमंत्री ने दिखाया। चुनाव आयोग की बिहार के लिए चुनाव तारीखों की घोषणा से बमुश्किल छह घंटे पहले 6 अक्तूबर की सुबह 10 बजे नीतीश ने 21 लाख महिलाओं के खातों में 10-10 हजार रुपये डाल दिए। उसके पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी मुख्यमंत्री सहायता की रकम बांट चुके हैं। इस तरह इस महिला रोजगार योजना के लाभार्थियों की कुल संख्या 1.21 करोड़ हो गई। एक घंटे बाद उन्होंने पटना मेट्रो के पहले चरण का उद्घाटन किया और उसमें सवारी भी की। एनडीए

में पैठ बनाने की है। उसने कई अति पिछड़ा सम्मेलन भी आयोजित किया। फिर, उसके नए प्रदेश अध्यक्ष राजेश कुमार हैं, जो संख्या के लिहाज से महत्वपूर्ण रविदास (एससी) समुदाय से हैं, जिसकी आबादी बिहार के मतदाताओं का लगभग पांचवे हिस्से के बराबर है। कहते हैं, कांग्रेस के कुछ नेता अकेले मैदान में उतरने के भी हिमायती थे।

यह उलझन इस कदर तारी है कि महागठबंधन में अभी भी पूरी तरह सीटों का तालमेल और उम्मीदवारों का ऐलान नहीं हो पाया है। हालांकि उसे उम्मीद है कि नई हवा उसके पक्ष में है। पिछली बार 2020 में राजद अध्यक्ष की गद्दी पर नए-नए बैठाए गए तेजस्वी ने लगभग असंभव को संभव कर दिखाया था। तब उन्होंने दस लाख सरकारी नौकरियों के साहसिक वादे से फिजा बदल दी थी। इस बार भी वे नया वादा 'हर घर में एक सरकारी नौकरी' ढूंढ लाए हैं। भाजपा और उनके विरोधी पिछली बार की ही तरह कह रहे हैं कि कहां से इतनी नौकरियां लाएंगे। लेकिन तेजस्वी की दलील है कि 2022 में नीतीश की सरकार में उप-मुख्यमंत्री रहते उन्होंने पांच लाख नौकरियां देने का वादा पूरा किया था, यह वादा भी पूरा गणित जोड़कर किया गया है।

फिर भी, इस बार 35 वर्षीय तेजस्वी को उससे भी आगे की बुलंदी छूनी है और अपनी पार्टी तथा महागठबंधन दोनों को सरकार बनाने तक पहुंचाना है। उनके लिए असली चुनौती राजद के समर्थन आधार को पारंपरिक मुस्लिम-यादव वोट बैंक से आगे ले जाने की है, जो उन्हें 30 फीसदी वोटों की बढ़त तो दे देता है, लेकिन विधानसभा में साधारण बहुमत के लिए पर्याप्त सीटें नहीं दिला पाता। इसलिए, वे न सिर्फ दलित और महादलितों की ओर पेंग बढ़ा रहे हैं, बल्कि नीतीश के ईबीसी (अति पिछड़ा) वोटों में भी सेंध लगाने की कोशश कर रहे हैं। पिछले महीने कांग्रेस की अगुआई में महागठबंधन ने अति पिछड़ा न्याय संकल्प की घोषणा की, जिसमें ईबीसी अत्याचार निवारण कानून, स्थानीय निकायों में ईबीसी आरक्षण को 20 फीसद से बढ़ाकर 30 फीसद करने और भूमिहीन ईबीसी, एससी, एसटी और ओबीसी परिवारों को आवासीय भूमि देने का वादा है। महागठबंधन बेरोजगारी और पलायन के मुद्दे पर युवाओं के मोहभंग का फायदा उठाने और महिलाओं को 2,500 रुपये देने के वादे के जरिए लुभाने की भी कोशिश कर रहा है। तेजस्वी कहते हैं, 'उनकी सरकार नौकरी, दवाई, पढ़ाई, कार्रवाई की होगी।'

महागठबंधन के वामपंथी सहयोगियों में भाकपा और माकपा प्रतिबद्ध काडर वोट जोड़ते हैं और भाकपा (माले) दक्षिण और मध्य बिहार में अपने मजबूत के साथ लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रही है। लेकिन इन सभी का दायरा सीमित है। ऐसे में तेजस्वी और राहुल गांधा पर विपक्षी एकता की उम्मीदों और बोझ दोनों को उठाने की जिम्मेदारी है।

20 साल की सत्ता के खिलाफ जनाक्रोश

महागठबंधन का अभियान सत्ता विरोधी लहर और नीतीश के लंबे कार्यकाल से उपजी निराशा के इर्द-गिर्द घूम रहा है। तेजस्वी 'नई सोच' का चेहरा हैं, जबकि राजद में जातिगत संतुलन भी बैठाया गया हुआ है और गैर-यादव महत्वपूर्ण पदों पर लाए गए हैं। इस बार अति पिछड़ों और दलितों को ज्यादा उम्मीदवार बनाने और यादवों को अपेक्षाकृत कम सीटें देकर माहौल बदलने की भी कोशिश के संकेत है। विपक्ष के नैरेटिव में 'न्याय और सम्मान' की भावनात्मक अपील को रोजगार की गारंटी, आरक्षण का विस्तार, महिलाओं के लिए आर्थिक मदद और आवास सब्सिडी जैसे

पिछला विधानसभा चुनाव 2020

2020 का विधानसभा चुनाव परिणाम की दृष्टि से बहुत दिलचस्प रहा। एनडीए 125 सीट पाकर सत्ता में आई और इंडिया गंठबंधन 110 सीटें पा सका।15 सीटों का अंतर इस मायने में ध्यान देने योग्य है कि इनमें से अधिकांश सीटें बहुत कम अंतर से जीती गईं। सत्तारूढ़ एनडीए पर धाँधली करने के आरोप भी लगे। वास्तव में मुकाबला बहुत मुश्किल था और सत्तारूढ़ एनडीए 15 में से अधिकांश सीटें गिरते-पड़ते ही जीत सका। गठबंधन के साथ इस बार मुकेश साहनी और पान समूह के गुप्ता जुड़ गये हैं। गठबंधन की शेष संरचना पूर्ववत् है। सीटों के बँटवारे में हो रही किचकिच से गठबंधन पर उँगली उठने लगी थी और इसका राजनीतिक लाभ उठाने के लिए एनडीए बेचैन हो गया था किंतु गठबंधन के नेताओं ने विवाद पर तुरन्त विराम लगाकर और तेजस्वी को मुख्यमंत्री का चेहरा घोषित कर एनडीए के कुप्रचार की हवा निकाल दी। गठबंधन के साथ राजद, कांग्रेस, सीपीआईएम, सीपीआई, सीपीआईएमएल मुख्यघटक हैं।

वादों के साथ जोड़ा गया है।

परदे के पीछे तेजस्वी की टीम ने सोशल मीडिया की सक्रियता और डेटा एनालिटिक्स का इस्तेमाल कर राजद की प्रचार मशीनरी को पेशेवर बना दिया है। फिर भी, यह तय नहीं है कि क्या ये कदम राजद के प्रति अतीत की गहरी धारणाएं तोड़ पाएंगे।

महागठबंधन के बड़े मुद्दे बेरोजगारी, महंगाई, शिक्षा और भ्रष्टाचार है। विपक्ष भाजपा के दबदबे को केंद्रीकरण के रूप में भी पेश करता है। उसकी दलील है कि 'डबल इंजन' की आड़ में बिहार की अपनी स्वायत्त स्थिति खत्म की जा रही है। जहां तक 'जंगल राज' के आरोपों की बात है, तो तेजस्वी ने ऐलान किया है, ''तेजस्वी की परछाई भी अगर गलत काम करे, तो उसकी भी जांच होगी।'' उन्होंने चुनाव घोषणा के बाद कहा, ''14 नवंबर को मतगणना के दिन हम बिहार के पतन के अंत की शुरुआत देखेंगे। बिहार के लोगों का कर्तव्य है कि वे जाति-धर्म, मंदिर-मस्जिद और अन्य तुच्छ मुद्दों को एक तरफ रखकर राज्य से रोजगार के लिए पलायन रोकने और अपने बच्चों के लिए बेहतर शिक्षा और रोजगार के लिए मतदान करें।'' राजद के लिए सिरदर्द परिवार में कलह भी हो सकती है। लालू के बड़े बेटे तेज प्रताप अलग पार्टी बनाकर कई उम्मीदवार खड़े कर रहे हैं।

प्रशांत कुमार का नया एंगल

इस बार राजनैतिक रणनीतिकार प्रशांत किशोर या पीके तीसरा कोण बना रहे हैं, जो कभी दूसरों 2014 में मोदी, 2015 में नीतीश-लालू, 2021 में ममता बनर्जी की जीत में मदद कर चुके हैं। उनकी जन सुराज पार्टी बमुश्किल साल भर पुरानी है, लेकिन जोश जबरदस्त है। हालांकि प्रशांत के राघोपुर से तेजस्वी के खिलाफ खड़े होने के ऐलान के बाद उससे पीछे हट जाने से कई सवाल उठे हैं। वैसे, पीके का अभियान साहसिक है और राजनैतिक नजरिए से सही-गलत की ज्यादा परवाह नहीं करते हैं। उन्होंने जाति के बदले योग्यता, अंधविश्वास के बदले आंकड़ों पर जोर देने का वादा किया है। शराबबंदी हटाना, हर प्रखंड में नेतरहाट शैली का सुपरअचीवर स्कूल बनाना और गरीब बच्चों को निजी स्कूलों में जाने में सक्षम बनाना, रोजगार के लिए पलायन को रोकने के लिए ठोस कदम उठाना...जैसे वादों का पीके अपनी हर रैली में जिक्र करते हैं, और सरकार तथा बिहार की छवि को नया बनाने का वादा करते हैं। उनकी चुनावी रणनीति में आनुपातिक सामाजिक प्रतिनिधित्व और हर सीट पर आबादी के अनुरूप उम्मीदवारों का चयन भी शामिल है।

जन सुराज पार्टी का लक्ष्य उन 25 फीसद मतदाताओं में पैठ बनाना है, जिनके वोट किसी को नहीं मिले हैं। मसलन, जिन मतदाताओं ने 2020 में या तो वोट नहीं दिया था या दोनों प्रमुख गठबंधनों में किसी

के पक्ष में नहीं थे। अगर ऐसे मतदाताओं में एक-चौथाई भी जन सुराज को वोट देने को राजी हो जाते हैं, तो उन सीटों के नतीजों को प्रभावित कर सकते हैं, जहां मुकाबला बहुकोणीय हो। इसके साथ ही पीके भाजपा के कुछ अगड़ी जातियों के वोटों को भी अपनी ओर खींचने की उम्मीद कर रहे हैं। पीके का दूसरा दांव कई मौजूदा मंत्रियों सहित एनडीए के कई नेताओं पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाना है, जिससे बिहार में अपेक्षाकृत साफ-सुथरी सरकार चलाने के एनडीए के दावे को दागदार करना है। उन्होंने महागठबंधन को भी नहीं बख्शा है, योग्यता पर जोर न देने की निंदा की है और तेजस्वी को वंशवाद का प्रतीक बताया है। इसका असर यह है कि पीके के प्रति खासकर शहरी युवाओं में आकर्षण है। लेकिन देखना यह होगा कि कितना फर्क डाल पाते हैं।

नितीश की प्रतिष्ठ दाँव पर

जदयू के दिग्गज नीतीश के लिए यह चुनाव उनके दो दशकों के नेतृत्व पर जनमत संग्रह जैसा भी होगा। और राजद के उत्तराधिकारी तेजस्वी के लिए यह लड़ाई उनके नेतृत्व पर मुहर जैसी होगी। राज्य में विधानसभा चुनाव लंबे समय से राजद-कांग्रेस-वामपंथी धर्मनिरपेक्ष महागठबंधन और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के बीच चिर-परिचित दोतरफा मुकाबला होते रहे हैं, जहां जदयू कभी इधर, कभी उधर और छोटे सहयोगी दोनों गठबंधनों में आते-जाते रहे हैं। लेकिन 2025 का चुनाव तितरफा मुकाबले की संभावना को जन्म दे रहा है। तीसरा कोण प्रशांत किशोर बना रहे हैं, जिनकी जन सुराज पार्टी बिहार के चुनावी व्याकरण को नए सिरे से लिखने की कोशिश में है।

जीतनराम मांझी का कुनबा

इस बार दांव दूसरी वजहों से भी ऊंचे हैं। 2024 के लोकसभा चुनावों से पैदा हुए राजनैतिक माहौल में महाराष्ट्र के बाद बिहार अगली निर्णायक लड़ाई है। लोकसभा चुनावों में भाजपा को अपने दम पर साधारण बहुमत भी हासिल नहीं हो पाया था और उसे नीतीश की जदयू और आंध्र प्रदेश के चंद्रबाबू नायडू जैसे सहयोगियों की बैसाखी का सहारा लेना पड़ा था। इसलिए बिहार चुनाव में ठीकठाक जीत भाजपा के लिए अगले साल पश्चिम बंगाल में अगली बड़ी लड़ाई का भी मंच तैयार करेगी। पार्टी की मंशा है कि बिहार पूरब का प्रवेश द्वार होने के साथ-साथ उसकी राष्ट्रीय रणनीति का आधार भी बने, खासकर जब आम चुनाव में सबसे अधिक सीटों वाले उत्तर प्रदेश में पार्टी को चुनावी नुकसान हुआ है।

बिहार : बेचैन करने वाली स्थितियाँ

राजनैतिक पार्टियों के तमाम राजनैतिक गुणा-भाग और जोड़-तोड़ अलग हैं, लेकिन बिहार की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों के मुद्दे कुछ और ही तस्वीर पेश कर रहे हैं। यकीनन ये मुद्दे नई राजनैतिक दिशा और नीतियों की मांग कर रहे हैं, जो उसे संगीन हालात से निकाल सके। बिहार सबसे पिछड़े राज्यों की कतार में खड़ा है। उसकी प्रति व्यक्ति आमदनी 2024 में 66,828 रुपये सालाना है, जो देश की प्रति व्यक्ति आय 2,05,324 रुपये से कई गुना कम है। फिर, राज्य में 2023 के जाति सर्वेक्षण में पता चला था कि 43 प्रतिशत परिवारों की आमदनी महीने में 5,000 रुपये से भी कम है। फिर रोजगार की स्थिति भी संगीन है। खासकर 15-29 साल के युवाओं में बेरोजगारी दर 9 प्रतिशत से अधिक है। ये युवा ही बदलाव के आकांक्षी और वाहक है। एक मोटे अनमान से ऐसे युवा हर विधानसभा क्षेत्र में 50,000 से ज्यादा हैं। यानी उनका रुख भी नतीजों को प्रभावित करेगा।

रुझान और नतीजे तय करने में चुनाव आयोग की गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया से तैयार वोटर लिस्ट में छांटे गए पहले 65 लाख और फिर 3.66 लाख वोटरों का भी असर हो सकता है। इसके साथ ही करीब 22 लाख जुड़े नए वोटर भी फर्क डाल सकते हैं। आयोग ने अंतिम सूची के बाद इन वोटरों की फेहरिस्त जारी नहीं की है और सुप्रीम कोर्ट से 20 नवंबर को नामंकन प्रक्रिया खत्म होने के बाद जारी करने का वादा किया है। बहरहाल, बिहार में चुनावी जंग काफी रोमांचक होने की संभावना है। इसलिए हर अटकल, हर वादा और हर रुपया फर्क ला सकता है। फिलहाल पलड़ा किसी ओर झुक सकता है। ●

गुलाम दिमाग की भारतमाता

प्रेम सिंह

कभी-कभी जैसे ही मैं किसी सभा में पहुंचता था, मेरे स्वागत में अनेक कंठों का स्वर गूंज उठता था – 'भारत माता की जय'। मैं उनसे अचानक प्रश्न कर देता कि इस पुकार से उनका क्या आशय है? यह भारत माता कौन है, जिसकी वे जय कहते हैं, मेरा प्रश्न उन्हें मनोरंजक लगता और चकित करता। . . . आखिर एक हट्टा-कट्टा जाट, जिसका न जाने कितनी पीढ़ियों से मिट्टी से अटूट नाता है, जवाब में कहता कि यह भारत माता हमारी धरती है, भारत की प्यारी मिट्टी। मैं फिर सवाल करताः 'कौन-सी मिट्टी? - उनके अपने गांव के टुकड़े की, या जिले और राज्य के तमाम टुकड़ों की, या फिर पूरे भारत की मिट्टी?'प्रश्नोत्तर का सिलसिला तब तक चलता रहता जब तक वे प्रयत्न करते रहते और आखिर कहते भारत वह सब कुछ तो है ही जो उन्होंने सोच रखा है, उसके अलावा भी बहुत कुछ है। भारत के पहाड़ और नदियां, जंगल और फैले हुए खेत जो हमारे लिए खाना मुहैया करते हैं सब हमें प्रिय हैं। लेकिन जिस चीज का सबसे अधिक महत्व है वह है भारत की जनता, उनके और मेरे जैसे तमाम लोग, वे सब लोग जो इस विशाल धरती पर चारों ओर फैले हैं। भारत माता मूल रूप से यही लाखों लोग हैं और उनकी जय का अर्थ है इसी जनता जनार्दन की जय। मैंने उनसे कहा तुम भारत माता के हिस्से हो, एक तरह से तुम खुद ही भारत माता हो।' (जवाहरलाल नेहरू, 'भारत की खोज')।

हर साल 5 जून को मनाए जाने वाले विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर केरल की राज्य सरकार और वहां के राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ अर्लेकर के बीच राज्यपाल भवन में आयोजित एक कार्यक्रम में भारत माता के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस)द्वारा प्रायोजित चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करने को लेकर विवाद हुआ। कार्यक्रम में कृषि मंत्री पी प्रसाद और शिक्षा मंत्री वी शिवनकुट्टी को भी रहना था। लेकिन जब कृषि मंत्री पी प्रसाद को पता चला कि तय कार्यक्रम से हट कर भारत माता के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करने का कार्यक्रम भी जोड़ दिया गया है तो उन्होंने आयोजन से अपने को अलग कर लिया। उन्होंने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस समारोह के लिए राजभवन ने एक मिनट-दर-मिनट कार्यक्रम तैयार किया था, लेकिन शुरुआत में उसमें भारत माता के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करने का कोई प्रावधान नहीं था। कार्यक्रम की पूर्व संध्या प्रहर में एक नया कार्यक्रम भेजा गया, जिसमें भारत माता के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करना भी शामिल था।

पी प्रसाद जो पहली बार विधायक बने हैं और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई) के नेता हैं, ने कहा कि मैंने इस बाबत राजभवन से पूछताछ की और उनसे भारत माता का वह चित्र भेजने को कहा जिस पर पुष्पांजलि अर्पित की जानी थी। वह आरएसएस द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला चित्र था, जिसकी कोई आधिकारिक मान्यता नहीं है। मैंने राजभवन को सूचित किया कि हम उस चित्र पर पुष्पांजलि नहीं चढ़ा सकते। राजभवन ने जवाब दिया की चित्र नहीं हटाया जाएगा।

पी प्रसाद ने कहा कि आज़ादी के बाद से संविधान या सत्ता में रही किसी भी सरकार ने कभी भी भारत माता के चित्र-विशेष को आधिकारिक या अधिकृत संस्करण के रूप में स्वीकार नहीं किया है। उन्होंने आगे कहा कि इस कार्यक्रम में इस्तेमाल होने वाले चित्र पर भारतीय ध्वज नहीं, बल्कि एक राजनीतिक संगठन का ध्वज है, इसलिए किसी सरकारी कार्यक्रम के दौरान इसका सम्मान नहीं किया जा सकता। मंत्री ने कहा कि कोई भी राजनीतिक संगठन और राज्यपाल अपने निजी कार्यक्रमों में भारत माता के अपने पसंदीदा चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करने के लिए स्वतंत्र है, लेकिन राज्य सरकार के कार्यक्रमों में ऐसा नहीं किया जा सकता।

उन्होंने आगे कहा कि हम सभी का एक राजनीतिक दृष्टिकोण होता है, लेकिन संवैधानिक पदों पर बैठे लोगों के लिए इसे व्यक्त करने के तरीके सीमित होते हैं। मंत्री ने यह भी सवाल उठाया कि राज्यपाल इस मुद्दे पर अड़ियल क्यों बने हुए हैं, जबकि राज्य के किसी भी पूर्व राज्यपाल, यहां तक कि देश के राष्ट्रपतियों ने भी अतीत में ऐसा नहीं किया है। संवैधानिक पदों पर बैठे लोग सरकारी कार्यक्रमों को राजनीतिक आयोजनों में नहीं बदल सकते। राज्य के शिक्षा मंत्री वी. शिवनकुट्टी ने राय व्यक्त की कि राजभवन और राज्यपाल राजनीति से ऊपर हैं, और अर्लेकर को अपने पद से हट जाना चाहिए।

बहरहाल, राज्यपाल ने राज्य सरकार के पक्ष और बहिष्कार की परवाह

नहीं की। उन्होंने राजभवन के कार्यक्रम में आरएसएस प्रायोजित भारत माता के चित्र का उपयोग किया। जबकि राजभवन का रुख जानने के बाद राज्य सरकार ने कार्यक्रम को सचिवालय के दरबार हॉल में स्थानांतरित कर दिया। राजभवन ने सरकार के कार्यक्रम से अलग अपना कार्यक्रम जारी रखा। कार्यक्रम के बाद राज्यपाल ने कहाकि किसी भी दबाव के तहत भारत माता के साथ कोई समझौता नहीं किया जाएगा। जाहिर है, वे आरएसएस प्रायोजित भारत माता की छवि को ही सही (और अधिकृत भी) मानते हैं।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौर से ही 'भारत माता' को परिभाषित और व्याख्यायित करने की परंपरा मिलती है। यह परंपरा ब्रिटिश साम्राज्यवाद से मुक्ति के लिए सशस्त्र बगावत करने वाले 1857 के लड़ाकों, भूमिगत क्रांतिकारियों,वृहद पैमाने पर जनता के आंदोलन करने वाले नेताओं और उन आंदोलनों में हिस्सेदारी करने वाली भारतीय जनता तक फैली है। भारत की सभी भाषाओं के साहित्यकारों, कलाविदों,कलाकारों, विद्वानों ने अपनी रचनाओं और प्रस्तुतियों के माध्यम से उस विमर्श में अपनी भूमिका निभाई है। जवाहरलाल नेहरू और राममनोहर लोहिया जैसे दार्शनिक प्रतिभा वाले नेताओं ने अपनी लेखनी और वक्तृताओं से भारत माता के स्वरूप से जुड़े विमर्श को समृद्ध किया है। इस सबके चलते भारतीय जनमानस में भारत माता की विविध छवियां कल्पित हुई हैं, जिनके आधार पर भारत माता के कई चित्र उपलब्ध होते हैं। ये चित्र प्रतिष्ठित कलाकारों से लेकर बच्चों तक ने बनाए हैं। इनमें धार्मिक मिथक प्रेरितचित्रों –देवीरूप में भारत माता की कल्पना -से लेकर धर्म-तटस्थ चित्र मिलते हैं। विशिष्ट राष्ट्रीय पर्वों पर बच्चे भारत माता के रूप में चाव से सजते भी हैं। कह सकते हैं कि इस पूरे परिदृश्य में देश के नक्शे की पृष्ठभूमि में तिरंगे परिधान में तिरंगा ध्वज हाथ में लेकर खड़ी भारत माता की छवि को अघोषित राष्ट्रीय मान्यता मिली हुई है। भारत माता का यह रूप देश की भौगोलिक बनावट,विपुल प्राकृतिक सम्पदा और समस्त देशवासियों के अस्तित्व को अपने में समाहित करने के साथ बलिदान और स्वतंत्रता की चेतना का प्रतीक है।

आरएसएस की भारत माता के हाथ में उसके संगठन का भगवा झंडा होता है, न कि भारत का। आरएसएस के चित्र में आभूषणों से सुसज्जित भारत माता शेर का सहारा लेकर खड़ी है, जिसकी पृष्ठभूमि में 'अखंड भारत' का नक्शा है, न कि भारत या भारतीय उपमहाद्वीप का। इस भारत माता के 'साधक' आरएसएस को न आज़ादी के पहले की साम्राज्यवादी गुलामी से विरोध था, न अभी की नवसाम्राज्यवादी गुलामी से। केरल के राज्यपाल ने राजभवन में आयोजित कार्यक्रम में इसी चित्र का उपयोग किया; और जब उन्होंने कहा कि भारत माता के मुद्दे पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता, तो वे यही कह रहे हैं कि आरएसएस की भारत माता ही असली भारत माता है। अर्थात,भारत में आरएसएस की सरकार है, तो सरकारी आयोजनों में भारत माता भी आरएसएस की होगी!

यह आश्चर्य की बात नहीं है कि आरएसएस ने स्वतंत्रता संघर्ष के खिलाफ साम्राज्यवादियों का साथ दिया था, या उसने भारतीय संविधान, राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्र-गान का स्पष्ट अस्वीकार किया था। ये इतिहास के सर्वविदित तथ्य हैं। आश्चर्य की बात यह है कि वह अपनी स्थापना के 100 साल बाद भी अपनी देशभक्ति के खोखलेपन को समझ नहीं पाया है। यह समझने की तो शायद वह योग्यता ही गंवा बैठा है कि राजनीतिक सत्ता के बल पर बलिदान और स्वतंत्रता की चेतना से विहीन भारत माता की छवि थोप कर वह भारत माता का ही सतत अपमान करता है; और संततियों को भी उस लीक पर डालने कि कोशिश करता है। जड़ता की इतनी लंबी स्थिति न किसी व्यक्ति के लिए, न ही समूह/संगठन के लिए, न ही समाज और देश के लिए सही मानी जा सकती है।

आरएसएस कतिपय प्रयासों के बावजूद इस जड़ता को नहीं तोड़ पाता है। इसके मुख्यतः दो कारण लगते हैं। पहला, आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद के सभी विमर्श और विचार ब्रिटिश साम्राज्यवाद के साथ टकराहट से पैदा होते हैं। जबकि आरएसएस का 'हिंदू-राष्ट्रवाद' एक पुरातनपंथी मानसिकता में रचा-बसा है। लिहाजा, भारतीय नवजागरण की विविध अभिव्यक्तियों से आरएसएस का रिश्ता नहीं जुड़ पाता। दूसरा, स्वतंत्रता आंदोलन की विचारधाराओं और उनसे जुड़ी शख्सियतों के साथ आरएसएस का सलूक हाईजैक करने का होता है। उसकी नीयत उन्हें 'हिंदुत्व' अथवा 'हिंदू-राष्ट्रवाद' की जड़ीभूत मानसिकता के पक्ष में इस्तेमाल करने की होती है। हिंदू धर्म के विविध संप्रदायों, अन्य धर्मों और दलित-आदिवासी समुदायों के साथ भी उसका सलूक इसी तरह का है। जड़ता को तोड़ने के लिए विचार के विविध स्रोतों के साथ स्वस्थ संवाद बनाने की योग्यता विकसित करना जरूरी होता है। सभी मनुष्यों और उनके संगठनों में यह संभावना होती है। आरएसएस को भी उसका अपवाद नहीं बने रहना चाहिए।

अर्लेकर इस कार्यक्रम के आगे-पीछे भी इस तरह का विवाद पैदा करते रहे हैं। दरअसल, भाजपा सरकार के ज्यादातर राज्यपालों की कमोबेश यही स्थिति है। वे पद की गरिमा और संवैधानिक शिष्टाचार के बरक्स भाजपेतर राज्य सरकारों के साथ उलझते रहते हैं। उनमें यह हिम्मत कहां से आती है? अर्लेकर की आरएसएस की भारतमाता पर समझौता नहीं करने की सीनाजोरी में एनडीए में शामिल 'सेकुलर' और 'सामाजिक न्यायवादी' नेताओं ने एतराज नहीं उठाया है। संविधान की अभिरक्षक राष्ट्रपति को इसमें कुछ गलत नजर नहीं आया। न ही सुप्रीम कोर्ट को राज्यपाल द्वारा राज्यपाल भवन में किए गए प्रोटोकाल के उल्लंघन में कुछ गलत लगा। विपक्षी पार्टियों ने अर्लेकर की खुली चुनौती के बावजूद इसे विरोध का जरूरी मुद्दा नहीं बनाया। विपक्षी केरल कांग्रेस ने इस मुद्दे पर कुछ नहीं बोलने के लिए मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन की आलोचना करके अपना कर्तव्य पूरा मान लिया। मानो यह केवल केरल राज्य का एकाकी मुद्दा है। विद्वानों/लेखकों/कलाकारों की तरफ से भी इस पर गंभीर चिंता जाहिर नहीं की गई।

तो क्या आरएसएस की भारत माता ही पूरे देश की भारत माता है? पिछले एक दशक से देश का माहौल ऐसा ही बना हुआ है। शैक्षिक/ साहित्यिक/ कलात्मक संस्थाओं और सरकारी विभागों के कार्यक्रमों में आरएसएस के नेता, विचारक, अधिकारी आदि बिना अवसर और जरूरत के भारत माता की जय का नारा बोलते और उपस्थित लोगों से बुलवाते हैं। यहां करीब साल-डेढ़ साल पहले के एक वाकये का उल्लेख करना चाहूंगा। भोपाल की रवीन्द्रनाथ टैगोर प्राइवेट यूनिवर्सिटी का लेखकों को सम्मानित करने का एक कार्यक्रम मध्य प्रदेश दूरदर्शन पर प्रसारित हो रहा था। उसमें उपस्थित साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हिंदी के एक लेखक और साहित्य अकादमी की पत्रिका 'इंडियन लिटरेचर' की अतिथि संपादक को मैं जानता था। इसलिए चाव से कार्यक्रम देखने लगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मध्य प्रदेश के राज्यपाल और शिक्षामंत्री ने अपने भाषण के शुरू और अंत में सभी से भारत माता की जय के नारे लगवाए। भारतीय भाषाओं के कुछ लेखकों के साथ कार्यक्रम में कुछ विदेशी 'भारत-प्रेमी' भी उपस्थित थे। पूरे देश में यह हो रहा है।

नवसाम्राज्यवादी गुलामी के साढ़े तीन दशकों में भारत माता की भक्ति का जुनून बढ़ता गया है। कहा जाता है कि यह देशभक्ति की कसौटी है। मोहन भागवत उपदेश देते रहते हैं कि युवकों को अपनी देशभक्ति का प्रदर्शन करने के लिए भारत माता की जय बोलते रहना जरूरी है। बच्चों में देशभक्ति की भावना पैदा करने और बढ़ाने के कोर्स चलाए जाते हैं। भारत माता की यह भक्ति अपना स्वावलंबन, स्वतंत्रता, संप्रभुता और संवैधानिक शिष्टाचार खोते जाने की पीड़ा से परे होती है। इसमें किसी तरह का कोई जोखिम नहीं है। क्योंकि वह बलिदान की नहीं, पूजा और जयकारों की मांग करती है। नवसाम्राज्यवादी गुलामी के दौर में शासक-वर्ग को ऐसी ही भारत माता चाहिए। ऐसी भारत माता का पेटेंट शुरू से आरएसएस के पास है। उसे अवसर मिला है, जिसका वह पूरा इस्तेमाल कर रहा है।

अंत में कहना चाहूंगा कि इस मुद्दे पर भाकपा नेता पी प्रसाद और बिनोय विश्वम् ने राज्यपाल की हठधर्मिता के बावजूद इस मुद्दे पर बहुत संयत, शालीन, तार्किक और मजबूत ढंग से अपना पक्ष रखा है। ●

प्रेमचंद पर गोलेन्द्र पटेल की तीन कविताएँ

यथार्थ के पार्थ प्रेमचंद

हे आकाशधर्मा अध्यापक! शिवरानी के सोहाग!
बहुत दिनों के बाद मिला है यह सौभाग्य
कि मैं लिखूँ काव्य में तुम्हारी रोशनी का राग
जाग! जाग!! महात्याग तू जाग!
अंतःकरण में आग लगी है लेकिन जलरही है लाग
भाग! भाग!! झाग तू भाग!
धारा की विपरीत दिशा में अनवरत
तैरने की कला है तेरे साथ
और हिम्मत के हाथ भी

हे उदात्त कलाकंद!
अवनि की आत्मा की आँख और आकाश का
पसंद---- प्रेमचंद!
तुम महाजनी मानसिकता एवं सामंती सोच के विरुद्ध
युद्ध हो
शांति की क्रांति का बुद्ध हो
जीवन के रंगमंच पर सामाजिक चित्त के चित्रकार हो
सांस्कृतिक टिप्पणीकार हो
भाषा में उदार हो
आदर्शोन्मुख यथार्थवाद के मंत्र हो
असली लोकतंत्र हो
प्रत्येक पाठक की पुतली हो

तुम्हारे सामने कल्पना और विचारधारा क्षुद्र सिद्ध हो चुकी हैं
आलोचना के अस्त्र-शस्त्र हो रहे हैं बेकार
तुम वेदना के वेत्ता व बुद्धि की वृष्टि हो
नवोन्मेषी इतिहास-दृष्टि हो
नवजागरण की सृष्टि हो

अंधेरे में 'आपका चित्र' आलोक है
'ख़ून सफेद़' दूध जैसा आर्यसमाज का श्लोक है
तुम्हारी लय का व्यापक लोक है
तुम प्रगतिशीलजिज्ञासा के जहाज़ हो
तिमिर की तान के ताज हो

हे समय के शब्द! सत्य के स्वर!
मानवीय मशाल! स्मृति के बरगद विशाल!
काल-त्रिकालसब मानते हैं कि तुम्हारी कृति अमर है
क्या खूब किया तुम ने
समोज्ज्वल संवाद का इस्तेमाल!
सर्वप्रथम तुम ने देखा 'मनुष्यता का अकाल'
सत्ता से पूछा सवाल

हे संवेद्य, संवेदन, संवेदना व संवेदनशीलके चतुष्टय!
अनुभव, ज्ञान, संकल्प व चेतनाधारी नज़र के नंद
--- प्रेमचंद!
मन की हिलोरें हँस रही हैं मंद-मंद
मैं डूब रहा हूँ तुम्हारे पसीने में जहाँ श्रम की सुगंध है
पहुँच गया हूँ 'कल्पकाया' के भीतर
ओ हो! यहाँ नीति और नीयत के बीच नियति है
मगर मष्तिष्क में मौजूद मति है

हे प्रयत्न के रत्न! यथार्थ के पार्थ!
तुम वैश्विक विश्वास हो
आधुनिक भारत का महाभारत लिखने वाले व्यास हो
सच कहूँ तो तुम एक अतृप्त प्यास हो
परम अभिव्यक्ति आलोकित आत्मा-सम्भवा हो
प्रत्येक पुनरुक्ति में पुनर्नवा हो

मैं चाहता हूँ.....
तुम मुझे सृजन के 'संग्राम' में दाँव-पेंच सीखाओ!
मैं चाहता हूँ......
मैं तुम्हारे सम्मुख 'प्रेम प्रतिज्ञा' लूँ
कि अब 'नवजीवन' की 'कर्मभूमि' में श्रमरत रहूँगा!!

प्रेमचंदाय नमः

हे कहानी के प्रतिमान! हलके फाल!
लमही के छत्रसाल! युग ख़याल!
स्वप्नों की शीतलसहानुभूति के समस्वर, समताल!
मुझे दिख रहा है

रूप, रस, गंध व स्पर्श का फटाहाल
देश का दर्दनाक दृश्य
मैंने किया जाँच-पड़ताल
और पाया चमकती चाल

मेरा कवि मेरे पाठक पथिक से कह रहा है
यदि तुम मुझे सिक्का समझकर
ऊपर उछालोगे
तो एक तरफ निराला और
दूसरी तरफ प्रेमचंद
तुम्हें नज़र आयेंगे
लेकिन शर्त है कि शब्द नाचता हुआ
धरती पर खड़ा हो जाए
और अर्थ की आकृति आकाश में बन जाए
एक आवाज़.... भई! उठा दो कंधे पर जीवन का जुआ

अरे! अरे! निहाल
क्यों? निकाल रहे हो बाल के खाल
देखो! आ गया
आत्मा के शिल्पी 'अमृतराय' का ननिहाल
जरा रूको! ठहरो!
सामने देखो, तालही ताल
इधर देखो, हल्कू का खेत चर रही है नीलगाय
साथी, उधर होरी का ऊख उखाड़ रहा है हाथी

यह घास, फूस व बाँस का छाता-मचान
इसी पर पूस और माघ की रात में सोता है किसान
पास मेंड़ पर कोई दुखिया छील रहा है घास
मेरे साथ पगडंडियों पर यात्रा कर रहा है
विश्व का श्वास यानी प्रेमचंदी विश्वास

मानो फ़सलें आपस में अठखेलियाँ कर रही हैं
गोधूलिमें लौटते हुए चौपाये चोन्हरा रहे हैं
पतलो की आड़ में आनंदक्रीड़ा की आवाज़ उठ रही है
खैर, पैर अपने पथ को छोड़ना नहीं चाहते हैं
वे अरहर के बीच से नाप रहे हैं जाड़ा में डाड़ा
उन्हें पहुँचना है उस टीले पर जहाँ पहचान का पदचिह्न है
असलमें वह प्रेमचंद की आत्मा का आवास है
मैंने सुना है कि जाति में जयंती की ज्योति ख़ास है

लेकिन कलम के मज़दूर तो कलाकार हैं
उनकी जाति एक है और वह है मनुष्यता

हे वैश्विक विचार! अपूर्व कल्पकथाकार!
तुम्हारी प्रत्येक पंक्ति में बहुत दुखी इड़ा है
संभाव्य नाव्य की वाणी में महाकाव्य की पीड़ा है
तुम बहो मेरी रचना की धमनियों में, पर
मेरी कविता की सरिता में सविता की तरह
तुम रहो मेरे हृदय में पथप्रदर्शक पिता की तरह

मानवता का आवाहन 'मंत्र' है ॐ प्रेमचंदाय नमः
जिसे मैं मन से उच्चारण कर रहा हूँ बार-बार
भूख के भवसागर में पीड़ा की पतवार
भाषा खे रही है लगातार
आशा है मैं जल्द पहुँच जाऊँगा
अरहर के उस पार
जैसे कोई नाव नदी के!!

प्रेम के प्रदीप प्रेमचंद

दुखिया चमार के चेहरे पर
दर्द का दाग है
उसे देखने वाली आँखों में आग है
जहाँ जड़ता की जड़ का फटना
'सद्गति' की सड़क पर अंतिम यात्रा करना है

संवेदना के श्यामपट पर लिखा है
सामंतवाद मुर्दाबाद!
प्रत्येक पंक्ति में प्रसव की पीड़ा है
कर्ज वह कीड़ा है
जो एक बार काट ले
तो आदमी की मृत्यु निश्चित है
होरी इस बात का गवाह है

आज जो चरवाह है
वह सत्ता का चारा है
हर हलधर हालात का मारा है
आह! जीवन की 'रंगभूमि' में खड़ा सूर
लाचार बेसहारा बेचारा है
मरजाद की बेड़ी से मुक्त किसान

हल्कू मज़दूर
'पूस की रात' से हारा है

महाजनी व वर्णव्यवस्था का मुँह लाल है
जो क्रांतिकारिन धनिया के गालका कमाल है
मालती व सोफिया प्रेम की ममतामयी मूर्ति हैं
मेहता व विनय की स्फूर्ति हैं
सिलिया वंचना के भीतर वंचना का शिकार है
विधवा झुनिया से गोबर को प्यार है
अपने मर्द द्वारा मार खाती स्त्री को
उसकी छाती पर चढ़कर
उसकी मूँछ उखाड़ने का अधिकार है

अब जब न्याय अमीर के लिए भोग है
गरीब के लिए रोग है
तब सब योग सोग है
यह शब्द और अर्थ का कैसा संयोग है!

बुधिया की चीख यह सीख है कि
भूख हर आदमी की मति हर लेती है
आह! घीसू और मावध
असंवेदनशीलता की आँच में आलू भुनते रहें
शराब के नशे में कबीर के पद चुनते रहें

मुन्नी, गंगी, सोना, रूपा, सरोज, आनंदी, गोविंदी
मनोविज्ञान की दृष्टि से सार्थक पात्र हैं
सिमोन द बोउआर के प्रेमी-पथप्रदर्शक पॉलसार्त्र हैं
(मालती व मेहता के बीच का संबंध भारतीय व पश्चात संस्कृति की समन्वित गंध है)

'पंच परमेश्वर' के 'रामधन' का मन पढ़ना
असलमें न्याय के पक्ष में खड़ा होना है
जाति और धर्म से मनुष्यता का बड़ा होना है

प्रेमचंद कहानी के छंद में प्रेम के प्रदीप हैं
करुणा की कसौटी पर कथा में कथ्य व कला की कीप हैं!

सम्पर्क—ग्राम-खजूरगाँव, पोस्ट-साहुपुरी, तहसील-मुगलसराय, जिला-चंदौली-221009, व्हाट्सएप नं. : 8429249326

क़मर मेवाड़ी की कविताएँ

(एक)

क्यों चिपकी रहती है चेहरे पर उदासी
क्यों उड़ा- उड़ा फिरता है मन वन प्रांगण में
काँच की तरह खनकती हँसी फटे बाँस की आवाज़ में
क्यों तब्दील हो जाती है
और हम हत्यारे की तरह
छिपते फिरते हैं इधर-उधर
जब हम खड़े होते हैं
ऐन आईने के सामने
अपरिचित लगने लगता है
अपना ही चेहरा
खो जाते हैं किसी की याद में
फिर अचानक उफन उठती है

बर्फ़ की जमी झील
नदी पहाड़ों से जूझती घाटियों को गलियाती
गुज़र जाती है बहुत दूर लोग चीन्हते हैं
नदी के क्रोध का अर्थ

(दो)

हमने जब सुना
कि हमारे दोस्त
चंद सिक्कों
और अखबार में छपा
नाम देखने की खातिर
दुश्मन के गिरोह में
हो रहे हैं शामिल
तब बड़ी हँसी आई
यह सूचना भी दी
हमारे अपने ही दोस्तों ने
वक्त आज भी वहीं का वहीं है
जहाँ चालीस साल पहले था
पहले के दोस्त
गावदू और मूर्ख थे
लेकिन आज के शातिर और चालाक
ये हमारे भी दोस्त बने रहना चाहते हैं
और दुश्मन के दोस्त भी
पहले जब दोस्तों से मुलाक़ात नहीं होती थी
तब दिल में मलाल रहता था
अब जब मुलाक़ात होती है
तब मलाल रहता है

यह नहीं कि दोस्तों से विश्वास ही उठ गया
लेकिन उनकी कृत्रिम मुस्कान
चेहरे पर उड़ती हवाइयाँ
और उनकी मूर्ख जिज्ञासाएँ
एक खूबसूरत सुबह को
क़त्ल कर देने के लिए
क्या कम है?

फिर भी आज तक
मरा नहीं हमारा विश्वास
हम अच्छी तरह जानते हैं
कि घर में
बीवी से डरने वाले लोग
निकल आए हैं सड़क पर

लेकिन एक दिन
वे अपने ही हाथों
अपने चेहरे पर
कालिख पोत लेंगे
और उनकी कारगुज़ारियाँ
कल का बदरंग इतिहास बनेगी
उस दिन
हमारे हाथ में होगी
विजय पताका

और वे
किसी अँधेरे कोने में खड़े
अपने किसी शुभचिंतक की
मृत्यु का शौक मना रहे होंगे।

विज्ञान भूषण की तीन लघुकथाएँ

वॉर गेम

सुबह उठने से पहले मनन ने बेड रूम से ही कई बार मम्मी-पापा को आवाज लगाई। लेकिन जब कोई नहीं आया तो कुनमुनाते हुए वह ड्रॉइंग रूम में पहुंचा तो देखा उसके पापा टीवी देख रहे हैं। उसने पूछा, 'पापा आप क्या देख रहे हैं...कितने सारे धमाके की आवाजें आ रही हैं?'

वे बोले, 'बेटा डिस्टर्ब न कर, मैं न्यूज देख रहा हूं। पड़ोसी देश से वॉर हो रहा है, वॉर... तू अभी नहीं समझेगा, जा यहां से।' मनन ने टीवी की तरफ देखा। बम धमाकों की आवाजों और धुएं-बारूद का गुबार देखकर उसके चेहरे पर खौफ के बादल छा गए। उसने सहमते हुए पूछा, 'पापा, ये वॉर क्यों होता है?'

जब उसके पापा ने कोई जवाब नहीं दिया तो मनन किचेन में पहुंचा। वहां उसकी मम्मी गैस स्टोव पर कुछ बना रही थीं। लेकिन वो भी अपने मोबाइल फोन में बिजी थीं। मनन ने जब पूछा, 'मम्मा, आप क्या देख रही हैं फोन में?' इस पर मम्मा बोलीं, 'वॉर रिपोर्ट देख रही हूं बेटा, लाइव...। तुझे पता है पड़ोसी कंट्री से वॉर हो रहा है।'

मनन ने पूछा, 'मम्मा, ये वॉर क्यों होता है?'

उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया और बिना मनन को देखे, बोलीं, 'अच्छा, तू ये सब छोड़, जाकर ब्रश कर ले, ब्रेकफास्ट में तेरा फेवरेट पास्ता बना रही हूं।'

मनन बिना कुछ बोले बालकनी में पहुंचा तो वहां उसके दादाजी अखबार पढ़रहे थे। उसने पूछा, 'दादाजी ये वॉर क्यों किया जाता है?' उसके दादाजी ने कहा, 'बेटा, मुझे अखबार पढ़ने दे, इसमें वॉर की डिटेल न्यूज आई है। तू जाकर खेल..।'

इस पर मनन दादाजी का मोबाइल फोन लेकर अपने रूम में पहुंच गया और वीडियो गेम खेलने लगा। कुछ देर बाद जब मनन की मम्मी, बेडरूम में पहुंचीं तो डांटते हुए कहा, 'मैंने तुमको ब्रश करने के लिए कहा था, तुम यहां मोबाइल के साथ क्या कर रहे हो?'

मनन ने जवाब दिया, 'वॉरियर्स वीडियो गेम खेल रहा हूं।' मम्मी ने नाराज होते हुए कहा, 'पूरी दुनिया में इतनी सारे रियल वॉर हो रहे हैं और तू भी वॉरियर्स गेम खेल रहा है, बंद कर इसे।'

इस पर मनन बोला, 'मम्मा, मेरे वॉरियर्स वीडियो गेम में किसी को चोट नहीं लगती, कोई ब्लड नहीं निकलता, किसी की डेथ नहीं होती और जरा भी पॉल्यूशन नहीं होता। तो मेरा वॉरियर्स वीडियो गेम, रियल वाले वॉर से तो अच्छा है न... '

मनन के इस सवाल का उसकी मम्मी के पास कोई जवाब नहीं था।

भगवान जी प्लीज...

पाखी अपनी मम्मी से काफी देर से कह रही थी, 'मम्मा, मेरा प्रोजेक्ट पूरा करवा दीजिए, मंडे को स्कूल में सब्मिट करना है।' पर उसकी मम्मी फोन में बिजी थीं। खीझकर पाखी ने मोबाइल फोन के सामने अपना हाथ रख दिया और बोली, 'मम्मा, बात बाद में कर लेना, मेरा प्रोजेक्ट पूरा करवा दो न।'

मम्मी नाराज होकर बोलीं, 'तुझे दिख नहीं रहा मैं पड़ोस वाली रिचा आंटी से जरूरी चैटिंग कर रही हूं। अपना प्रोजेक्ट पापा से बनवा ले।'

पाखी ठुनकते हुए पापा के पास पहुंची। वे लैपटॉप में अपने दोस्तों के साथ ग्रुप चैटिंग कर रहे थे। पाखी ने जब उनसे प्रोजेक्ट बनवाने के लिए कहा तो वे खीझ कर बोले, 'तुम्हें बिल्कुल मैनर्स नहीं हैं पाखी, देख रही हो न मैं अंकल से बातें कर रहा हूं फिर भी डिस्टर्ब कर रही हो। अपनी ट्यूशन वाली मैडम से प्रोजेक्ट बनवा लेना।' यह कहकर पाखी के पापा फिर से अपनी बातों में मशगूल हो गए।

मायूस पाखी अब अपनी दादी के पास पहुंची, वो पूजा कर रही थीं। उसने दादी से पूछा, ' दादीजी, भगवान जी से कुछ मांगो तो वो दे देते हैं न!'

दादी ने घंटी बजाते हुए, सहमति में सिर हिलाया। यह देखकर पाखी लपक कर दादी की गोद में आकर बैठ गई और अपने नन्हे हाथों को जोड़ते हुए बुदबुदाने लगी, 'भगवान जी, प्लीज मुझे स्मार्टफोन या लैपटॉप बना दो।'

उसकी यह बात सुनकर दादी चौंक गईं। उन्होंने पूछा, 'पाखी बेटा, ये क्या कह रही हो भगवान जी से?'

इस पर पाखी ने बेचारगी से कहा, 'हां दादी, अगर मैं स्मार्टफोन या लैपटॉप बन गई तो मम्मी-पापा मेरी हर बात मानेंगे, मुझे बहुत प्यार करेंगे, मेरे साथ खेलेंगे और मुझे कभी अपने से अलग नहीं होने

देंगे...है न!'

पाखी की मासूम बात सुनकर दादी ने उसे अपने सीने से चिपका लिया।

चिंतामुक्त

पार्क में टहलते हुए शर्मा जी ने महसूस किया कि रोज़ खूब सारी बातें करने वाले निगम जी आज कुछ ख़ामोश थे. उन्होंने पूछ ही लिया, 'क्या बात है निगम साहब किसी बात की चिंता में डूबे लग रहे हैं?'

'हाँ, कल रात कुछ ऐसी खबर मिली कि अपने भविष्य को लेकर थोड़ी चिंता होने लगी.' निगम साहब ने बताया.

'ऐसी क्या खबर सुन ली आपने, जरा हमें भी बताइए..' शर्मा जी ने गुजारिश की तो निगम साहब बताने लगे, ' अरे क्या बताऊँ, हमारी सोसाइटी में ही बगल वाले टावर में बारहवें फ्लोर के फ्लैट में खुराना साहब रहते थे. कल पुलिस ने फ्लैट से उनकी बॉडी रिकवर की. पता चला कि उनकी डेथ 6 दिन पहले ही हो चुकी थी.'

शर्मा जी ने उदास स्वर में पूछा, 'उनके साथ कोई और नहीं रहता था क्या?'

'बैंक से रिटायर हुए कई साल हो चुके थे, दो साल पहले ही पत्नी चल बसी थीं. एक ही बेटा है कंप्यूटर इंजिनियर, अमेरिका में बीवी बच्चों के साथ रहता है. कई साल से नहीं आया इंडिया. कल जब पुलिस ने उससे कांटेक्ट किया तो उसने कहा बहुत बिजी है. नहीं आ सकता तुरंत. अपने पापा के अंतिम संस्कार के लिए कुछ पैसे ट्रान्सफर करवा दिए बस... ' ठंडी सांस लेते हुए निगम जी ने सारा किस्सा सुना दिया.

शर्मा जी ने उनके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, 'अरे आप क्यों चिंता करते हैं, आपके तो दो बेटे हैं, दोनों इंडिया में ही रहते हैं..' 'हां. पर दोनों में से एक भी मेरे साथ नहीं रहता,.. तो भला चिंतामुक्त कैसे हो जाऊं?' कहते हुए निगम साहब आगे बड गये पर शर्मा जी के कदम वहीं ठिठक गये..

विज्ञान भूषण
मुख्य उपसंपादक, फीचर विभाग,
हरिभूमि (हिंदी दैनिक)
129, ट्रांसपोर्ट सेंटर, पंजाबी बाग,
पश्चिमी दिल्ली, नई दिल्ली-110035
मो. 9958350739, ई-मेल :
bhushanvigyan@yahoo.com

सपना चन्द्रा की तीन लघुकथाएँ

सपना चन्द्रा

समझौता

'प्रधान!सब जानते ही हैं कि तुम्हारा और उसका क्या रिश्ता है तो उसे क्यूं नहीं अपना लेते ..?

वैसे भी तुम्हारी पत्नी का साथ चंद महीनों का ही था। इसने तो पूरा जीवन ही तुम्हारे नाम किया।

'दिवान! तुम्हारी मत मारी गई है क्या। अपनाने का मतलब अपने कुल खानदान में शामिल करना है। उसने भी कभी ऐसी इच्छा जाहिर नहीं की है।'

आसरा

आंगन के बीचोंबीच लगा घना और बुढ़ा बरगद सुबह से खामोश था।उसपर रहने वाले पक्षियों के बीच भी अजीब सी बेचैनी छाई थी।

दाना-पानी कौन देगा अब...?सभी यही सवाल कर रहे थे।

तभी एक अजनबी चेहरा अंदर की ओर दाखिल हुआ।उसे देखकर पक्षियों के झुंड से किसी ने पूछा -'कौन है ये'..?

'नया मालिक'..।

तरस

'मैले-कुचैले कपड़े पहने क्यूं घुम रही हो! तुम्हारे थैले में तो कितने साफ-सुथरे कपड़े हैं। आखिर रोज मांगकर लाती किसलिए हो।ये सुंदर सा बच्चा भी कैसा गंदा दिख रहा है..?'

उस मांगने वाली महिला की हाथ में दो रोटी थमाते हुए बेला ने कहा।

महिला -दीदी!इस फटेहाली पर ही तो तरस खाने वाले से चार पैसे मिलते हैं।

कहलगांव भागलपुर, बिहार

कुर्ते की वापसी

–देव वंश दुबे

रेलवे प्लेटफार्म और ओवर ब्रिज पर लोगों की हलचलसे लग रहा है कि ट्रेन के आने में अब अधिक विलम्ब नहीं है। केले वाले, चाय वाले,मूंगफली वाले - सभी अपनी-अपनी ख़ास आवाज़ों में लोगों का ध्यान खींच रहे हैं। बहिर्गमन द्वार की बायीं ओर पत्रिका की एक दुकान है, जहाँ पाँच-सात लोग मधुमक्खियों की तरह चिपके हुए हैं और दायीं ओर लगभग दसेक क़दम पर एक बैठकी है जिसके किनारे पर वह अपनी माली हालत के बारे में सोच-सोच दुखी हुए जा रहा है। वह बैठे -बैठे खुद को कोस रहा है कि आख़िर वह अपनी बेटी के यहाँ गया ही क्यों था! गया था तभी न उसका पानी उतरा!

वह अंतरवेदना से अंदर-ही-अंदर छटपटा रहा था। तभी रेलवे स्टेशन से अनाउंसमेंट होता है कि ट्रेन दो घंटे लेट है, विलम्ब की सूचना पर वह झुंझलाते हुए उठ खड़ा होता है..... उफ़्फ़ !अब तो चाय-पानी से ही समय कटेगा। वह भारी मन से स्टेशन से बाहर निकलजाता है।

सड़क वीरान-सी थी। उसे सामने से गुज़रता देख एक लाइन होटलका मालिक आवाज़ देता है.....क्या चाहिए, आइए-आइए!

'बाप रे!' गैंडे -सी काया और दो मुट्ठी मूछें देखकर वह सहम जाता है। बोहनी का टाइम है । बात बिगड़ न जाए, इस डर से वह ठिठक जाता है। होटलका नौकर चूल्हा जला रहा था। वह अपनी ओर आते हुए धुएँ को अपने हाथ से भगा भी रहा था ।अब धुआँ तो धुआँ ठहरा, उसे बीच-बीच में अपने आगोश में ले ही लेता था।

नौकर ने उसे पुचकारने के अंदाज़ में कहा- 'इहाँ काहे ला खड़े हैं जी?अंदर बैठिए।...वो देखिए,हाथ-मुँह धोना हो तो नलसामने है।'

वह होटलके अंदर चला जाता है। वॉश-बेसिन के ऊपर टंगे एक धुंधले आईने में अपने आपको देखकर हीन भावना से भर जाता है ।.......'इ कोई कपड़ा है! अइसन डरेस में सहीये में कहीं नई जाना चाहिए। डरेस अच्छा नई था तभी न कोई पूछने वाला नई थो। नई ते नाती के सादी के तुरंत बाद कौन अइसा नाना होगा, जे चुपके से खिसक जाएगा।'

सत्तर सालकी बूढ़ी आँखों को पता था, बेटी का घराना ऊँचा है।जाना ठीक नहीं।कोई बहाना बनाकर उसके यहाँ न जाया जाए।लेकिन पत्नी की ज़िद के आगे उसकी एक न चली। उसे बेटी के यहाँ जाना ही पड़ा।वहाँ पहुँचने के बाद उसे महसूस हुआ कि वह जहाँ भी है, अकेला है। उसे देखकर न बेटी उत्साहित दिखी, न कोई और । घर में शादी- विवाह का माहौलथा । हर तरफ चहल-पहलथी। लेकिन उसने अपनी ग़रीबी को छुपाने के लिए अपने आपको हमेशा छुपाता रहा।

वैसे तो वह थोड़ा बहुत अपमान सह कर भी प्रसन्न दिखने का स्वांग कर रहा था, लेकिन पानी सिर से तब गुज़रा जब बेटी ने एक कमरे में बुलाकर उससे कहा , 'आपको कईसनो नई बुझाता है, बाबूजी!.... दूसरा कोई कपड़ा नई था? बिना सोचले-समझले चले आये, जईसे रोपनी खेते जा रहे हों!'

बेटी की बोली उसे तलवार की धार से भी अधिक धारदार लगी। वह सिर झुकाये खड़ा रहा । उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसकी बेटी अचानक ऐसे कैसे बोल रही है! वह समझ गया, इस घर में उसका अस्तित्व कुछ नहीं है। ग़लती हो गयी, वह यहाँ आ गया। इसके बाद से वह जब तक बेटी के यहाँ रहा, खुद को ही ढूंढ़ता रहा - मंडप में,बारात में , शामियाने में, बाजे -गाजे में । लेकिन वह कहीं नहीं मिला । यहाँ तक कि रिश्तेदारों के पाँव-पूजी रश्म में भी नहीं ।

आईने के आगे वह खड़े-खड़े सोचने लगा .... अगर पत्नी दूसरको नाती की सादी में आने की जिद करे कि मायके के ही कपड़े सादी में जरूरी होते हैं, तो वह साफ मना कर देगा कि अब ये रिवाज बहुत पुराना हो गया है । हमेशा बेटी-बेटी जपना ठीक नहीं। बेटी को भी तो हमारी खोज-ख़बर लेनी चाहिए? हमलोग अब जवान थोड़े हो रहे हैं , लेकिन क्या वह अपनी बात पर पत्नी को राज़ी कर पाएगा? उसके मन में फिर संदेह उत्पन्न होता है ....अगर पत्नी फिर भी जिद करे, तो ?

'कस के हुम्मच्च लात!' उसकी आँखें अचानक चौड़ी हो जाती हैं। नथुने फड़कने लगते हैं। गुस्से में उसका कब एक पैर आगे बढ़गया और कब सामने की बाल्टी से जा टकराया, उसे इसका ज़रा भी होश नहीं रहा।

वातावरण में एक तीव्र झनझनाहट फैल गयी। बाल्टी फर्श पर लुढ़क कर गिर पड़ी।

वह एकबारगी डर जाता है। वह थोड़ा पीछे हटकर अपने आप को संभालता है और तिरछी नज़र से अगल-बगलकी टोह लेने लगता है।

नौकर तब उसी को देख रहा था। उस ने तंज कसने के अंदाज़ में आँख मारी ------' किससे इतना बतिया रहे हैं जी?...... जब से आए हैं,तभी से देख रहा हूँ,को ते बड़ी राम-धुन में लगे हैं।'

वह झेंप जाता है।

होटलका मालिक अपने नौकर को एहतियात करता है... ' चुप रह बे! स्साला,लगता है, पिए हुए हैं।'

उसने होटल-मालिक की बात सुन तो ली, लेकिन अनसुना करते हुए एक कुर्सी पर जा बैठा।दिमाग़ में फिर वही उठा-पटक!अपनी बेटी के यहाँ कितना अपरिचित-सा, कितना बौना था वह, अपनों के बीच अछूत- सा ! ....जिधर भी जाता, जहाँ भी बैठता, लोग कुछ-न-कुछ कारण बताकर उसे वहाँ से छुट्टी करने के लिए मचलते...और वह बिना कुछ बोले वहाँ से खिसक जाता।

टेबलपर एक गिलास पानी रखते हुए नौकर ने डपटने-सा पूछा , 'क्या लेंगे?' और उत्तर की प्रतीक्षा में वहीं एक ओर खड़ा हो जाता है।

'जरा कन सलोनी दे दो और चाह।' उसने एक कुर्सी पर बैठते हुए हकलाते स्वर में कहता है और अपनी भकुली (हाथ की एक मोटी छड़ी) को टेबलके किनारे से लटका देता है।

टेबलपर चाय और सलोनी रख दी जाती है।

वह पूरी सलोनी अपने बायें हाथ में पलटकर प्लेट को एक ओर सरका देता है और दूसरे हाथ से चाय का गिलास थाम लेता है।

अभी वह चाय पी ही रहा था कि होटलका एक दूसरा नौकर, जो उधर से गुज़रने को हुआ,उसकी भकुली से उलझकर गिरते-गिरते बचा। ग़नीमत थी कि उसने बगलकी टेबलपकड़ ली वर्ना उसे बहुत ज़ोर की चोट लगती! उसने दाँत पीसते हुए नाराज़गी प्रकट की--

'अरे अपना बंदुकवा ते संभालिए जी !...पता नहीं कहाँ से भोरे-भोरे चले आते हैं!' नौकर ने खिझते हुए जब अपनी आँखें तरेरी,तो वह डर से हड़बड़ा गया, उसकी तंद्रा भंग हो गयी थी। वह अपनी ज़मीन पर गिरी भकुली उठाता है और उसे अपने दोनों घुटनों के बीच फँसा लेता है। उसे बड़ा अफ़सोस हुआ, पता नहीं भकुली का निचला हिस्सा कब बगलमें सरक गया था।

थोड़ी देर में वह सामान्य हो गया । 'क्या सचमुच मैं दीन-हीन लग रहा हूँ? ' वह अपने आप से पूछता है और उत्तर भी देता है.. ' हाँ, लगभग!' इसके बाद वह अपने वजूद को कहाँ नहीं टटोलत है - खेत में, खलिहान में, गाँव में, रिश्तेदारों में,मगर हर स्थिति में वह खुद को अंजुरीभर दानों के मूल्य के बराबर ही पाता है।

यह सही है कि उसे अपनी माली हालत से कभी कोई शिकायत नहीं थी।अभाव में जीने का वह आदी था । मुश्किलतो उसे तब हुई जब बेटी का निमंत्रण मिला,तब काफ़ी देर तक उस दिन वह पत्नी के पास बुत बना बैठा रहा था। खुशी तो थी कि बड़े नाती की शादी है,जाना चाहिए।लेकिन फाँके की स्थिति ठहरी!ऐसे को क़र्ज़ भी कौन देगा? काफी सोच-विचार कर उसने निर्णय लिया कि वह नहीं जाएगा। लेकिन उसने जब-जब पत्नी को समझाना चाहा, नाकामयाब ही रहा। नेवता पूराने के चक्कर में कुछ ज़मीन बंधक में चली गयी। उसे सेठ अमीरचंद से 3000 रुपये लेने पड़े। तब कहीं धोती, साड़ी, बताशा, चूड़ी, सिंदूर आदि सामान ख़रीदे जा सके । सारा इंतज़ाम तो हो गया, लेकिन एक अड़चन फिर आ गयी । ढंग के कपड़े नहीं थे। वह थोड़ा चिंतित ज़रूर हुआ, लेकिन पत्नी ने उसे अच्छी तरह समझा-बुझा दिया कि चिंता न करें, बेटी के यहाँ सब बंदोबस्त हो जाएगा। ऐसी हालत में वह अपने पिता को कोई बारात थोड़े जाने देगी। कम-से-कम एक कुर्ता तो उसे मिलही जाएगा। वह कोई गरीब थोड़े ही हैं! दो मंजिला मकान है!घर में गाड़ी है ! किस बात की कमी है वहाँ! दहेज भी तो अच्छा खासा मिला होगा!

इस तरह पत्नी ने उसे भरपूर समझाया। तब कहीं वह बेटी के यहाँ जाने को राज़ी हुआ था।

उसके सारे अरमान धुएँ में बदलचुके थे ।बेटी का आचरण उसके दिमाग की नसों पर अभी भी दबाव बढ़ा रहा है। उसके दिमाग़ में बात अभी भी गूँज रही है ....' आपको कईसनो नहीं बुझाता है, बाबूजी!जानते हैं, सादी का घर है, तरह-तरह तरह के हित -नात आयेंगे, विडिओ बनेगा...क्या कहेंगे लोग आपको ! ...कोई दूसरा कपड़ा नई था? थोड़ा तो आपको सोचना चाहिए, कि जब कपड़े- लत्ते ढंग के नहीं हैं, तो काहे ला जा रहे हैं!.. एकबारगी बिना सोचले-समझले चलदिए,जईसे रोपनी-खेते जा रहे हों । अब येह ढंग से कोई थोड़े ना सादी विवाह में चलदेता है!'

बेटी की बात पर वह सन्न रह गया था.

वह माथे पर उंगलियों से दबाव डालता है. बीती बातें उसके दिमाग़ में अभी भी हाबी हैं। पत्नी ठीके कहती है.... आदमी जइसन अन्न खाता है वइसने उसका मन हो जाता है.

स्टेशन की ओर से उठी एक व्हिसलपर वह चौंक जाता है। ट्रेन आ गयी क्या? वह उठना चाहता है, लेकिन होटलका नौकर उसे अश्वस्त कर देता है कि ट्रेन अभी नहीं आएगी...वह न घबराये।

वह चाय का गिलास उठाता है और एक ही साँस में खाली कर देता है।.......' स्साले शैतान हैं! अइसा गरम चोह दिए कि सलोनियो खात भर नई टिका।' वह खीझता है और मालिक को पैसे देकर धोती में हाथ पोंछते हुए बाहर की एक बेंच पर जा बैठता है।

उसकी उदासी बरकरार है. अपने प्रति उपेक्षा भाव उससे सहन नहीं हो पा रहा है। इसीलिए नाती की बारात लौटते ही, उसने बिना किसी को बताये बेटी के घर से लौट जाना उचित समझा।

अपमान-बोध अभी भी तनकर खड़ा है। लड़की के मंडप में नाती के द्वारा भगिना,फूफा, जीजा आदि सबके पाँव पूजे जाना और सबकी नज़र के सामने बैठे नाना को नज़र-अंदाज़ करना क्या साधारण बात है! नाती नासमझ है तो क्या दामाद की भी अक़्लमारी गयी है!

काफी देर तक भटकने के बाद भी उसकी चिंता कम नहीं हुई। वह बैठे- बैठे अपना सिर धुन रहा था, तभी उसका छोटा नाती उसकी तरफ आते दिखाई दिया।

वह चौंक पड़ता है. उसका छोटा नाती है।उसके हाथ में एक झोला देखकर वह आशंकित हो उठता है....' ए काहे के आ रहा है , दादा.... का ये भी साथ ही चलेगा...? संदेह के कुहासे से वह अभी भी पड़ा था तभी उसके नाती ने उसके पाँव स्पर्श किये .... ' नाना जी! ये रखिए! माँ भिजवायी है।'

वह झोले को हाथ में लेकर आश्चर्य से देखता है और तेवरी चढ़ाकर पूछता है... 'इ का है, रे ? का लाये हो?'

'मिठाई और आपके लिए धोती-कुरता' माँ ने दिया है।

नाती की बात सुनकर उसे लगता है, जैसे उसके अंदर कि सुषुप्त ज्वालामुखीअचानक भड़क उठा है। भूगर्भ से फव्वारे की तरह निकलती विषैली गैसों ने उसे अपनी गुम्बद पर नचाना चालू कर दिया है। तैश में बोलता है वह, 'नई-नई. एकर का जरूरत है। लो लो पकड़ो अपना झोला। इ सब हमको नई चाहिए।'... वह झोला वापस कर देता है।

नाती सकते में आ जाता है। वह कहता है --'रख लीजिए नाना जी!माँ ने विदाई में सबको कपड़े दिये हैं, मिठाई भी सबको दी है. आपके लिए कोई स्पेशलनहीं भेजा है।'

'नई-नई !ये सब नई चाहिए ..... बहुत मिला!....अब और क्या मिलता ! बहुत खातिरदारी हुई।और कितनी होती! ईश्वर तुम लोगों को खुश रखे।जुग-जुग जिओ!' वह झोला लेने से इनकार कर देता है।

नाती लौट जाता है। तब वह स्टेशन की ओर चलदेता है। जिस होटल में उसने अभी-अभी चाय पी थी, वहाँ से अभी भी धुआँ उठ रहा था। उसके अंदर भी धुआँ -धुआँ था जो उपहार लौटाने से अब शाँत हो रहा था।

सम्पर्क : किसान राइस मिल के पीछे, कृष्ण नगर, नमना कला, अंबिकापुर - 497001, सरगुजा, छत्तीसगढ़, मोबाइल- 7879076271

लौ

-डॉ. यशोधरा भटनागर

बरसात का मौसम था। गाँव की कच्ची गलियों में चूने से पुती दीवारें चमक उठी थीं। हरियाली में नहाए खेतों के बीच से बैलगाड़ी की चरमराहट सुनाई दे रही थी। गायों की घंटियों की मधुर ध्वनि और मिट्टी की भीगी हुई महक सांझ को एक अलग ही सौंदर्य में ढाल रही थी। धीरे-धीरे रात का अंधियारा पसर रहा था।

गाँव के आखिरी छोर पर लालटेन की रोशनी से टिमटिमाती एक झोपड़ी सुरसतिया की ही है।

दुबली-पतली तीखे नैन-नक्श, बड़ी-बड़ी आँखें,सांवला रंग माथे पर बड़ी सी टिकुली, सिंदूर से भरी मांग,

सूती धोती में लिपटी सुरसतिया। मुश्किल से बीस-बाईस बरस की होगी सुरसतिया लेकिन ज़िंदगी के तीखे तेवरों ने उसे अपनी उम्र से कहीं अधिक बड़ी और परिपक्व बना दिया है।

वह सूरज की पहली किरण के साथ ही काम काज में लग जाती। अपनी झोपड़ी को झाड़-बुहार कर हैंडपंप से चार-पाँच कलसे पानी भर कर लाती। सिल्ला पर लहसुन की चटनी बाट, चूल्हा बाल कर आठ -दस टिक्कड़ सेक लेती और रोटी-प्याज-

चटनी की पोटली बाँध कर हरिया के साथ मजूरी के लिए निकल पड़ती। दिन भर मजूरी कर दोनों सांझ पड़े घर लौटते। घर में कदम बाद में रखती पहले सास की कर्कश आवाज़ उसके कानों में पड़ती -'आ गई महारानी। प्यास से गला सूखा जा रहा है पर कोई पानी देने वाला न है इस घर मेंष्ठ।'

सुरसतिया को सास के तानों की आदत हो गई थी। एक कान से सुनती दूसरे से निकाल देती।

हाथ-मुँह धोकर लालटेन जला कर फिर चूल्हे-चौके में लग जाती। सारे कामों से निपट कर चटाई बिछाकर अपनी कमर सीधी करती तो हल्की सी आह अपने आप मुँह से निकल जाती।कमर और पैर ऐसे पिराते कि वह अपने ही हाथ से अपने पैर दबाने लगती।

कभी झोपड़ी के टूटे हिस्से से झाँकते आसमान को देखती उनसे बतियाती। कभी उसे लगता जैसे आसमान पर चमकते तारे उसे कोई कहानी सुना रहे हैं।।

'क्या सचमुच औरत की ज़िंदगी बस यही है? काम, ताने और अधूरे सपने?'

मजूरी के लिए आते-जाते गाँव के स्कूल में बच्चों को पढ़ते देख उसके मन में भी एक टीस सी उठती।

मगर हाय री किस्मत छोटे भाई की किताबों की खुशबू को अपने अंदर बसाए ही वह खुद को बहलाती रही। पंद्रह बरस की उम्र में ही उसकी शादी कर दी गई। गरीब बापू के लिए बेटी बोझ होती है, और उन्होंने जल्दी ही अपनी ज़िम्मेदारी उतार किसी और के माथे धर दी। सुसराल आते ही चूल्हा-चौका उसके हिस्से में आ गया लेकिन किताबों की खुशबू नहीं भूल पाई।

किस्मत से समझौता कर हरिया में ही अपना भविष्य खोजने की कोशिश करती। हरिया यूँ तो बहुत अच्छा इंसान है।उसे प्रेम भी बहुत करें है लेकिन कमज़ोर और परिस्थितियों से टूटा हुआ होने से हमेशा परेशान सा रहता।

ईंट के भट्टे का ठेकेदार की भूखी नज़रों से उसे घूरता रहता। कभी-कभी उसके कंधे पर हाथ रख कहता-'अरे सुरसतिया, तुम तो बहुत मेहनती हो औरष्ठ।' कह खैनी रंगी बत्तीसी निपोर देता।

उसके इस व्यवहार से सुरसतिया भीतर तक कांप उठती, मगर चुप रहती। गरीब की औरत के पास चुप रहने के अलावा चारा भी कहाँ होता है? शायद हरिया भी इसीलिए सब कुछ देख कर भी नहीं देखता था।

उस रात सभी कामों से फारिग हो लालटेन की लौ मद्धिम करने जा रही थी कि उसके हाथ ठहर गए।उसने लालटेन की लौ को गौर से देखा-छोटी-सी लौ पूरे अंधेरे को रोशन कर रही थी। लौ को देखते-देखते उसकी कब आँख लग गई पता ही नहीं चला।

अगले दिन मजूरी के लिए घर से निकल ही रही थी कि कमली दौड़ी-दौड़ी उसके पास आई-

'ऐ सुरसतिया गाँव में बड़ों का इस्कूल सुरू हो रहा है। हर साम इस्कूल में बड़ों को पढ़ना-लिखना सिखाया जाएगा।'

पहले तो सुरसतिया को भरोसा नहीं हुआ कि बड़ों का भी कोई स्कूल हो सकता है क्या? लेकिन धीरे-धीरे जब गाँव की कुछ औरतों को शाम को आँचल में कापी-कलम लिए पढ़ने जाते देखा तो विश्वास हुआ।

उसके भीतर की किताबों की खुशबू फिर बाहर निकल आई। पहले तो सुरसतिया पढ़ने जाने से हिचकिचाई, पर भीतर की बचपन की चाह उसे स्कूल खींच ले गई।

धीरे-धीरे उसने पढ़ना शुरू किया। चटाई पर बैठकर जब उसने पहली बार 'अ' से 'अनार' लिखा तब उसकी आँसू भरी आँखों को अनार से बड़ा 'अ' दिख रहा था।

उसकी मेहनत और हरिया का साथ रंग लाया। वह साक्षर होने तक ही नहीं रूकी बल्कि पढ़ना-लिखना और हिसाब-किताब करना भी सीख लिया।

एक दिन स्कूल में पास के कस्बे से एक दीदी सुरसतिया से मिलने आईं। उन्हें सब लोग 'बचत दीदी' के नाम से पुकार रहे थे। उन्होंने उससे कहा कि तुम सब पढ़ना-लिखना सीख गई हो तो क्यों न कुछ महिलाएँ मिल कर अपना एक समूह बना लें। तुम लोग हर महीने थोड़ा-थोड़ा पैसा जमा कर के कुछ रकम इकट्ठी कर सकते हो और जरूरत पड़ने पर उसमें से कुछ रकम एक दूसरे को उधार दे सकते हो।

सुरसतिया के मन में बचत दीदी की बात बैठ गई।

अगले ही दिन उसने यह विचार बाकी औरतों के सामने रखा।

'बचत!अरे सुरसतिया हमारे पास घर-परिवार की जरूरतों के लिए पैसा नहीं है तो बचत कहाँ से करेंगे?'कहते हुए सब उस पर हँस दीं।मगर सुरसतिया अडिग रही, सबको समझाती-मनाती रही।

धीरे-धीरे पाँच-छह औरतें तैयार हो गईं। उन्होंने समूह बनाया और छोटी रकम से बचत शुरू की। एक साल में ही समूह में बीस औरतें हो चुकी थीं। समूह का गाँव के ही बैंक में खाता खुल गया था। बैंक मैनेजर साहब भी समूह को

बैंक से छोट-मोटा कर्जा देने के लिए राजी हो गए।

सुरसतिया ने सुझाव दिया कि इस राशि से वे टोकरी बुनने और अचार बनाने का काम करेंगे।

बिंदिया भाभी, गुलाबो जिज्जी ,रज्जो ताई को अचार बनाने में महारत हासिल थी तो चंदा भाभी और जसोदा बेन टोकरी बनाने में दक्ष थीं।उनके साथ सभी इन कामों में जुट गईं।

अब जरूरत थी थोड़े साहस और बाज़ार तक पहुँच की।

बाजार में लोग हँसते-'गाँव की ये औरतें क्या जाने सौदा खरीदना-बेचना!चली हैं बिजनेस करने!'

लेकिन सुरसतिया ने हिम्मत नहीं हारी। वह कस्बे तक गई, दुकानदारों से बात की और धीरे-धीरे उनका सामान बिकने लगा।

आज गाँव की हवा में चूड़ियों की खनखनाहट संग खिलखिलाहटें भी समा गई हैं।पहली बार जब औरतों के हाथ में अपनी कमाई आई, उनकेचेहरे खुशी से दमक रहे हैं।

'सुरसतिया! सुरसतिया! 'गाँव में सब जगह उसी कुछ पुकार है।अब गाँव की 'पढ़ी-लिखी बहू' के नाम से जानी जाती है।पंचायत भी उसका बड़ा मान-सम्मान करती है।

सुरसतिया ने अपनी और सखी-सहेलियों को समझाया-'हम मज़दूरी करें तो दिन भर पसीना बहाकर मुश्किल से सौ-दो सौ रुपए मिलते हैं। पर अगर हम मिलकर काम करें तो धीरे-धीरे अपना कारोबार खड़ा कर सकते हैं।'

उसकी बातें असर करने लगीं। समूह में अब आत्मविश्वास घर करने लगा।

चार बरस में उनका समूह इतना मज़बूत हो गया कि उन्होंने अचार और टोकरी के अलावा अगरबत्ती और पापड़ बनाने का काम भी शुरू कर दिया।

बैंक अधिकारी अब खुद उनके पास आने लगे।

'सुरसतिया जी, आप सब बहुत अच्छा काम कर रही हैं। कर्ज की किश्त समय पर चुक जाती है।आप और बड़ा लोन ले सकती हैं।'

धीरे-धीरे समूह की कमाई इतनी हो गई कि कई घरों की हालत सुधर गई। बच्चे स्कूल यूनिफॉर्म में उछलते कूदते,बस्ते में पेन पेंसिल कॉपी किताबें और खाने का डिब्बा लिए स्कूल जाने जाने लगे।

पर हाँ अब वह टूटी छत न थी जिसमें से चाँद-तारों की बारात लिए आसमान झाँकता था।

हरिया भी खुश था। उसने कहा-'तूने तो हमारे घर की किस्मत बदल दी, सुरसतिया।'

सास, जो पहले ताने देती थी, अब पड़ोसियों से कहती-'मेरी बहू तो लक्ष्मी है लक्ष्मी।'

अब गाँव की हर औरत चाहती थी कि वह समूह से जुड़े। सुरसतिया ने और समूह बनाए। आसपास के गाँवों की औरतें भी उससे मिलने आने लगीं।

एक दिन जिला मुख्यालय से अधिकारी आए। उन्होंने सभा में सुरसतिया को सम्मानित किया और कहा-'यह महिला न केवल अपने घर की बल्कि पूरे गाँव की तस्वीर बदल रही है।'

तालियों की गड़गड़ाहट देर तक गूंजती रही। सुरसतिया की आँखें भर आईं।

बरसात की वही नमी भरी रात थी। झोपड़ी में अब लालटेन की जगह बल्ब जल रहा था, लेकिन सुरसतिया को वह पुरानी लौ याद आई जिसने उसके भीतर सपना जगाया था।

नियति

-तारकेश कुमार ओझा

अंकल जरा पेन देना...!!

उस नौजवान ने अपनी आदत के अनुसार जब फिर मुझसे कलम मांगी तो मैं झल्ला उठा!

पेन उसकी और बढ़ाते हुए मैं बोला

-- लो इसे अपनी जेब में रखो... तुम्हारा जिस तरह का काम है, तुम्हारे पास तो एक कलम होनी ही चाहिए... बार-बार क्यों मांगते हो...!!

मेरी एक पुरानी आदत है किमुझे कमीज की बाईं जेब में कागज का एक छोटा टुकड़ा और कलम होनी ही चाहिए, वरना मुझे कुछ खाली खाली सा लगता है...!

पेन उसे सौंप कर मैं यह सोचकर आगे बढ़ गया कि घर में रखे कलम से एक अपने लिए ले लूंगा...!

लेकिन कुछ दूर आगे बढ़ते ही सड़क के किनारे एक कलम मुझे पड़ी मिली।

मैंने तुरंत साइकिल रोक दी और उसे उठाकर अपनी जेब में रख लिया।

मैं खुश था कि एक के बदले दूसरा पेन मुझे मुफ्त ही मिल गया।

कुछ दिन बाद संयोग से मुझे अयोध्या जाने का अवसर मिला।

यह बिल्कुल अप्रत्याशित था। आशंका के विपरीत वहां मुझे ज्यादा भीड़ भाड़ भी नजर नहीं आई।

बैग व मोबाइल वगैरह सरकारी कक्ष में रखवा कर मैं दर्शनार्थियों की कतार में खड़ा हो गया।

ज्यादा प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी और मैं बिल्कुल मंदिर प्रवेश द्वार के करीब था।

लेकिन दर्शन लाभ से पहले हमें अत्यंत कड़ी सुरक्षा प्रक्रिया से गुजरना था।

वहां तैनात कमांडो एक-एक कर दर्शनार्थियों की जाँच कर रहे थे।

मेरा भी नंबर आया... कमांडो ने ऊपर से नीचे तक जांचने के बाद मेरी जेब से वही कलम निकाल लिया जो मुझे सड़क किनारे मिला था... उसने वह कलम पास रख एक बक्से में फेंक दिया और आगे बढ़ाने को कहा...!!

मैं नियति के खेल के बारे में सोच सोच कर हैरान हो रहा था....! क्या अद्भुत संजोग था...! सड़क पर पड़ी मिली लावारिस कलम मेरी अंगुली पकड़कर वहां पहुंच गई जहां जाने के बारे में खुद मैंने भी नहीं सोचा था।

लेकिन फिर खुद ही मुझसे जुदा हो गई।

मैं रामलला की ओर बढ़ते हुए यही सोच - सोचकर आश्चर्यचकित हो रहा था....!!

भगवानपुर, जनता विद्यालय के पास
वार्ड नंबरः 09 (नया)
खड़गपुर (प. शिचम बंगाल)
पिन : 721301 जिला प शिचम मेदिनीपुर
संपर्कः 09434453934, 9635221463

भैया रिटायर क्या हुए...

डॉ. यशोधरा भटनागर

भैया कुछ दिन पहले ही रिटायर हुए हैं और वज़ह-बेवज़ह ही बड़े स्ट्रैस्ड हैं। रिटायर्ड आदमी की जिंदगी ऐसी हो जाती है मानो आप अचानक एक सार्वजनिक संपत्ति बन गए हों, जिसे हर कोई अपने अनुभवों और ज्ञान से सजाने-संवारने का अधिकार समझता है।

रिटायरमेंट के बाद आदमी जितना अपने भविष्य के बारे में नहीं सोचता, उससे कहीं ज़्यादा लोग उसके लिए सोचने लगते हैं। हर कोई अचानक सलाहकार बन जाता है, और ऐसी नसीहतें देने लगता है, मानो उन्होंने खुद रिटायरमेंट के सारे विशेषज्ञ पाठ्यक्रम पढ़ रखे हों।

पहली नसीहत होती है सेहत के बारे में।

'अब तो सेहत का ख्याल रखना शुरू कर दो!'

गोया पहले हम रोज़ाना आलू के पराठे चबाकर और ऑफिस की कुर्सी पर दिनभर बैठे-बैठे हीलियम के गुब्बारे की तरह फूल रहे थे, और अब रिटायरमेंट के बाद अचानक ओलंपिक एथलीट बनने की तैयारी करनी हो।

और यदि किसी दिन आपने कह दिया कि 'आज तो आराम करूंगा,' तो आपको ऐसे देखा जाता है जैसे आप अपनी सेहत को जानबूझकर बर्बाद कर रहे हों। सुबह-सुबह टहलने की सलाह ऐसे दी जाती है अगर एक दिन भी घूमने नहीं गए तो तुरंत अस्पताल का रास्ता पकड़ना पड़ेगा। अगर आपने हिम्मत कर के मॉर्निंग वॉक शुरू कर भी दी, तो पड़ोसी ऐसे ताने मारते मिलेंगे, 'बड़े दिन बाद दिखे, लगता है अब रिटायरमेंट का असर दिखने लगा है!'

दूसरी सलाह होती है वित्तीय प्रबंधन को ले कर।

'अब पैसों को बहुत सोच-समझ कर खर्च करना।'

अरे भाई, जिंदगीभर जो कमाया वो सोच-समझकर ही खर्च किया। अब रिटायरमेंट के बाद ऐसा क्या नया हो गया कि हमें इसका ककहरा फिर सीखना पड़ेगा। लेकिन नहीं, हर कोई यह समझाने लगता है कि किस बैंक में एफडी करवानी है, किस म्युचुअल फंड में निवेश करना है, और कहाँ-कहाँ से बचत करनी है। रिटायरमेंट के बाद आप अचानक से 'फाइनेंशियल गाइडेंस' के लिए सॉफ्ट टारगेट बन जाते हो। मानो आपने अपनी पूरी जिंदगी पैसे उधार लेकर ऐशो-आराम में बर्बाद कर दी हो। और ये सलाह देने वाले अक्सर वही लोग होते हैं जिनकी खुद की आर्थिक स्थिति डांवाडोल रहती है। लेकिन फिर भी वो आपको म्युचुअल फंड और फिक्स्ड डिपॉजिट्स का एक्सपर्ट बताने में कोई कसर नहीं छोड़ते। अब यदि आपने किसी दिन अपने शौक के लिए कोई नई गाड़ी या गैजेट खरीद लिया तो आपको ऐसे घेरा जाएगा जैसे आपने अपनी पेंशन बर्बाद करने का कोई अपराध कर दिया हो।

'अब इस उम्र में ये सब? बचत पर ध्यान दो!'

आप सोचते हैं, 'भैया कमाया ही इसीलिए था कि अब अपने ऊपर खर्च कर सकूँ!' समय के सदुपयोग करने की सलाह तो हर कोई जेब में रखे घुमाता है जहाँ मिले हाथ में थमा दी।

'अब खाली वक्त में कोई समाजसेवा का काम पकड़ लो दादा।अभी तक सिर्फ अपने बारे में ही सोचा है अब जाति समाज की भी खबर लो।'

इस तरह की बातें सुनकर लगने लगता है कि अभी तक हम दुनिया के पहले दर्जे के खुद फरामोश थे जिसका पाप धोने का अब वक्त आ गया है। कहीं किसी एन.जी.ओ. से जुड़ने का सुझाव मिलेगा, तो कोई कहेगा कि बच्चों को पढ़ाओ। अगर आप ऐसा कुछ नहीं कर रहे, तो मानो आप अपनी जिंदगी यूँ ही बर्बाद किये दे रहे हो। और यदि गलती से जवाब में आपन यह कह दिया कि 'अब मैं थोड़ा आराम करना चाहता हूँ,' तो आपको अक्षम्य अपराध करार दिए जाने की भी पूरी संभावना होती है।

चौथी नसीहत होती है परिवार के साथ वक्त बिताने की।

'अब तो बच्चों के साथ कुछ वक्त बिताओ।'

यह सलाह सुनकर लगता है जैसे बच्चों हमेशा से इंतजार कर रहे थे कि कब हम रिटायर हों और वो हमारे साथ कंचे खेलें। सच्चाई तो यह है कि बच्चे अब खुद इतने व्यस्त हैं कि उन्हें अपने कामों से फुर्सत नहीं मिलती। लेकिन रायचंदों का तो मानना है कि अब हमें उनके पीछे-पीछे घूमते रहना चाहिए, ताकि उन्हें लगे कि हम 'फैमिली मैन' बन गए हैं। और अगर आप कभी अकेले कुछ वक्त बिताना चाहें, तो फिर शुरू हो जाते हैं,

'अरे, बच्चों के बिना अकेले मन लगेगा क्या?'

और अंतिम नसीहत होती है अगला जीवन सुधारने की।

'अब भगवान का नाम लो, भजन पूजन करो।'

अरे भाई अब दम मारने की फुर्सत मिली है इस जिंदगी में थोड़ा सुस्ता तो लें फिर सोचेंगे अगले जन्म का।और अगर कहीं आपने खुदा न खास्ता यह कहा दिया कि 'मुझे तो क्रिकेट का मैच देखना पसंद है या फिल्म देखना है तब आप मोहल्ले के सबसे बड़े नास्तिक करार दे दिए जाओगे।

कुल मिलाकर, रिटायरमेंट के बाद की जिंदगी में नसीहतों की बाढ़ आ जाती है। हर कोई यह मानता है कि अब आपकी जिंदगी का एकमात्र उद्देश्य उनकी सलाह मानकर उसे अमल में लाना है। चाहे आप कितना ही कहना चाहें कि 'भई, अभी मैं खुद को संभाल ही रहा हूँ,' लेकिन लोगों और समाज को तो आपको संवारने का ठेका मिल ही गया है।

देवास, मध्यप्रदेश

संघर्ष से सफलता तक : शैलेंद्र कुमार पाण्डेय की प्रेरक यात्रा

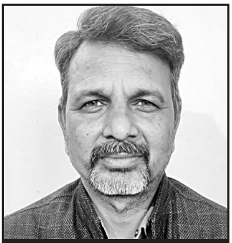

महेंद्र प्रसाद गांधी

बलिया जनपद के नवका गांव की पगडंडियों से निकलकर रेणुकूट की औद्योगिक नगरी तक अपनी पहचान बनाने वाले शैलेंद्र कुमार पाण्डेय का जीवन संघर्ष, परिश्रम और सफलता की मिसाल है। हिंडाल्को इंडस्ट्रीज लिमिटेड, रेणुकूट के डाई शॉप विभाग से महाप्रबंधक पद पर सेवानिवृत्त हुए शैलेंद्र ने अपनी सादगी, कर्मनिष्ठा और प्रबंधन क्षमता से संगठन और समाज दोनों में अमिट छाप छोड़ी है।

अक्टूबर 1965 में बलिया जिले के नवका गांव में जन्मे शैलेंद्र कुमार पाण्डेय के पिता धर्मेश्वर नाथ पाण्डेय डिग्री कॉलेज दुबहर, बलिया के प्रिंसिपल रहे, जबकि माता स्वर्गीय शकुंतला देवी एक गृहिणी थीं। सात भाई-बहनों में तीसरे स्थान पर रहे शैलेंद्र की प्रारंभिक शिक्षा गांव के प्राथमिक विद्यालय से हुई। आगे की पढ़ाई के लिए उन्होंने राजकीय इंटर कॉलेज, बलिया में प्रवेश लिया।

तकनीकी क्षेत्र की ओर विशेष रूचि होने के कारण उन्होंने इलाहाबाद (अब प्रयागराज) के प्रतिष्ठित आईईआरटी से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा किया। इसके बाद 15 जून 1988 को उन्होंने हिंडाल्को इंडस्ट्रीज लिमिटेड, रेणुकूट में प्रोबेशनरी फोरमैन के रूप में कार्यारंभ किया।

शिक्षा के प्रति उनका लगाव कार्यकाल के साथ भी बना रहा। उन्होंने वर्ष 1995 में एएमआईई की परीक्षा उत्तीर्ण की और इसके बाद आईएमटी गाजियाबाद से एमबीए की डिग्री प्राप्त की। तकनीकी दक्षता, प्रबंधन कौशल और टीम भावना ने उन्हें लगातार ऊंचाइयों पर पहुंचाया।

शैलेंद्र पाण्डेय न केवल एक सफल इंजीनियर और प्रबंधक रहे, बल्कि सामाजिक क्षेत्र में भी उन्होंने अपनी विशेष पहचान बनाई। वर्ष 2018-19 में वे लायंस क्लब रेणुकूट के अध्यक्ष रहे। उनके कार्यकाल में क्लब को बेस्ट क्लब, बेस्ट प्रेसिडेंट और हाईएस्ट एक्टिविटी क्लब जैसे कई सम्मान प्राप्त हुए। इन सामाजिक कार्यों में उनकी धर्मपत्नी मधु पांडेय का विशेष सहयोग रहा, जिन्होंने सदैव परिवार और समाज के बीच संतुलन बनाकर रखा।

शैलेंद्र और मधु पाण्डेय का परिवार शिक्षा और संस्कारों की मिसाल है। उनकी पुत्री अनुमेहा पाण्डेय, बी.टेक कर नोएडा में सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में कार्यरत हैं, जबकि पुत्र अनुभव पाण्डेय बी.टेक (इलेक्ट्रिकल) करने के बाद डीवीसी दुर्गापुर में सेवाएं दे रहे हैं।

घर में अभिनव शक्ति पुत्र इशु पाण्डेय को शैलेंद्र व मधु ईश्वर का अवतार मानते है इशु के प्रति जिस ममत्व और समर्पण से दोनों ने पालन-पोषण किया, उसकी सराहना हर कोई करता है।कंपनी की तकनीकी प्रगति में योगदान देने हेतु शैलेंद्र पाण्डेय को कई बार विदेश यात्राओं का अवसर मिला पहली बार 1996मे जर्मनी जाकर एक्सट्रूज़न डाई का प्रशिक्षण लिया, 2011 चीन में रोमिडोट मशीन निरीक्षण हेतु, 2012 ग्रीस से मशीन अधिग्रहण के लिए, 2022 मे दुबई विषेश एक्सट्रूज़न डाई प्रशिक्षण के लिए भेजा गया।

शैलेंद्र पाण्डेय अपने प्रेरणा स्त्रोत पिता धर्मेश्वर नाथ पांडेय और माता शकुंतला देवी को मानते हैं। वहीं, पेशेवर जीवन में वीरेंद्र कुमार बहल ने उन्हें सदैव प्रेरित किया।

मित्रों का नाम लेने पर शैलेंद्र के हृदय में भावुकता छलक रही थी। उन्होंने अपने मित्रों को याद करते हुए कहा कि अपने जीवन के इस महत्वपूर्ण क्षण पर विजय पाल सिंह, राकेश श्रीवास्तव, राकेश कुमार श्रीवास्तव और चंद्र प्रकाश सिंह का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। इन सभी मित्रों ने सुख-दुख के हर पड़ाव पर मेरा साथ दिया, प्रेरणा दी और सहयोगी भाव से कदम-कदम पर खड़े रहे।

आप सभी का स्नेह, मार्गदर्शन और अपनापन मेरी जीवन-यात्रा की अमूल्य धरोहर रहेगा। वह कहते हैं कि मनुष्य को हमेशा शांत भाव से पूरे मन योग से कार्य करना चाहिए। सेवानिवृत्ति के बाद भी शैलेंद्र पाण्डेय की विनम्रता और नेतृत्व शैली की चर्चा हिंडाल्को परिवार में होती है। वे अपने साथ काम करने वाले प्रत्येक सहयोगी को अपनी उपलब्धि का हिस्सा मानते हुए कहते हैं डाई शॉप का हर व्यक्ति लाजवाब है उसके साथ कार्य करना गर्व की बात है।शैलेंद्र कुमार पाण्डेय की यात्रा एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जिसने साधारण परिवेश से निकलकर न केवल पेशेवर जीवन में सफलता पाई, बल्कि समाज में भी अपनी सादगी, सेवा और समर्पण की छाप छोड़ी। उनका जीवन युवाओं के लिए प्रेरणा है कि ईमानदारी, शिक्षा और परिश्रम के बल पर कोई भी व्यक्ति किसी भी ऊंचाई को छू सकता है। ●

बालको ने कार्यस्थल पर चलाया मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता अभियान

वेदांता समूह की कंपनी भारत एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड (बालको) ने विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अंतर्गत मानसिक दृढ़ता, भावनात्मक संतुलन और कार्यस्थल पर जीवन की गुणवत्ता में सुधार हेतु जागरूकता एवं परामर्श सत्र आयोजित किए। इसके माध्यम से कंपनी ने कर्मचारियों के समग्र कल्याण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पुनः सुदृढ़ किया। कार्यक्रम में 150 से अधिक कर्मचारियों ने भाग लिया। अपने वेलनेस पार्टनर 'योरदोस्त' के सहयोग से बालको ने विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कीं, जिनमें 'माइंड जिम क्विज़' नामक 60 सेकंड की प्रतियोगिता शामिल थी। इसका उद्देश्य एकाग्रता बढ़ाना और मानसिक तर्कशीलता को प्रोत्साहित करना था। वरिष्ठ मनोवैज्ञानिक डॉ. अंकिता सिंह ने कार्यशाला का संचालन किया, जिसमें तनाव के शुरुआती लक्षणों की पहचान, व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में संतुलन बनाने तथा मानसिक स्वास्थ्य को समय रहते संभालने के व्यावहारिक उपायों पर चर्चा की गई।

व्यक्तिगत सहायता उपलब्ध कराने के लिए बालको ने वन-ऑन-वन काउंसलिंग सत्रों की भी व्यवस्था की, जिससे कर्मचारी सुरक्षित और गोपनीय वातावरण में विशेषज्ञ परामर्श प्राप्त कर सकें। समाधान केंद्रित इन सत्रों ने कर्मचारियों को अपनी चिंताओं को पहचानने और अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित किया, जिससे संगठन के भीतर 'सुनने और सहयोग करने की संस्कृति' को और सशक्त किया गया।

बालको के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं निदेशक राजेश कुमार ने कहा कि कंपनी की प्रगति की शुरुआत लोगों से होती है और आज की तेज़-रफ्तार दुनिया में भावनात्मक सुख-शांति अत्यंत आवश्यक है। मानसिक स्वास्थ्य एक साझा जिम्मेदारी है, हर व्यक्ति को यह महसूस होना चाहिए कि वह समर्थित, मूल्यवान है और बिना किसी भय के परामर्श प्राप्त कर सकता है। हमारा लक्ष्य ऐसा कार्यस्थल बनाना है जहाँ खुलकर बातचीत, संवेदनशील समुदाय और हर व्यक्ति को सुना जाए ताकि वह अपनी पूर्ण क्षमता से विकसित हो सके।

अपने अनुभव साझा करते हुए शोविनी खेर ने कहा कि अक्सर कोई भी शुरुआती संकेतों के बारे में बात नहीं करता जैसे मनोदशा, ऊर्जा या ध्यान में सूक्ष्म बदलाव, जो किसी गहरी समस्या का संकेत हो सकते हैं। इस कार्यशाला ने मुझे उन संकेतों को पहचानने और समय रहते प्रतिक्रिया देने की समझ दी।

कर्मचारियों और व्यावसायिक साझेदारों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए बालको निरंतर जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करता रहा है। कंपनी बालको प्रीमियर लीग (क्रिकेट), बैडमिंटन टूर्नामेंट और वॉलीबॉल प्रीमियर लीग जैसी खेल गतिविधियों के माध्यम से शारीरिक फिटनेस और टीम भावना को बढ़ावा देती है। साथ ही पूरे साल विभिन्न त्यौहारों का उत्सव मनाकर सांस्कृतिक एकता और सामूहिक आनंद का वातावरण भी निर्मित करती है। इन पहल के माध्यम से बालको यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक कर्मचारी एक ऐसे वातावरण में कार्य करे जहाँ वह सम्मानित, समर्थित और अपनापन महसूस कर सकें। ●

सीईआरसी सदस्य रमेश बाबू वी का एनटीपीसी रामागुंडम सुपर थर्मल पावर स्टेशन का दौरा

केंद्रीय विद्युत नियामक आयोग (सीईआरसी) के सदस्य एवं एनटीपीसी लिमिटेड के पूर्व निदेशक (संचालन) रमेश बाबू वी ने एनटीपीसी रामागुंडम सुपर थर्मल पावर स्टेशन का दौरा किया। उनके आगमन पर कार्यकारी निदेशक (रामागुंडम एवं तेलंगाना) चंदन कुमार सामंत सहित सभी महाप्रबंधकों एवं विभागाध्यक्षों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया।

दौरे के दौरान रमेश बाबू वी ने तेलंगाना स्विचयार्ड का निरीक्षण किया और नवनिर्मित तेलंगाना सुरक्षा परिसर का उद्घाटन किया। उन्होंने तेलंगाना संयंत्र एवं मियावाकी प्लांटेशन का भी अवलोकन किया। इसके साथ ही उन्होंने 176 मेगावाट सौर परियोजना तथा 100 मेगावाट फ्लोटिंग सौर परियोजना का निरीक्षण करते हुए एनटीपीसी की सतत और नवीकरणीय ऊर्जा विकास के प्रति प्रतिबद्धता की सराहना की। ●

पीवीयूएनएल ने हासिल किया एक बड़ा माइलस्टोन

एनटीपीसी की सहायक इकाई और झारखंड बिजली वितरण निगम लिमिटेड (जेबीवीएनएल) के संयुक्त उद्यम पतरातू विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड (पीवीयूएनएल) ने अपनी प्रमुख विद्युत परियोजना (चरण-I, 3x800 मेगावाट) की यूनिट-1 का 72 घंटे का सफल ट्रायल ऑपरेशन 16 अक्टूबर 2025 को पूर्ण कर एक ऐतिहासिक उपलब्धि दर्ज की है। यह सफलता झारखंड की विद्युत अवसंरचना को सुदृढ़ करने, राज्य की आत्मनिर्भरता को बढ़ाने तथा भारत की बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं में सार्थक योगदान देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस परियोजना की नींव भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 25 मई 2018 को रखी गई थी।

इस माइलस्टोन अवसर पर ए.के. सहगल, मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ), पीवीयूएनएल; अनुपम मुखर्जी, मुख्य महाप्रबंधक (परियोजना); मनीष क्षेत्रपाल, महाप्रबंधक (ऑपरेशन एवं मेंटेनेंस); विष्णु दत्ता दास, महाप्रबंधक (परियोजना); ओ.पी. सोलंकी, महाप्रबंधक (मेंटेनेंस); तथा संगीता दास, महाप्रबंधक (टी एंड एस) सहित वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में इस सफलता का साक्षी बना गया।

इस अवसर पर अपने संबोधन में ए.के. सहगल, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, पीवीयूएनएल ने कहा – 'पीवीयूएनएल राज्य झारखंड को अपनी कुल विद्युत उत्पादन का लगभग 85% हिस्सा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। यह उल्लेखनीय उपलब्धि हमारे कर्मियों के अथक प्रयासों, झारखंड सरकार के सहयोग और सभी हितधारकों के समर्थन से ही संभव हो सकी है।

पीवीयूएनएल में नवीनतम उन्नत तकनीकों को अपनाया गया है जैसे कि – पूरी तरह से ड्राई ऐश यूटिलाइजेशन सिस्टम जो सर्कुलर इकॉनमी को प्रोत्साहित करता है, अल्ट्रा सुपरक्रिटिकल तकनीक जो कार्बन उत्सर्जन को न्यूनतम करती है, और एयर-कूल्ड कंडेंसर (ACC) प्रणाली जो जल संरक्षण एवं सतत विकास सुनिश्चित करती है।'

यूनिट-1 के सफल ट्रायल ऑपरेशन की यह उपलब्धि पीवीयूएनएल, एनटीपीसी, झारखंड सरकार तथा सभी साझेदार संस्थाओं की सामूहिक प्रतिबद्धता और समन्वित प्रयासों का परिणाम है, जिसने राष्ट्र के लिए एक विश्वसनीय, पर्यावरण-अनुकूल और कुशल ऊर्जा तंत्र के निर्माण के लक्ष्य को एक नई दिशा प्रदान की है।

परियोजना के पूर्ण रूप से चालू हो जाने पर 3x800 मेगावाट की यह परियोजना झारखंड राज्य में ऊर्जा की उपलब्धता और विश्वसनीयता को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाएगी, जिससे राज्य के आर्थिक एवं औद्योगिक विकास को नई गति प्राप्त होगी।

सितारा एक बार चमकीं, तो फिर कभी उनकी चमक कम नहीं हुई

-ज़ाहिद ख़ान

उत्तर भारत के अहम शास्त्रीय नृत्य कथक के कई बड़े-बड़े कलाकार हुए हैं, जिन्होंने अपनी नृत्य कला से देशवासियों का मन मोहा और इस कला को गुरु-शिष्य परंपरा से देश के दूरदराज क्षेत्रों तक पहुँचाया। इन कलाकारों में कथक साम्राज्ञी सितारा देवी का नाम सबसे अव्वल है। उनकी प्रस्तुतियाँ इतनी प्रभावी होती थीं कि लोग उन्हें मंत्रमुग्ध हो देखते रह जाते थे। कथक के फ़लक़ पर सितारा जब एक बार चमकीं, तो फिर उनकी चमक कभी खत्म नहीं हुई। वह बिजली–सी तेज़ी से नृत्य करती थीं। उनका हर अंग फड़कता था। यहाँ तक कि उनकी आँखें भी साथ-साथ नाचती थीं। भाव-अभिनय में भी उनका कोई जवाब नहीं था। हस्तकों, चेहरे, आँखों के ज़रिये वे बहुत सूक्ष्मता के साथ इंसानी जज़्बात का इज़हार करती थीं। लोग उनके नृत्य से बंध के रह जाते थे। पं. बिरजू महाराज, जो खुद़ कथक के बड़े कलाकार और गुरु थे, उनका सितारा देवी के नृत्य के बारे में खय़ाल था, ''सितारा देवी 'स्ट्रॉंग' नाचती थी। जो दिल-ओ-दिमाग़ पर छा जाता था।'' पं. बिरजू महाराज की ये बात सही भी है। जिन लोगों ने सितारा देवी के नृत्य को देखा है, वे इसे क़बूलते भी हैं। सितारा देवी अपनी हर चितवन, मुद्राओं और अदाओं से दर्शकों को सम्मोहित कर लिया करती थीं। उन्होंने अपने नृत्य में नई-नई कृतियाँ और स्टाइल देकर कथक को समृद्ध किया। देश–दुनिया में आज भी सितारा देवी के शिष्य उनकी परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं।

8 नवम्बर, जन्मदिवस और 25 नवम्बर, स्मृति दिवस पर विशेष

8 नवम्बर, 1920 को कोलकाता में जन्मी सितारा देवी के पिता पं. सुखदेव महाराज भी कथक गुरु, संगीत मर्मज्ञ और गायक थे। वह नेपाल महाराज के दरबार में गाना गाते थे। वहीं उनके चाचा पं. ननकू महाराज नृतक थे। पं. सुखदेव महाराज एक तरक्क़ीपसंद इंसान थे। जो महिलाओं और पुरुषों के बीच कोई बड़ा फ़र्क़ नहीं समझते थे। एक ऐसे ज़माने में जब महिलाओं को सात पर्दे में रखा जाता था और शरीफ़ घराने की लड़कियों को अभिनय-गायन-वादन और नृत्य से दूर रखा जाता था, तब उन्होंने अपनी तीनों लड़कियों अलकनन्दा, तारा देवी और सितारा देवी को नृत्य की तालीम दी। उन्हें वह सब चीजें और माहौल मुहैया कराया, जो उनके नृत्य सीखने में आड़े न आए। सितारा देवी की पूरी तालीम बनारस में हुई। अपने पिता पं. सुखदेव महाराज के अलावा उन्होंने अच्छन महाराज, लच्छू महाराज और शंभू महाराज से कथक के अलग-अलग अंगों को बड़ी बारीकी से सीखा। उनकी बातों को कुछ इस तरह से आत्मसात किया कि वे आगे चलकर कथक की पर्याय हो गईं। इस मुक़ाम पर पहुँचने के लिए उन्होंने काफ़ी मेहनत की। कुर्बानियाँ दीं। गुरुओं के नाज़-नखरे उठाए। बिना रुके-थके घंटों रियाज़ किया। सीखने के लिए उनमें जो ललक थी, उसके बारे में पं. बिरजू महाराज ने अपने एक इंटरव्यू में कहा था, ''उनकी ज़िद होती थी कि मुझे सीखना है और ज़्यादा सीखना है, बेहतर सीखना है। सीखने की भूख और ललक उनके अंदर बहुत थी। और उनकी यह ललक आखरि तक रही।'' ज़ाहिर है कि इसी सीखने की ललक ने उन्हें आगे बढ़ाया। कथक के शिखर तक पहुँचाया। कथक नृत्यांगना शोवना नारायण, तो उनके बारे में यहाँ तक कहती हैं, ''भरतनाट्यम के लिए जो काम रुक्मिणी

देवी ने किया, कथक के लिए वही काम सितारा देवी ने किया है।''

सितारा देवी और उनकी बड़ी बहनें अलकनन्दा, तारा कथक नृत्य में पारंगत हुईं, तो पं. सुखदेव महाराज ने उनके नृत्य को एक नई दिशा दी। उन्होंने कथक को भारतीय परंपराओं, धर्म और संस्कृति से जोड़ा। उनकी चाहत थी कि गीतगोविंद, रामायण, तांडव और कृष्ण-लीला को नृत्य में इस तरह पेश किया जाए कि आम दर्शकों को भी इसे देखने में मज़ा आए। वे उससे जुड़ सकें। उनके इस सपने को सितारा देवी ने बख़ूबी साकार किया। बहरहाल, जब पं. सुखदेव महाराज की लड़कियों ने सार्वजनिक तौर पर अपनी कला का प्रदर्शन किया, तो बिरादरी वालों ने इस बात का ऐतराज़ किया। पर वे अपने फ़ैसले पर अटल रहे। उनके इस फ़ैसले की वजह से उन्हें अपनी बिरादरी से निकाल दिया गया। लेकिन पं. सुखदेव महाराज ने हिम्मत नहीं हारी और अपनी बेटियों को लेकर कोलकाता चले गए। उन्होंने महाराज मैमन सिंह के यहॉं नौकरी कर ली। नृत्य, कला, संगीत के लिए कोलकाता में माक़ूल माहौल था। इस माहौल में सितारा देवी की प्रतिभा और निखर कर आई। देखते ही देखते उन्होंने रबीन्द्र संगीत पर भी नृत्य करने में महारत हासिल कर ली। उनके नृत्य के प्रोग्राम जगह-जगह होने लगे। जब एक कार्यक्रम में गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर ने सितारा देवी का नृत्य प्रदर्शन देखा, तो वे उनसे बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने सितारा देवी को पुरस्कृत भी किया। सितारा देवी के नृत्य की जब चर्चाएं चारों और हुईं, तो उन्हें देश के अलग-अलग रजवाड़ों से बुलावे आने लगे। रायगढ़, धर्मपुर काशी, निज़ाम हैदराबाद, दरभंगा आदि रियासतों में उन्होंने अपने नृत्य की प्रभा बिखेरी।

सितारा देवी का जन्म जैसे नृत्य के ही लिये हुआ था। जब वह महज़ आठ साल की थीं, तब ही उन्होंने अपने स्कूल में एक नाटक में नृत्य का निर्देशन कर दिया था। उनकी इस प्रतिभा को देखकर, स्कूल वाले भी हतप्रभ रहे गए थे। सितारा देवी ने अपनी पहली सार्वजनिक डांस परफॉर्मेंस बनारस के गणेश मंदिर में दी। बहुत कम उम्र में ही उन्होंने कथक पर महारत हासिल कर ली थी। दस साल की उम्र तक आते-आते वे स्टेज शोज़ करने लगीं। उन्हें जगह-जगह से बुलावा आने लगा। सितारा देवी ने अपने नृत्य की शुरुआत बनारस घराने से की और उसके बाद लखनऊ घराने के गुरुओं से बहुत कुछ सीखा। यही वजह है कि उनके नृत्य में दोनों घरानों का मधुर मिलन दिखाई देता था। उनका मानना था कि ''कलाकार और दर्शक के बीच एक ऐसा तादात्मय होना चाहिए, जिसे दर्शक कभी भूल न सकें। कलाकार और दर्शक दोनों भाव-विभोर होकर एक ही रस में बहने लगें।'' साल 1938 में मुंबई में सितारा देवी को 'थ्री आर्टस सर्कल' के एक आयोजन में डांस करने का मौक़ा मिला। इस जलसे में रबीन्द्रनाथ टैगोर, सरोजिनी नायडू समेत कई नामी-गिरामी लोग आए हुए थे। इस आयोजन में सितारा देवी ने तक़रीबन चार घंटे तक लगातार डांस किया। उनके डांस से टैगोर इतना प्रभावित हुए कि उन्हें 'नृत्य श्याम रागिनी' और 'कथक क्वीन' के ख़िताब से नवाज़ा। और सितारा देवी ने भी इस ख़िताब की अपने आखिरी दम तक हिफ़ाज़त की। जीते जी, कोई उनके जैसा न हो सका।

भारतीय नृत्य परंपरा का आग़ाज़ भगवान शिव के तांडव, पार्वती के लास्य और कृष्ण की रासलीला से होता है। यह सिलसिला कई भारतीय नृत्यों मसलन कथक, भरतनाट्यम, कथकली, ओड़िसी, कुचीपूड़ी आदि में दिखाई देता है। सितारा देवी ने भी अपने नृत्य के ज़रिए गीत गोविंद, कृष्णलीला, रास और रबीन्द्र संगीत को बेहतरीन तरीके से दर्शकों के बीच पहुंचाया। कथक, जिसे कभी राजमहलों और कोठे का नृत्य समझा जाता था, उसे उन्होंने सामाजिक प्रतिष्ठा दी। लोगों को बताया कि यह नृत्य महज मर्दों को लुभाने के लिए ही नहीं है, इस नृत्य का इस्तेमाल और भी मनोभावों को प्रस्तुत करने के लिए किया जा सकता है। सितारा देवी ने देश भर के प्रतिष्ठित संगीत समारोह के अलावा विदेशों में भी अपनी कला का प्रदर्शन किया। और वहॉं वह ख़ूब सराही गईं। लंदन के रॉयल अल्बर्ट हॉल और अमेरिका के कार्नेजी हॉल में भी उन्होंने अपनी प्रस्तुतियॉं दीं। सितारा देवी ने कथक नृत्य के अलावा फ़िल्मों में भी काम किया। यहॉं भी वह कामयाब रहीं। साल 1933 में आई मूक फ़िल्म 'औरत का दिल' उनकी पहली फ़िल्म थी। उसके बाद उन्होंने महबूब खा़न की फ़िल्म 'अल हिलाल' (साल-1935) में एक रोल किया। आगे चलकर निर्देशक निरंजन शर्मा ने कथक डांस में सितारा देवी की सलाहियत को देखते हुए, अपनी फ़िल्म 'उषा हरण' (साल 1940) में एक रोल दिया। जिसमें उनके द्वारा किया गया डांस बेहद मक़बूल हुआ। इसके बाद 'रंजीत मूवीटोन' ने उन्हें अपनी कई फ़िल्मों में काम करने का मौक़ा दिया। ज़ल्द ही फ़िल्म इंडस्ट्री में उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बना ली।

सितारा देवी की कथक के साथ-साथ भरतनाट्यम समेत दीगर भारतीय शास्त्रीय नृत्यों से भी अच्छी तरह वाक़फ़ियत थीं। वेस्टर्न डांस और रशियन बैले को सीखने में उन्हें कोई दुश्वारी पेश नहीं आई। जल्द ही उन्होंने वेस्टर्न डांसों पर भी महारत हासिल कर ली। डांस करने की उनकी इस हैरतअंगेज़ सलाहियत की वजह से सितारा देवी को फ़िल्मों में लगातार रोल मिलते रहे। यही नहीं उन्होंने कई फ़िल्मों में नृत्य निर्देशन भी दिया। मशहूर हीरोइनों को कथक नृत्य सिखाया। महबूब खा़न के अलावा सितारा देवी ने के.आसिफ़ जैसे चोटी के डायरेक्टरों के साथ भी फ़िल्में कीं। 'रोटी', 'वतन', 'नज़मा', 'फूल', 'देवदास', 'होली', 'बागवान', 'पूजा' और 'मदर इंडिया' वे फ़िल्में हैं जिनमें उन्होंने अपनी अदाकारी का जादू बिखेरा। इन फ़िल्मों में किए गए उनके डांस भी ख़ूब़ पसंद किए गए। खास़ तौर पर

फ़िल्म 'मदर इंडिया' में होली गीत 'होली आई रे कन्हाई' पर उनके नृत्य को शायद ही कोई भूल पाए। एक लिहाज से कहा जाए, तो फ़िल्मों में कथक नृत्य को परिचित और प्रचलित करवाने में सितारा देवी का बड़ा रोल है। फ़िल्मों में कामयाबी के बाद भी उनकी पहली मुहब्बत कथक था। फ़िल्मों के साथ ही वे बराबर स्टेज पर लाइव परफॉर्म करती रहीं। लेकिन एक वक़्त आया, जब उनका फ़िल्मी दुनिया से मोह भंग हो गया। और उन्होंने फ़िल्मों से पूरी तरह किनारा कर लिया। सिर्फ़ नृत्य की ही हो के रह गईं।

सितारा देवी ने मुंबई के एक कार्यक्रम में लगातार बारह घंटे कथक प्रस्तुत कर जो रिकॉर्ड क़ायम किया था, वह आज भी बरक़रार है। सितारा देवी जब डांस करती थीं, तो उसमें पूरी तरह मग्न हो जाती थीं। उनमें आखरि़ तक एक जोश और ज़िंदादिली रही। उम्र के आखरि़ी पड़ाव पर जब वे व्हीलचेयर पर थीं, किसी प्रोग्राम में जातीं, तो बैठे-बैठे ही उनका जिस्म हरकत करने लगता था। वह इस तरह हस्तमुद्राएं और नयनमुद्राएं बनातीं कि लोग सब कुछ भूल जाते। कथक के जानिब उनकी लगन, मुहब्बत, जज़्बा और समर्पण देखते ही बनता था। भारतीय नृत्य को समृद्ध करने और उसे आगे बढ़ाने में सितारा देवी के योगदान को देखते हुए, उन्हें कई सरकारी-गैऱ सरकारी पुरस्कारों और सम्मानों से सम्मानित किया गया। संगीत नाटक अकादेमी का 'रत्न सम्मान', 'कालिदास सम्मान' और 'पद्मश्री' वे अहम सम्मान और पुरस्कार हैं जिनसे वे नवाज़ी गईं। लेकिन इन सब सम्मानों से भी ज़्यादा, जो प्यार उन्हें उनके प्रशंसकों ने दिया, वे उसे सर्वोपरि मानती थीं। सितारा देवी बड़ी स्वाभिमानी थी और उन्होंने कभी अपने ज़मीर से समझौता नहीं किया। साल 2002 में उन्हें सरकार ने 'पद्मभूषण' सम्मान देने का ऐलान किया, लेकिन उन्होंने यह सम्मान यह कहते हुए ठुकरा दिया कि ''वे इससे भी कहीं ज़्यादा की हक़दार हैं।''

सितारा देवी ने ज़िंदगी भर गुरु-शिष्य परंपरा को निभाया और कथक को ऊँचा दर्जा दिलाने की अनथक कोशिशें कीं। नृत्य के प्रति उन जैसी लगन और समर्पण आज की नई पीढ़ी में बमुश्किल दिखाई देता है। सितारा देवी को एक लंबी उम्र मिली। उन्होंने जब नृत्य का आग़ाज़ किया, तो राजे-रजवाड़े शास्त्रीय गीत-संगीत, नृत्य, गायन, वादन और दीगर भारतीय कलाओं और कलाकारों को ख़ूब प्रश्रय देते थे। आज़ादी के बाद, शुरू के दो-तीन दशक तक ये परंपरा जारी रही। सरकारें उनका सहयोग और नवाज़ती रहीं। लेकिन जैसे-जैसे मनोरंजन के नये-नये साधन सामने आए, भारतीय शास्त्रीय संगीत को ही अकेले चुनौती पेश नहीं आई, लोक कलाएं भी हाशिए पर चली गईं। सितारा देवी को इस बात का एहसास था। वे समय-समय पर इसकी चिंता जताती रहती थीं। बावजूद इसके वे आशावान भी थीं। अपने एक इंटरव्यू में उन्होंने मौजूदा समय को जहॉं चुनौतीपूर्ण बताया था, ते वहीं वे इस बात से भी पूरी तरह मुतमईन थीं कि भारतीय शास्त्रीय संगीत को कोई खत्म नहीं कर सकता। वह हमेशा रहेगा।

''आज के समय में कला और कलाकारों को अपनी कला को ज़िंदा रखना एक चुनौती है। सिर्फ़ शास्त्रीय कला ही नहीं, लोक-कलाओं के अस्तित्व को भी खत़रा पैदा हो गया है। क्योंकि, लोग आराम से टीवी चैनलों में खाते-पीते, सोते-जागते कला का आनंद लेना चाहते हैं। वैसे मुझे यक़ीन है कि हमारी कलाएं विद्या हैं, जीवन हैं, संस्कार हैं, संस्कृति हैं। इसलिए ये अमर हैं। हालॉंकि समय के साथ इसकी चमक कम या ज़्यादा हो सकती है।'' 25 नवम्बर, 2014 को कथक की महारानी सितारा देवी ने इस दुनिया से अपनी रुख़्सती ली।

महल कॉलोनी, शिवपुरी म. प्र.
मोबाइल : 9425489944

गाँव गिराँव हिन्दी मासिक पत्रिका पाठकों के लिए gaongiraw.in पर भी उपलब्ध।
अन्य वेबपेज के लिए देखें
www.gaongiraw.com
www.gaongirawsports.com

अर्जुन सिंह

(जयंती 5 नवम्बर)

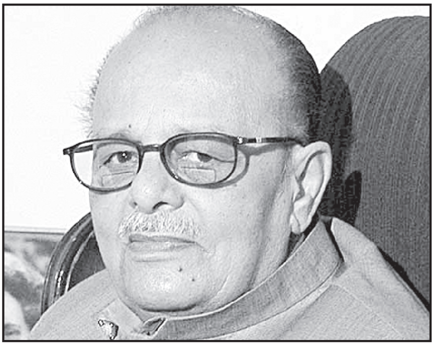

अर्जुन सिंह का जन्म 5 नवम्बर 1930 को मध्य प्रदेश के सीधी जिले के चुरहट कस्बे में एक राजपूत परिवार में हुआ था। इनके पिता राव शिव बहादुर सिंह भी राजनीति में थे। 1957 में अर्जुन सिंह ने पहली बार विधान सभा का चुनाव लड़ा और जीत दर्ज की। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वरिष्ठ राजनीतिज्ञों में रहे अर्जुन सिंह मध्य प्रदेश के तीन बार मुख्यमंत्री रहे जिसमें 1985 में प्रचण्ड बहुमत के बाद भी एक ही दिन मुख्यमंत्री रह सके। 1963 में पहली बार वे द्वारका प्रसाद मिश्र की सरकार में कृषि मंत्री बने थे। पंजाब के राज्यपाल सहित केन्द्र सरकार में मंत्री रहते उनके अनेक योगदान आज भी याद किये जाते हैं। हार, जीत का कभी इनके राजनीतिक जीवन पर असर नहीं पड़ा। एक सरल और गरीबों के हितैषी नेता के रुप में इनकी पहचान मध्य प्रदेश के जमीनी नेता के रुप में जुड़ी रही। नेता प्रतिपक्ष, राज्यसभा सदस्य के रुप में जीवन पर्यन्त सक्रिय राजनीति में बने रहे। राजीव गांधी की हत्या के बाद नरसिंहा राव प्रधानमंत्री बने जिनसे इनकी कभी नहीं बनी। राम मंदिर मुद्दे पर इनको सत्ता का दंश झेलना पड़ा और कांग्रेस से बाहर कर दिये गये तब ये एनडी तिवारी के साथ तिवारी कांग्रेस में चले गये मगर सतना सीट 1996 में हारने के बाद फिर वापस कांग्रेस में आ गये। 2004 से 2009 तक यूपीए सरकार में मंत्री रहते काफी अस्वस्थ हो गये और 4 मार्च 2011 को नई दिल्ली में निधन हो गया। मध्य प्रदेश में मुख्यमंत्री रहते दस्यु उन्मूलन और पंजाब में शान्ति बहाली के लिए उन्हें आज भी याद किया जाता है।

लक्ष्मी मल्ल सिंघवी

(जयंती 9 नवम्बर)

लक्ष्मी मल्ल सिंघवी का जन्म 9 नवम्बर 1931 को जोधपुर राजस्थान में हुआ था। जाने माने कवि, लेखक, भाषाविद, संविधान विशेषज्ञ और प्रसिद्ध न्यायविद थे। उन्होंने हिन्दी को विश्व पटल पर स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सिंघवी जी को भारतीय संस्कृति का राजदूत कहा जाता था। 1962 से 1967

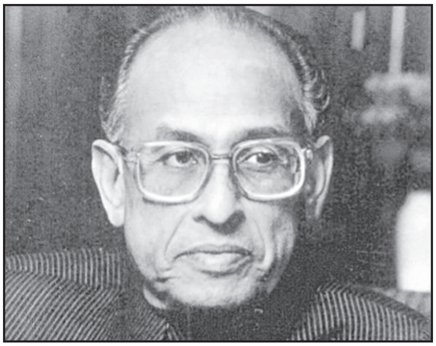

तक तीसरी लोकसभा के सदस्य 1972 से 1977 तक राजस्थान के एडवोकेट जनरल तथा अनेक वर्षों तक यूके में भारत के राजदूत रहे। 1999 में उन्हें राज्यसभा के लिए भी चुना गया। उन्हें भारत में अनेक लोकपाल, लोकायुक्त संस्थाओं का जनक भी माना जाता है। सर्वोच्च न्यायालय में बार एसोसिएशन के अध्यक्ष के रुप में उन्होंने ही विधि दिवस का शुभारम्भ किया था। प्रवासी भारतीय दिवस मनाने की संकल्पना भी सिंघवी जी की ही थी। वे साहित्य अमृत के सम्पादक रहते विद्या निवास मिश्र की स्वस्थ साहित्यिक परंपरा को भी आगे बढ़ाये। विश्व हिन्दी सम्मेलन में भी उनकी अग्रणी भूमिका रहती थी। भाषा को सरल हिन्दी में प्रस्तुत करने में उनका कोई सानी नहीं था। उनकी प्रसिद्ध हिन्दी और अंग्रेजी कृतियाँ सन्ध्या का सूरज (हिन्दी काव्य) पुनश्च (संस्मरणों का संग्रह), भारत हमारा समय, जैन मन्दिर, डेमोक्रेसी एण्ड द रुल ऑफ द लॉ, फ्रीडम आन ट्रायल प्रमुख हैं। भारत सरकार ने 1998 में उनकी उत्कृष्ठ सेवाओं के लिए पद्म भूषण से अलंकृत किया। 6 अक्टूबर 2007 को सिंघवी जी का निधन हो गया। मरणोपरांत उनके सम्मान में 8 दिसम्बर 2008 को भारतीय डाक तार विभाग ने एक डाक टिकट जारी किया।

विरसा मुण्डा

(जयंती 15 नवम्बर)

विरसा मुण्डा का जन्म 15 नवम्बर 1875 को झारखंड राज्य के रांची में हुआ था। विरसा के पिता सुगना मुंडा जर्मन धर्म प्रचारकों के सहयोगी थे। इनका पूरा परिवार इसाई धर्म स्वीकार कर लिया था। विरसा का बचपन रिश्तेदारों के यहां बकरियाँ चराते हुए बीता। बाद में उन्होंने कुछ दिन चाईबासा के मिशन स्कूल में शिक्षा ग्रहण की। किन्तु स्कूल में उनके आदिवासी संस्कृति का उपहास उड़ाया जाता था जो उनको सहन नहीं हुआ। इस पर उन्होंने भी पादरियों का मजाक उड़ाना शुरु किया तब उन्हें स्कूल से निकाल दिया गया। तभी विरसा के जीवन में एक नया मोड़ आया। उनकी भेंट स्वामी आनन्द पाण्डेय से हो गयी। वहीं उन्होंने हिन्दू धर्म ग्रन्थों का

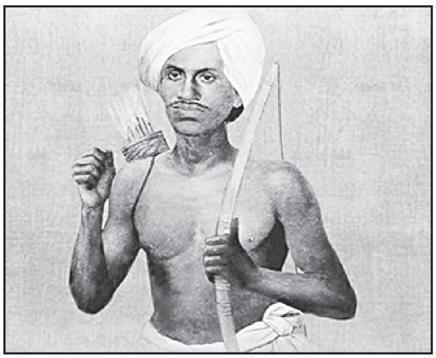

अध्ययन किया। कहा जाता है कि 1895 में कुछ ऐसी अलौकिक घटनायें हुई जिससे लोग विरसा को भगवान का अवतार मानने लगे। जन सामान्य का काफी विश्वास उनके ऊपर होने लगा। विरसा ने अन्ध विश्वासों पर से पर्दा हटाने और हिन्दू धर्म से लोगों को जोड़ने का काम शुरु किया। उनका प्रभाव ऐसा पड़ा कि इसाई धर्म स्वीकार करने वालों की संख्या तेजी से घटने लगी। और जो मुंडा जाति के लोग इसाई बने थे फिर से हिन्दू होने लगे। जमीदारों के खिलाफ किसानों को एकजुट करने का बीड़ा विरसा ने उठाया और शोषण का प्रतिकार किया। यह देखकर ब्रिटिश सरकार ने उन्हें भीड़ जुटाने और बरगलाने से रोकना शुरु किया। दो वर्ष तक उन्हें हजारी बाग जेल में डाल दिया गया। बाद में प्रचार न करने के शर्त पर छोड़ा गया। वे फिर नहीं माने और युवाओं का संगठन बनाकर अंग्रेजों, जमींदारों के खिलाफ आन्दोलन शुरु कर दिये। 24 दिसम्बर 1899 को तीरों से आक्रमण कर पुलिस थानों में आग लगा दी। सेना से भी सीधी मुठभेड़ हुई। परन्तु तीर कमान गोलियों का सामना नहीं कर पाये उनके साथी बड़ी संख्या में मारे गये। कुछ गद्दारों ने उनको गिरफ्तार करा दिया। जेल में संदिग्ध स्थिति में 9 जून 1900 को उनकी मृत्यु हो गयी। लोकगीतों और आदिवासी साहित्य में विरसा मुंडा आज भी जीवित हैं।

रामशरण शर्मा

(जयंती 26 नवम्बर)

रामशरण शर्मा का जन्म 26 नवम्बर 1919 को बिहार के बेगूसराय जिले के बरौनी गाँव में हुआ था। गरीब परिवार में जन्मे रामशरण के पिता, दादा एक जमींदार के यहाँ चाकरी करते थे। इनके पिता ने बड़ी मुश्किल से इन्हें मैट्रिक तक की शिक्षा दिलाई। बाद में इन्होंने खुद पढ़ाकर धर्नाजन किया और पटना कालेज में

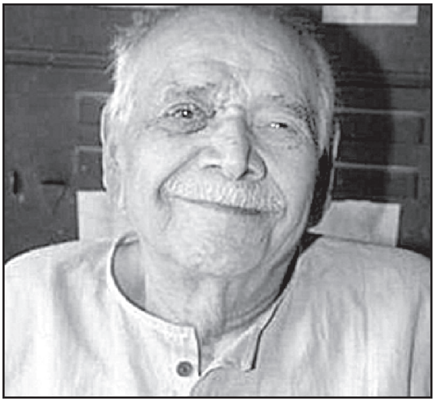

दाखिला लिया। छः वर्षों के कठिन परिश्रम से इतिहास में एमए की डिग्री ली। फिर लंदन से पीएचडी भी पूरी कर ली। पटना विश्वविद्यालय में पढ़ाते हुए पहली पुस्तक हिन्दी में विश्व साहित्य की भूमिका लिखी। फिर उनका लेखन कार्य प्रारम्भ हुआ और पन्द्रह भाषाओं में सौ से अधिक पुस्तकें लिख डाली। दिल्ली विश्वविद्यालय में 1970 के दशक में डीन के पद पर नियुक्त हुए। 1972 से 1977 तक भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद के संस्थापक अध्यक्ष भी रहे। किसी राजनीतिक दल के सदस्य नहीं रहने के बावजूद मार्क्सवाद का अध्ययन, चिन्तन मनन इनका प्रमुख कार्य रहा। धार्मिक कट्टरता और भारतीय अंग्रेजी संस्कृति पर इनका गहरा प्रभाव रहा। अनेक पुस्तकें इस विषय वस्तु पर केन्द्रित रहीं। अयोध्या विवाद, महाभारत महाकाव्य, पर इनके लेखन से विवाद छिड़ गया था। इन्होंने इतिहास लेखन को तार्किक ही नहीं बनाया बल्कि नई पीढ़ी को सिखाया भी। इनको देश की प्रतिष्ठित संस्थानों से अनेक पुरस्कार, सम्मान और डी लिट की उपाधि भी मिली। इन्होंने कहा कि इतिहास अथवा इतिहास लेखन का कर्म मात्र राजवंश, युद्ध और भारतीय साम्राज्य का इतिहास मात्र नहीं है इतिहास के वे सबक क्या हैं जिनके सहारे आज की चुनौतियों का सामना किया जा सके। ऐसे महान इतिहासविद का निधन 20 अगस्त 2011 को पटना बिहार में हो गया।

सी.के. नायडू

(पुण्यतिथि 14 नवम्बर)

भारत के प्रथम टेस्ट टीम के कप्तान सी.के. नायडू का जन्म 13 अक्टूबर 1895 को नागपुर महाराष्ट्र में हुआ था। कर्नल कोट्टारी कंकैया नायडू को प्यार से सभी लोग सी.के. कहकर पुकारते थे। 1932 में इंग्लैण्ड के विरुद्ध खेले गये मैच के कप्तान सी.के. नायडू का कद छः फुट से ऊँचा था और वे दाहिने हाथ के खिलाड़ी थे। होल्कर महाराज ने इनकी शारीरिक बनावट को देखकर अपने सेना में कैप्टन बना दिया यही से वह कर्नल सी.के. नायडू बन गये। नायडू

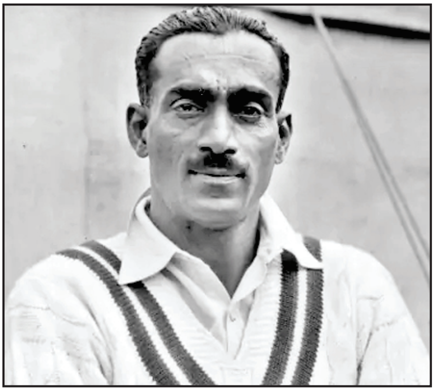

को 1933 में विजडन द्वारा क्रिकेटर ऑफ द ईयर चुना गया। सी.के. नायडू भारत के पहले क्रिकेटर थे जिन्हें सरकार द्वारा पद्मभूषण (1956) देकर सम्मानित किया गया। 1932 में इंग्लैंड दौरे के दौरान प्रथम श्रेणी के सभी 26 मैचों के दौरान इन्होंने 40.25 के औसत से 1618 रन बनाये और 65 विकेट भी लिये। हिन्दू की टीम की ओर से खेलते हुए बम्बई में उन्होंने 100 मिनट में 11 छक्के व 13 चौके लगाकर 153 रन बनाये। आखिरी पाली में उन्हें चाँदी का बल्ला भी भेंट दिया गया। ऐसे महान क्रिकेटर सी.के. नायडू का 14 नवम्बर 1967 को इन्दौर में निधन हो गया। इनके नाम पर सी.के. नायडू ट्राफी का नामकरण किया गया।

प्रकाशवीर शास्त्री

(पुण्यतिथि 23 नवम्बर)

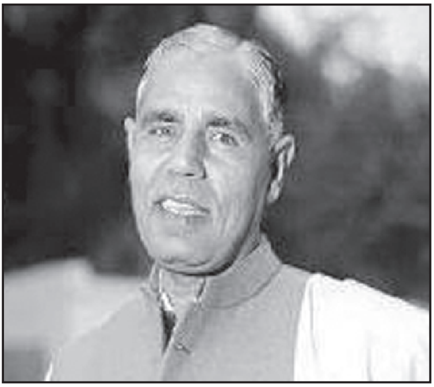

प्रकाशवीर शास्त्री का जन्म 30 दिसम्बर 1923 को उत्तर प्रदेश के रेहड़ा गाँव में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से एमए की डिग्री प्राप्त कर गुरुकुल वृंदावन के कुलपति बन गये। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से शास्त्री की डिग्री भी प्राप्त किये। प्रकाशवीर शास्त्री वैसे तो बचपन से ही राजनीति में सक्रिय थे लेकिन स्वामी दयानन्द जी तथा आर्य समाज के सिद्धांतों में पूरी आस्था रखते थे। 1936 में 16 वर्ष की आयु में हैदराबाद में धर्मयुद्ध में भाग लिये और जेल गये। 1957 में आर्य समाज के आन्दोलन में भी जबरदस्त जान फूंके। शास्त्री जी ने अनेक देशों का भ्रमण भी किया और आर्य समाज का संदेश लेकर दुनिया में गौरव बढ़ाने का काम किया। सन् 1974 में इन्हें परोपकारिणी सभा का सदस्य नामित किया गया। आपके ही पुरुषार्थ से मेरठ, कानपुर तथा वाराणसी में आर्य समाज स्थापना सम्बन्धी सम्मेलनों को सफलता मिली। ये तीन बार लोकसभा के सदस्य भी रहे। प्रकाशवीर शास्त्री का नाम भारतीय राजनीति में उच्च कोटि के भाषण देने वालों में गिना जाता है। उनके विरोधी भी प्रशंसक बन जाते थे। अटल जी ने एक बार कहा था कि प्रकाशवीर जी उनसे भी बेहतर वक्ता थे। संस्कृत के विद्वान शास्त्री जी का निधन 23 नवम्बर 1977 को उत्तर प्रदेश में हो गया।

शिव मंगल सिंह सुमन

(पुण्यतिथि 27 नवम्बर)

डा. शिवमंगल सिंह सुमन का जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में 5 अगस्त सन् 1915 को हुआ था। ग्वालियर के विक्टोरिया कालेज से बीए और बीएचयू से एमए, डी लिट की उपाधियाँ प्राप्त कर उज्जैन और ग्वालियर में अध्यापन कार्य किया। हिन्दी के शीर्ष कवियों में एक शिवमंगल जी का कार्य क्षेत्र शिक्षा ही रहा। उनके जीवन का एक विश्वमयकारी क्षण वह था जब-जब उन्हें कुछ लोगों ने आँख पर पट्टी बांधकर उठा लिया, आँख खुली तो उनके सामने चन्द्रशेखर आजाद खड़े थे। आजाद ने उनसे

पूछा क्या एक रिवाल्वर दिल्ली ले जा सकते हैं उन्होंने बेहिचक स्वीकार कर लिया। उन पर आजादी के दिवानों के साथ काम करने का आरोप लगा और वारंट भी जारी हुआ। जिस पर उन्हें जरा भी खेद नहीं हुआ। हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य विद्वान शिवमंगल जी की अनेक अमर रचनाएं आज भी लगन से पढ़ी जाती हैं। काव्य संग्रह, गद्य रचनाएं और नाटक जिसमें हिल्लोल, जीवन के गान, विंध्य हिमालय, वाणी की व्यथा, मिट्टी की बारात, महादेवी की काव्य साधना, प्रकृति पुरुष कालीदास आदि प्रमुख हैं। उनको 1974 में मिट्टी की बारात के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1993 में भारत भारती पुरस्कार, 1974 में पद्मश्री से नवाजा गया। 1958 में देवा पुरस्कार, 1974 में सोवियत लैण्ड नेहरु पुरस्कार, 1993 में मध्य प्रदेश का शिखर सम्मान और 1999 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। अपने काव्य से देशभर को अचंभित कर देने वाले शिवमंगल सिंह सुमन जी का 27 नवम्बर 2002 को निधन हो गया। अपने कृतियों से वे आज भी अमर हैं।

शंकर शेष

(पुण्यतिथि 28 नवम्बर)

शंकर शेष का जन्म 2 अक्टूबर 1933 को विलासपुर छत्तीसगढ़ में हुआ था। कुशाग्र बुद्धि के शेष जी विलासपुर से इण्टर और नागपुर से हिन्दी में बीए की डिग्री ली। आकाशवाणी और कविता तथा वार्ता के माध्यम से उनमें कविता का जन्म होने लगा। शिक्षण में जुड़े रहे शेष जी भारतीय स्टेट बैंक मुंबई में राजभाषा विभाग में नियुक्त हुए। शंकर शेष युग चेतना के कलाकार कहे गये। उनकी रचनाओं में सामाजिक असंगतियों का खुला चित्रण हुआ है। रत्नगर्भ, रक्तबीज, बाढ़ का पानी, पोस्टर, चेहरे, राक्षस, मूर्तिकार, घरौंदा जैसे नाटक सामाजिक यथार्थ का चित्रण करने वाली रचनाएं हैं। हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी भाषा में उनकी पकड़ गहरी थी। इस प्रकार कुशल प्रशासक, सफल नाटककार, कवि एवं कथाकार के आयाम शेष जी के व्यक्तित्व के पहलू थे। शंकर शेष जी को गुट निर्पेक्ष लेखक के रुप में याद किया जाता है। मात्र 48 वर्ष की आयु में 28 नवम्बर 1981 को उनका निधन हो गया जो परिवार, बैंक, सहृदय और लेखन क्षेत्र की अपूरणीय क्षति थी। ●

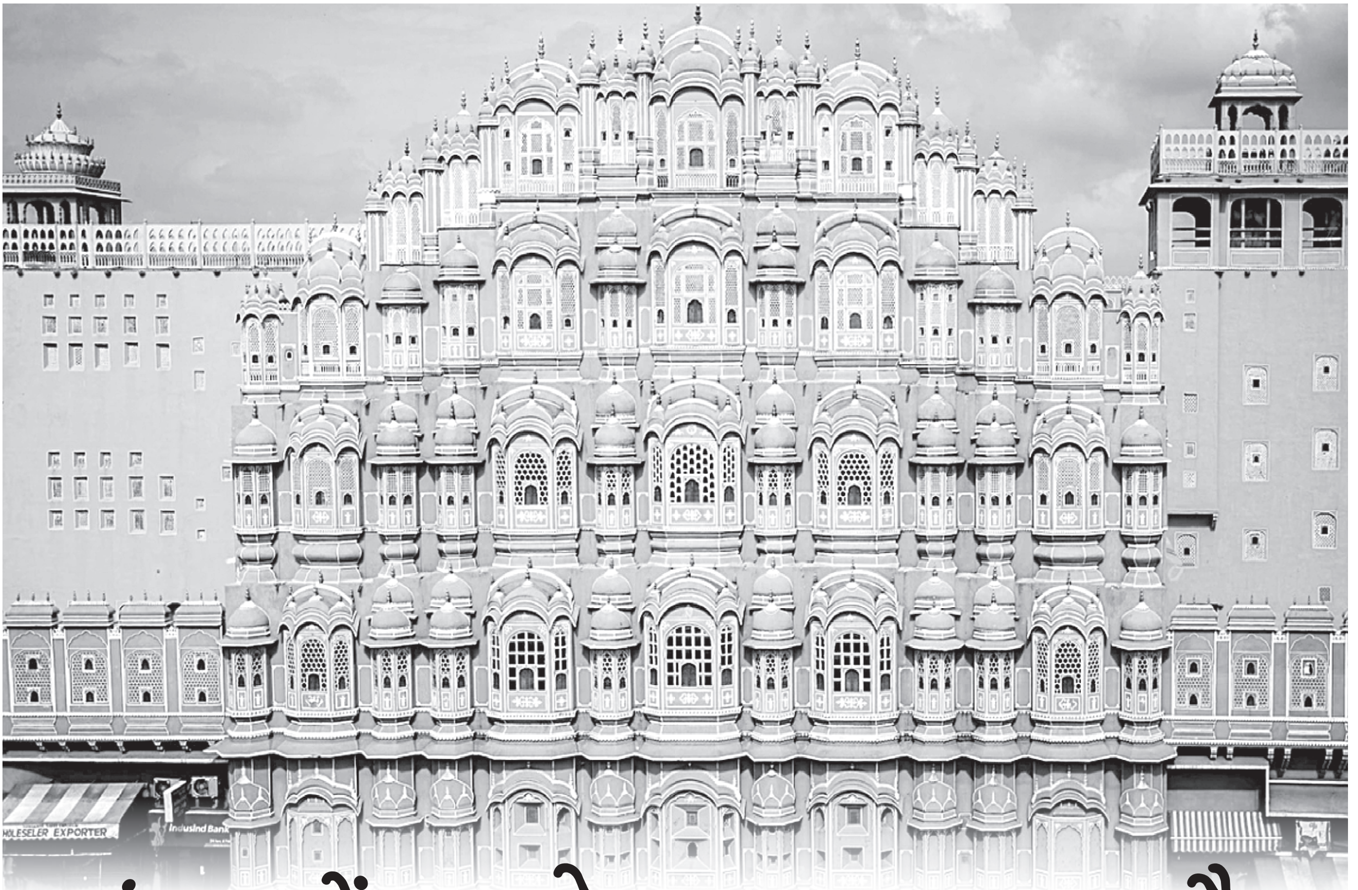

नवंबर में घूमने का शानदार मौका

नवंबर महीना घूमने के लिहाज से सबसे बढ़िया होता है न ज्यादा गर्मी और ज्यादा ही ठंड होती है। हाल ही में भारतीय रेलवे ने टूर पैकेज जारी किया है। आप अपने छुट्टी लेकर नवंबर में घूमने का प्लान बनाएं। इस पैकेज जरिए आप प्रसिद्ध तीर्थ स्थल और पर्यटन स्थलों पर घूमने जा सकते हैं। रेलवे के इस पैकेज ने परिवार, दोस्तों और पार्टनर के साथ घूमने का ऑफर खास मिल रहा है। आप अपने बजट के अनुसार किसी भी पैकेज को बुक कर सकते हैं। आइए आपको इस बारे में जानकारी देते हैं।

अजमेर, जयपुर, पुष्कर और उदयपुर टूर पैकेज

- आपको बता दें कि, इस पैकेज की शुरुआत 1 नवंबर से जयपुर से हो रही है।

- इस पैकेज में आपको 4 जगहों पर घूमने का मौका मिलेगा।

- भारतीय रेलवे का यह टूर पैकेज 4 रात और 5 दिनों का है।

- पैकेज में आपको ट्रेन से यात्रा करवाई जाएगी और घूमने के लिए कैब की सुविधा मिलेगी।

- इस पैकेज का नाम अजमेर, जयपुर, पुष्कर और उदयपुर है। आप गूगल पर इस पैकेज का नाम सर्च करके सारी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

क्या कीमत है पैकेज की

- अगर आप अकेले यात्रा कर रहे हैं, तो यह पैकेज आपको 16,610 रुपये प्रति व्यक्ति है।

- यदि आप 2 लोगों के साथ यात्रा कर रहे हैं, तो व्यक्ति पैकेज फीस 11,680 रुपये है।

- 3 लोगों के साथ यात्रा करने पर टूर पैकेज की फीस 10,910 रुपये है।

- बच्चों के लिए पैकेज फीस 9,120 रुपये।

क्या-क्या सुविधाएं मिलेंगी

- इस टूर पैकेज की बात करें तो कैब में दर्शनीय स्थलों की सैर करवाई जाएगी।

- इस पैकेज में केवल 4 दिन का नाश्ता मिलेगा।

- होटल में एसी मिलेगा। होटल रुम में अलग से कोई सुविधा लेने पर चार्ज देना पड़ेगा।

- किसी भी टूरिस्ट प्लेस पर घूमने पर कैमरा यूज करने पर आपको अलग से चार्ज देना होगा।

दही-चीनी से पाएं ग्लोइंग स्किन व शाइनी बाल

दही को आयुर्वेद और न्यूट्रिशन साइंस दोनों में सुपरफूड माना गया है। इसमें कई पोषक तत्व होते हैं जो आपकी त्वचा और बालों की सेहत सुधारने में मदद करते हैं। और जब इसमें थोड़ी सी चीनी मिलाते हैं, तो यह शरीर को तुरंत एनर्जी देती है, जिससे आप फ्रेश और रिफ्रेश महसूस करते हैं।

दही-चीनी कैसे मदद करता है ग्लोइंग स्किन में?

अंदर से सफाईः दही में मौजूद प्रोबायोटिक्स आंतों की सफाई करते हैं। हेल्दी डाइजेशन का सीधा असर आपकी स्किन पर होता है।

स्किन सेल्स को पोषणः दही-चीनी में प्रोटीन और कैल्शियम स्किन सेल्स को मजबूत बनाते हैं और डलनेस को दूर करते हैं।

हाइड्रेशन में मददः यह आपके शरीर में पानी की कमी नहीं होने देता, जिससे स्किन मॉइस्चराइज्ड और निखरी हुई रहती है।

शाइनी बालों के लिए दही-चीनी

बालों की जड़ों को पोषणः दही-चीनी में मौजूद प्रोटीन और विटामिन बालों को अंदर से मजबूत बनाते हैं।

स्कैल्प हेल्थ सुधारता हैः दही में प्राकृतिक एंटी-बैक्टीरियल गुण होते हैं जो डैंड्रफ कम करते हैं और स्कैल्प को हेल्दी रखते हैं।

बालों में नेचुरल शाइनः सही पोषण मिलने पर बालों में प्राकृतिक ऑयल संतुलन बना रहता है, जिससे बाल चमकदार दिखते हैं।

किन लोगों को दही-चीनी नहीं खाना चाहिए

डायबिटीज (मधुमेह) के मरीजः चीनी ब्लड शुगर को बढ़ा सकती है। डायबिटीज के मरीजों को दही-चीनी खाने से परहेज करना चाहिए या डॉक्टर की सलाह से ही खाएं।

जिन्हें बार-बार सर्दी-जुकाम होता हैः दही शरीर को ठंडा करती है। अगर आपको ठंड लगने, खांसी या गले में खराश की समस्या रहती है, तो दही-चीनी से बचें, खासकर रात में।

एलर्जी या लैक्टोज इन्टॉलरेंस वाले लोगः अगर दही खाने से पेट फूलता है, गैस बनती है या ऐलर्जिक रिएक्शन होता है, तो इसे बिल्कुल न खाएं।

वजन घटाने की कोशिश कर रहे लोगः चीनी कैलोरी बढ़ाती है। अगर आप वेट लॉस डाइट पर हैं, तो दही में चीनी की जगह शहद या फल मिलाकर खा सकते हैं।

पेट की सूजन या इंफेक्शन वाले लोगः पाचन गड़बड़ हो या पेट में संक्रमण हो, तो कुछ दिनों तक दही-चीनी से परहेज करें।

रात में खाने वाले लोगः रात में दही-चीनी खाने से पाचन पर असर पड़ सकता है और बलगम बढ़ सकता है। इसे दिन में या दोपहर में लेना बेहतर है।

दही-चीनी खाने के टिप्स

- रोज़ाना एक कटोरी दही में 1-2 चम्मच चीनी मिलाकर खाएं।
- रात में दही-चीनी न खाएं, क्योंकि इससे पाचन दिक्कत हो सकती है।
- बहुत ज्यादा चीनी न डालें, खासकर यदि आप डायबिटीज के मरीज हैं या वजन घटा रहे हैं।
- ठंडी दही सीधे फ्रिज से न खाएं, इससे गले में खराश हो सकती है।
- दही-चीनी एक सरल और स्वादिष्ट तरीका है स्किन और बालों की सेहत सुधारने का। सही मात्रा में खाने से चेहरे पर नैचरल ग्लो और बालों में शाइन दोनों मिलते हैं। ●

नवंबर महीने में सब्जी उगाने वाले किसान इन बातों का रखें ध्यान

सब्जी हर घर में हर रोज की जरूरत होती है। हमारे यहां सब्जियों का मिजाज ये है कि हर शाम सबसे अधिक भीड़ सब्जी मंडी में ही होती है। बाजार से सब्जियां खरीदने की बजाय खेतों और गमलों में सब्जियां उगाना भी लोगों का खास शौक हो गया है। बंपर डिमांड होने के चलते इसकी खेती भी किसानों के लिए फायदेमंद है। अगर आप नवंबर महीने में सब्जी की खेती करना चाहते हैं तो 3 जरूरी बातों का ध्यान रखना होगा। आइए आसान भाषा में समझ लेते हैं।

मिट्टी की तैयारी

खेती करने के लिए खेत की अच्छी तैयारी करना बहुत जरूरी है। आपको बता दें कि फसल रोपने से पहले मिट्टी को अच्छी भुरभुरी बनाना बहुत जरूरी है। इसके बाद सड़े हुए गोबर की खाद डालें। 10 क्विंटल प्रति एकड़ के हिसाब से खाद डालकर पाटा चला दें। इन दिनों आलू, गाजर, मूली, चुकंदर, गोभी और टमाटर खास सब्जियां हैं जिसे उगाने के लिए क्यारियां बनाना जरूरी है।

सिंचाई और तापमान नियंत्रण

नवंबर की बात हो रही है तो किसान अच्छी तरह से जानते हैं कि इन दिनों हल्की सर्दी शुरू हो जाती है। नवंबर के दिनों में तापमान भी कम होने लगता है, इसलिए जलभराव ना होने दें इससे पौधों की जड़ें कमजोर होती हैं। नवंबर के दिनों में ऐसी जगह पर सब्जियां उगाएं जहां पर लगातार धूप आती रहे। इन दिनों सिंचाई करने के लिए भी ड्रिप इरिगेशन तकनीक अपनाएं ताकि जरूरत से ज्यादा पानी ना बहे और जल संरक्षण भी हो।

फसल की देखभाल

सब्जियों को अच्छी तरह से तैयार करने के लिए उनकी बेहतर देखभाल भी बहुत जरूरी है। जैसा कि आप सब जानते हैं कि फसल तैयार करने के लिए खाद पानी की जरूरत होती है। पहली बार बुवाई से पहले ही मिट्टी में खाद मिला दी जाती है। इसके बाद आपको पौधों में नाइट्रोजन और पोटाश देने के लिए रासायनिक खाद एक बार देनी होगी। अगर आप रासायनिक खाद की बजाय ऑर्गेनिक तरीके से सब्जियां उगाते हैं तो और भी फायदेमंद है, और उनकी कीमत भी अच्छी होती है। आइए जान लेते हैं कि देखभाल कैसे की जाती है।

- शुरुआत में हफ्ते में 4-5 बार सिंचाई करें ताकि नमी कम ना होने पाए।
- एक महीने के बाद खेत की निराई करना जरूरी है, खरपतवार साफ होने से पौधे तेजी से बढ़ते हैं।
- 45 दिनों में 3-4 क्विंटल प्रति एकड़ वर्मी खाद का छिड़काव करें।
- खाद देने से फूल अधिक बनेंगे और फल तेजी से बढ़ते हैं।
- 30-35 दिनों में एक बार ऑर्गेनिक कीटनाशक भी दें ताकि सुरक्षा हो सके।
- 60 दिनों बाद ज्यादातर सब्जियां तैयार होने लगती हैं, पकने पर तुड़ाई या खुदाई करें। ●

सर्दियों में लगाएं सदाबहार का पौधा

सर्दियों में इन पौधों की विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है। मिट्टी को पोषक तत्वों से भरपूर रखना और उचित पानी देना जरूरी है। इसके अलावा, धूप और हल्की छाया का संतुलन बनाए रखना भी महत्वपूर्ण है। समय-समय पर फूलों और पत्तियों की छंटाई करने से नए फूल जल्दी आते हैं और पौधा स्वस्थ रहता है।

बागवानी प्रेमियों के लिए सदाबहार का पौधा लगाने का अब सही समय आ चुका है। इस पौधे को कैथरैन्थस रोसियस के नाम से भी जानते हैं और यह एक खूबसूरत पौधा लगता है। इसकी खूबसूरत फूलों वाली प्रजातियां जैसे एलबस और और ओसेलाटस छोटे-बड़े गार्डन, बालकनी और फूलों की क्यारी में जीवन और रंग भर देती हैं। ये पौधे न केवल देखने में आकर्षक हैं, बल्कि इनकी देखभाल भी अपेक्षाकृत आसान है।

कैथरैन्थस रोसियस एल्बस

एलबस प्रजाति सफेद फूलों के लिए जानी जाती है। इसके फूल पूरी तरह से सफेद होते हैं और लंबे समय तक खिलते रहते हैं। यह पौधा लगभग 30-40 सेंटीमीटर ऊंचा होता है और इसकी हरी पत्तियां फूलों के रंग को और भी उजागर करती हैं। एलबस प्रजाति की खूबसूरती इसकी शांति और सादगी में और निखरती है। यह छोटे गार्डन, घर की बालकनी और फ्लावर पॉट्स में लगाने के लिए बेस्ट है।

इस पौधे की देखभाल बहुत आसान है। इसे पूरी या हल्की धूप पसंद है और मिट्टी में उचित नमी बनाए रखना जरूरी है। हफ्ते में दो-तीन बार हल्का पानी देना काफी है। यह पौधा गर्मियों और सर्दियों दोनों ही मौसम में अच्छा खिलता है। फूल ज्यादा दिन तक खिले रहते हैं और सफेद रंग इसे बाकी अन्य रंगीन पौधों के साथ मिक्स करके रखने में बेहद अट्रैक्टिव बनाता है।

कैथरैन्थस रोसियस ओसेलाटस

ओसेलाटस प्रजाति अपनी रंग-बिरंगी, आंख जैसे पैटर्न वाले फूलों के लिए मशहूर है। इन फूलों के बीचों-बीच गहरे रंग का केंद्र होता है, जो इसे बेहद आकर्षक बनाता है। ओसेलाटस का साइज करीब 30 से 35 सेंटीमीटर होता है और यह कम समय में धरती पर फैलकर गार्डन में एक रंगीन चादर की तरह दिखाई देता है। ओसेलाटस को अच्छी रोशनी और हल्की जल निकासी वाली मिट्टी की जरूरत होती है। इसे नियमित रूप से पानी देना चाहिए लेकिन ध्यान रखें कि इसकी जड़ें कहीं ज्यादा भीग न जाएं। इस प्रजाति को समय-समय पर खाद और टॉप ड्रेसिंग देना चाहिए ताकि फूल अधिक समय तक खिलते रहें।

देखभाल और टिकाऊपन

सर्दियों में इन पौधों की विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है। मिट्टी को पोषक तत्वों से भरपूर रखना और उचित पानी देना जरूरी है। इसके अलावा, धूप और हल्की छाया का संतुलन बनाए रखना भी महत्वपूर्ण है। समय-समय पर फूलों और पत्तियों की छंटाई करने से नए फूल जल्दी आते हैं और पौधा स्वस्थ रहता है।

बागवानी में उपयोग और सजावट

एलबस और ओसेलाटस दोनों प्रजातियां एक साथ लगाने पर गार्डन और फूलों की क्यारी में शानदार कलर कॉम्बिनेशन बनाती हैं। सफेद और रंग-बिरंगे फूलों का मिश्रण न केवल आंखों को भाता है, बल्कि बगीचे में हरियाली और ताजगी भी बनाए रखता है। ये पौधे छोटे पैकेट में भी आसानी से लगाए जा सकते हैं, जिससे बालकनी और छत के बगीचों के लिए यह आदर्श विकल्प बन जाते हैं।

कारगर जड़ी-बूटी भी है पौधा

यह एक बारहमासी जड़ी-बूटी है और ब्रांचिंग और इरेक्शन हर्ब के तौर पर भी जानी जाती है। पौधे में चमकदार पत्तियां होती हैं जिनका आकार अंडाकार से लेकर आयताकार होता है। पत्तियां उल्टी तरह से लगी होती हैं, जिनमें हल्की मिडरिब और छोटी पेटियोल होती है। इनके फूलों में मुख्य तौर पर पांच पंखुड़ियां होती हैं जिनके बीच में हल्की गुलाबी या बैंगनी आंख होती है। यह फूलल्यूकेमिया, लिम्फोमा और बचपन के कैंसर समेत कुछ और प्रकार के कैंसर वाली और नॉन-कैंसर वाली बीमारियों को भी ठीक करने के काम आता है। यह असल में मेडागास्कर से आता है और पूरे भारत में उगाया जाता है। ●

देवउठनी एकादशी से शुरू होगा परिणय सूत्र बंधन का सीजन

हिंदू पंचांग के अनुसार, वर्ष 2025 में देवउठनी एकादशी का पर्व 1 नवंबर 2025, शनिवार को मनाया जाएगा। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, यह दिन अत्यंत पवित्र और शुभ माना जाता है क्योंकि इसी दिन भगवान विष्णु चार महीनों की योगनिद्रा से जागते हैं। इस अवधि को 'चातुर्मास' कहा जाता है, जिसमें विवाह, गृहप्रवेश और अन्य मांगलिक कार्य वर्जित माने जाते हैं। जैसे ही देवउठनी एकादशी आती है, वैसे ही शुभ कार्यों का पुनः शुभारंभ हो जाता है। देवउठनी के साथ ही शादी-ब्याह के सीजन की शुरुआत मानी जाती है। इस दिन से ही विवाह संस्कार के लिए मांगलिक मुहूर्तों की शुरुआत होती है और देशभर में घरों में शुभ कार्यों का वातावरण बनता है। नवंबर 2025 में विवाह के लिए शुभ तिथियां

नवंबर का महीना विवाह संस्कार के लिए अत्यंत मंगलकारी रहेगा। इस महीने में ग्रहों और नक्षत्रों की स्थिति विवाह के लिए अनुकूल रहेगी। ज्योतिषीय मान्यताओं के अनुसार, नीचे दी गई तिथियों पर विवाह संपन्न कराना शुभ फलदायी रहेगा।

दिसंबर 2025 में विवाह के मुहूर्त सीमित रहेंगे। इसका प्रमुख कारण है – सूर्य का धनु राशि में गोचर, जिससे खरमास की शुरुआत होती है। इस काल में सूर्य की ऊर्जा और प्रभाव कम माना जाता है, और शास्त्रों में इस अवधि में विवाह जैसे मांगलिक कार्यों को वर्जित बताया गया है।

शुभ विवाह तिथियां

2 नवंबर, 3 नवंबर, 5 नवंबर, 8 नवंबर, 12 नवंबर, 13 नवंबर, 16 नवंबर, 17 नवंबर, 18 नवंबर, 21 नवंबर, 22 नवंबर, 23 नवंबर, 25 नवंबर और 30 नवंबर। 4 दिसंबर 5 दिसंबर और 6 दिसंबर।

इस कारण 15 दिसंबर 2025 के बाद विवाह करना शुभ नहीं माना जाता। अतः 15 दिसंबर से पहले की तिथियों में विवाह करना श्रेष्ठ रहेगा।

इन तीनों तिथियों में ग्रह-नक्षत्र अनुकूल रहेंगे और विवाह समारोह संपन्न करने से वैवाहिक जीवन में सुख और स्थायित्व की प्राप्ति होगी।

देवउठनी एकादशी का धार्मिक महत्व

देवउठनी एकादशी का पर्व भगवान विष्णु को समर्पित है। मान्यता है कि इस दिन भगवान विष्णु क्षीरसागर में चार महीनों की योगनिद्रा से जागते हैं। इस अवसर पर व्रत-पूजन करने और तुलसी विवाह करने का विशेष महत्व है। इसी दिन से पूरे भारत में विवाह, गृहप्रवेश, नामकरण और मुंडन जैसे शुभ कार्य प्रारंभ होते हैं।

विवाह मुहूर्त का ज्योतिषीय आधार

विवाह के लिए मुहूर्त तय करने में पंचांग, ग्रह स्थिति, नक्षत्र, लग्न और चंद्र की दशा का विशेष ध्यान रखा जाता है। ऐसा माना जाता है कि यदि विवाह शुभ मुहूर्त में संपन्न किया जाए तो दांपत्य जीवन में स्थायित्व, प्रेम और सौभाग्य की वृद्धि होती है।

नवम्बर मास का राशिफल

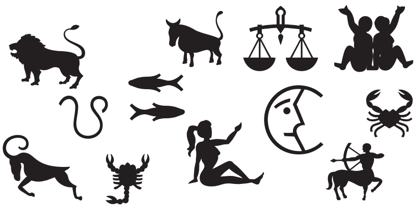

पं0 राम कृपाल शुक्ल

धर्मशास्त्राचार्य, पुराणेतिहासाचार्य एवं कर्मकाण्ड कोविद

मो. 9415820597

मेष- आपके लिए यह माह सामान्य है। नवीन गतिविधियों का संचालन कर सकते हैं। नये कार्य व्यापार चला सकते हैं। भ्रमण, मनोरंजन, आमोद प्रमोद में भी समय व्यतीत करेंगे। इच्छित समाचार की प्राप्ति से मन प्रसन्न रहेगा। उत्तम साथ मिलेगा और पठन-पाठन करने वालों का समय ठीक बीतेगा। उद्योग-धंधों में सफलता मिलेगी। दिनांक 6, 13, 23, 30 नेष्ट हैं।

वृषभ- आपका यह माह मध्यम हैं कुटुम्बियों और मित्रों के साथ वाद-विवाद हो सकता है। किसी न किसी रुप में चिन्ता रहेगी और व्यापार में उधारी को उगाहने को लेकर संकट हो सकता है। अकारण धन की क्षति होगी। रोग, व्याधि से भी घिर सकते हैं। अर्थाभाव परेशान करेगा। सबके बावजूद विरोधी परास्त होंगे और घरेलू सुख बढ़ेगा। दिनांक 4, 15, 25, 31 नेष्ट हैं।

मिथुन- आपका यह माह मध्यम है। आत्मबल क्षीण प्रतीत होगा। घरेलू जीवन में व्यस्तता बढ़ेगी। आर्थिक तनाव बना रहेगा। मित्रों से उपेक्षा मिल सकती है। आप अपने में भी अकर्मठता का अनुभव करेंगे। चित्त भ्रमित रहेगा। ठोस निर्णय नहीं ले सकेंगे। पड़ोसियों से मतभेद उभरेंगे। संघर्ष से सफलता मिलेगी। दिनांक 2, 9, 19, 30 नेष्ट हैं।

कर्क- आपका यह माह मध्यम है। सम्बन्धियों से कलह सम्भव है। विशेष व्ययय का योग है। हानि कई तरह से घेर सकती है। शौर्य काम न आएगा। धैर्य की परीक्षा होगी। मानसिक तनाव बना रहेगा। दिनचर्या अव्यवस्थित रहेगी। पत्नी का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। उत्साह भंग रहेगा। नया काम शुरु न करें। रुद्राभिषेक करा लेने से स्थितियाँ नियंत्रित रहेंगी। दिनांक 3, 11, 20, 22 नेष्ट हैं।

सिंह- यह माह आपके लिए सामान्य है। स्वजन विरोध का सामान करना पड़ सकताा हैं मानसिक अशांति बने रहने का योग है। आर्थिक कष्ट का सामना करना पड़ेगा। शिर, नेत्र और पेट की पीड़ा हो सकती है, सावधानी रखें। बार-बार क्रोध आएगा और झुंझलाहट रहेगी। माह का उत्तर भाग ठीक है। धैर्य ही सफलता की कुंजी है। आत्मचिंतन से लाभ होगा। दिनांक 6, 14, 25, 26 नेष्ट हैं।

कन्या- यह माह आपके लिए अच्छा है। हर तरफ से लाभ और आनन्द का योग है। संचित धन का सदुपयोग करेंगे। नये वस्त्रादि के प्रति रुचि रहेगी। गोष्ठियों और उत्सवों में समय व्यतीत होगा। बिगड़ते काम आत्म प्रयास से बन जाएँगे। पारिवारिक स्थिति पर ध्यान देना होगा। आर्थिक समृद्धि बढ़ेगी। खर्च पर नियंत्रण रखना होगा। दिनांक 4, 14, 22, 23 नेष्ट हैं।

तुला- यह माह आपके लिए अच्छा है। भौतिक सम्पन्नता में वृद्धि होगी। उद्योग व्यापार में लाभ होगा। कार्य व्यस्तता बढ़ेगी लेकिन इससे प्रसन्नता रहेगी। उत्साह बना रहेगा। राजकीय पक्ष से सहयोग मिलेगा। शत्रु पराजित होंगे। मित्र सहयोगी बनेंगे। नये सम्पर्क से सावधान रहना होगा। यात्रा से बचना चाहिए। बिगड़े काम बनेंगे। मानसिक तनाव हो सकता है। दिनांक 4, 9, 22, 24 नेष्ट हैं।

वृश्चिक- यह माह आपके लिए अच्छा है। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। प्रभावशाली जीवन व्यतीत करेंगे। कार्यक्षेत्र की उठापटक कम होगी। प्रभावशाली व्यक्तियों से सहयोग मिलेगा। मनोनुकूल वातावरण रहेगा। गृहकार्य करेंगे और सभी उत्तरदायित्वों की पूर्ति होगी। शत्रु पराजित होंगे। मित्र साथ देंगे। आय-व्यय में संतुलन रखें। विवादों को सुलझाएंगे। दिनांक 1, 10, 19, 27 नेष्ट हैं।

धनु- यह माह आपके लिए सामान्य है। कार्य की सफलता के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। वरिष्ठ जनों से समझ बूझकर काम करें। बदली हुई परिस्थितियों में आपकी व्यस्तता बढ़ेगी। दाम्पत्य सुख में कमी आ सकती है। निराशा से ग्रसित होने का योग। शेयर में धन लगाने से मिश्रित फल मिलेगा। दिनांक 2, 8, 20, 29 नेष्ट हैं।

मकर- यह माह आपके लिए अच्छा नहीं है। हर क्षेत्र में सावधानी बरतनी पड़ेगी। दिनचर्या अस्त-व्यस्त रहेगी। रोग बाधा से ग्रस्त हो सकते हैं। कार्य क्षेत्र में विशेष व्यवधान आएंगे। मानसिक परेशानी रहेगी। घर में संकट बने रहेंगे। माह में उत्तरार्ध में समस्याएँ सुलझेंगी। साहस और पुरुषार्थ काम आएगा। कार्य व्यस्तता का लाभ मिलेगा। इष्ट मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। दिनांक 6, 16, 24, 25 नेष्ट हैं।

कुम्भ- यह माह आपके लिए मिश्रित फलदायी है। प्रियजनों से सहयोग लेते रहें, लाभ होगा। सेवा कर्मियों को उच्चाधिकारियों से उपेक्षा मिल सकती है और अधीनस्थों से विवाद हो सकता है। व्यापारीगण अस्थिर रहेंगे। सभी को धन और प्रतिष्ठा के लिए कठिन संधर्ष करना पड़ेगा। दिनांक 2, 4, 8, 10 नेष्ट हैं।

मीन- आपका यह माह शुभ है। माह का उत्तरार्ध मिश्रित फलदायी है। घर में मांगलिक कार्य होंगे। सभी इष्ट मित्रों की सहानुभूति का लाभ मिलेगा। चिर-परिचित सद्भाव व्यक्त करेंगे और सहयोगी होंगे। कठिन से कठिन काम बनेंगे। नए कार्य व्यापार शुरु कर सकते हैं। समय अच्छा है, भाग्य वृद्धि होगी। गुप्त लाभ का योग है। दिनांक 7, 16, 25, 26 नेष्ट हैं।।

वैज्ञानिकों ने जारी किया 'महाठंड' अलर्ट

इस बार की सर्दी को लेकर अभी से वैज्ञानिक चेतावनी जारी करने में लगे हैं। ला नीना इफेक्ट की वजह से इस बार के मानसून में भारी बारिश देखने को मिली है। एक्सपर्ट के अनुसार, अगर यह इफेक्ट जारी रहता है, तो उत्तर भारत में इस बार भयंकर ठंड हो सकती है। इसके अलावा इंफेक्शन और पॉल्यूशन आदि का भी खतरा लोगों पर मंडरा सकता है। अधिक सर्दी और प्रदूषण होने के कारण लोगों को इंफेक्शन, फ्लू, बुखार, खांसी, ठंड लगना और अपर रेस्पिरेटरी इंफेक्शन आदि हो सकता है। खासकर छोटे बच्चों और बुजुर्गों की सेहत ज्यादा बिगड़ सकती है। क्योंकि बच्चों और बुजुर्गों का इम्यून सिस्टम काफी कमजोर होता है। ऐसे में आप भी पंसारी से 4 चीजें लाकर घर में रखें और सर्दियां पड़ने पर इनका इस्तेमाल करें।

पीपली पाउडर- एक्सपर्ट के अनुसार, सर्दियों में पीपली का सेवन जरूर करना चाबिए। रोजाना इसका पाउडर कुछ चुटकी लेकर शहद के साथ खाना चाहिए। इसकी तासीर गर्म होती है, जोकि आपको सर्दी-खांसी से बचाने का काम करती है। यह पेट में अग्नि बढ़ाती है, जोकि ठंड में आमतौर पर काफी कम होती है।

मुलेठी- ठंड लगने की वजह से गले में सूजन, खराबी और दर्द की शिकायत हो सकती है। इसके लिए मुलेठी या फिर इसके पाउडर का सेवन करना चाहिए। इससे न सिर्फ गले में आराम मिलेगा, बल्कि खांसी और अपर रेस्पिरेटरी सिस्टम भी सही रहेगा।

सोंठ- अदरक को सुखाकर बनाए जाने वाले पाउडर को सोंठ कहा जाता है। सोंठ अदरक के मुकाबले ज्यादा गर्म होता है। इस कारण सर्दियों में सोंठ का सेवन किया जाता

है। फ्लू, बुखार और कमजोर पाचन से यह बचाता है। इसमें एंटी इंफ्लामेटरी, एंटी बैक्टीरियल और एंटी माइक्रोबियल गुण पाए जाते हैं।

गुड़- हेल्थ एक्सपर्ट के मुताबिक ठंड के मौसम में गुड़ का सेवन जरूर करना चाहिए। क्योंकि इस दौरान प्रदूषण बढ़ने से फेफड़ों को नुकसान पहुंचता है। रात में थोड़ा सा गुड़ खाने से सांस नली और मुंह में अटके प्रदूषण कण से राहत मिलती है। हालांकि डायबिटीज के रोगियों को गुड़ का सेवन डॉक्टर की सलाह पर करना चाहिए।

इन मसालों का इस्तेमाल करें

बता दें कि ऊपर बताई गई चीजों के अलावा खाने में मसालों का इस्तेमाल जरूर करें। अदरक, हल्दी, दालचीनी और कालीमिर्च का सेवन आपके रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और आपको बीमार पड़ने से बचाता है। रोजाना नीम और तुलसी की पत्तियां चबाकर जरूर खाना चाहिए। ●

सर्दियों में हाथ-पैर होते हैं सुन्न तो करें चमत्कारी देसी इलाज

ठंड का मौसम दस्तक दे रहा है। अब मौसम में भी काफी बदलाव देखने को मिल रहा है। हल्की ठंड की शुरुआत भी हो चुकी है। ठंड बढ़ने से हाथ, पैर और त्वचा की नसें सिकुड़ने लगती हैं। ब्लड फ्लो भी धीमा हो जाता है। इसके साथ ही ब्लड प्रेशर बढ़ने लगता है। इस दौरान दिल ज्यादा मेहनत करने लगता है। ठंड के मौसम में लोग फिजिकल एक्टिविटी भी कम करते हैं और धूप भी सही से नहीं मिल पाती है जिससे विटामिन डी भी घटता है। जिससे खून की नसों पर प्रभाव पड़ता है। इस मौसम में ठंड की वजह से हाथ-पैरों में झनझनाहट, सुन्नपन्न, सूजन, पैरों में दर्द, बेचैनी, खून का बहाव कम होना, घाव भरने में देर लगना। नसों को स्वस्थ और मजबूत रखने के लिए अपनी डाइट में कुछ चीजों को जरुर शामिल करें।

खट्टे फल- ठंड के मौसम में सिट्रस फ्रूट्स खाना काफी हेल्दी होता है। इस मौसम में आप मौसमी, संतरा, नींबू और कीवी जैसे फलों का सेवन करना चाहिए। इन खट्टे फलों में विटामिन-सी और एंटीऑक्सीडेंट्स भरपूर मात्रा में पाएं जाते हैं। यह खून की नसों को मजबूत बनाते हैं।

ड्राई फ्रूट्स का सेवन करें- हेल्थ एक्सपर्ट के मुताबिक, सर्दियों में ड्राई फ्रूट्स का सेवन करें। आप अखरोट और बादाम नियमित रुप से खाने चाहिए। इनमें हेल्दी फैट्स और पोषक तत्व पाए जाते हैं। यह नसों के लिए फायदेमंद होते हैं।

हरी सब्जियां खाएं- इस मौसम में हरी सब्जियां बाजारों में मिलने लगी है। ऐसे में आप पालक, मेथी, धनिया और बथुआ का सेवन करें। इनमें एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर होती हैं। इसके सेवन से नसों की सेहत सुधारने में मदद मिलती है और खून का दौरा बढ़ाती है। ●

20.5 करोड़ की लागत से बनेगा आधुनिक आर्चरी सेंटर

जशपुर में तीरंदाजी अकादमी स्थापित करने हेतु एनटीपीसी के साथ हुआ एग्रीमेंट

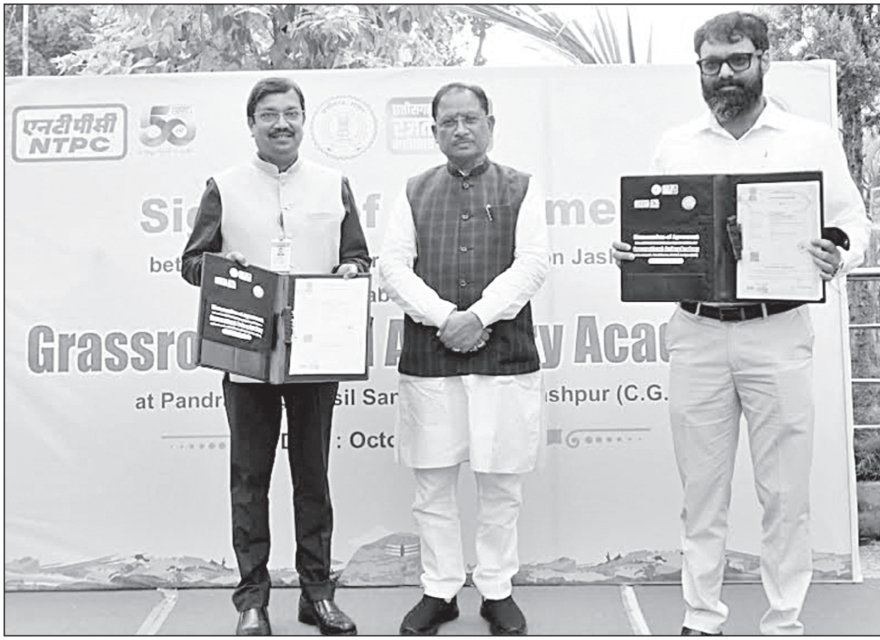

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की उपस्थिति में जशपुर जिले के बगिया स्थित मुख्यमंत्री कैंप कार्यालय में बगीचा विकासखंड अंतर्गत सन्ना पंडरापाठ में तीरंदाजी अकादमी स्थापित करने के लिए जिला प्रशासन और एनटीपीसी के बीच एग्रीमेंट किया गया। एनटीपीसी द्वारा यह परियोजना कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व (CSR) के तहत 20 करोड़ 53 लाख रुपए की लागत से संचालित की जाएगी। इस अवसर पर कलेक्टर रोहित व्यास और एनटीपीसी के अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन) बिलाश मोहंती उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि एनटीपीसी द्वारा सीएसआर के माध्यम से आर्चरी सेंटर की स्थापना के लिए 20 करोड़ 53 लाख रुपए की राशि प्रदान की जा रही है, यह अत्यंत हर्ष का विषय है। उन्होंने कहा कि जशपुर क्षेत्र के युवाओं में तीरंदाजी के प्रति अपार संभावनाएं हैं, और इस सेंटर के आरंभ होने से उन्हें प्रशिक्षण और संसाधनों की बड़ी सुविधा प्राप्त होगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2036 में भारत ने ओलंपिक खेलों की मेज़बानी के लिए दावेदारी प्रस्तुत की है। हमारी कोशिश होगी कि छत्तीसगढ़ के खिलाड़ी राष्ट्रीय टीम में अधिकतम संख्या में शामिल हों और पदक जीतकर प्रदेश व देश का नाम रोशन करें। यह तभी संभव है जब हम आर्चरी सेंटर जैसे और प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करें। ऐसे केंद्रों के माध्यम से प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की पहचान कर उन्हें हर संभव सहायता प्रदान की जाएगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने घोषणा की है कि ओलंपिक में स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों को 3 करोड़ रुपए, रजत पदक विजेताओं को 2 करोड़ रुपए और कांस्य पदक प्राप्त करने वालों को 1 करोड़ रुपए की पुरस्कार राशि दी जाएगी।

श्री साय ने यह भी कहा कि राज्य खेल अलंकरण समारोह को पुनः आयोजित किए गए हैं और इसके माध्यम से प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को सम्मानित किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि राज्य में 'खेलो इंडिया' के नए प्रशिक्षण केंद्र आरंभ किए गए हैं और जनजातीय क्षेत्रों में खेल अधोसंरचना के विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारा देश प्राचीन काल से ही तीरंदाजी में अग्रणी रहा है। महाभारत और रामायण जैसे हमारे पवित्र ग्रंथों के नायक भी इस विधा में पारंगत रहे हैं। उसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए हमें आधुनिक तकनीक और प्रशिक्षित मार्गदर्शन के माध्यम से नए आर्चर्स तैयार करने होंगे।

उल्लेखनीय है कि सन्ना पंडरापाठ में 10.27 एकड़ भूमि में यह अकादमी स्थापित की जाएगी। यहां आउटडोर तीरंदाजी रेंज, खिलाड़ियों के लिए छात्रावास, स्टाफ क्वार्टर, खिलाड़ियों की सुविधा हेतु भवन, जैविक खेती के लिए छायादार नर्सरी, पुस्तकालय, चिकित्सा केंद्र, कौशल विकास केंद्र, हर्बल वृक्षारोपण तथा प्रशिक्षण मैदान जैसी सुविधाएं विकसित की जाएंगी।

taste™
king
Mint House, Nadesar, Varanasi

खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स राजस्थान में 24 से

पांचवें खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स राजस्थान के सात शहरों में 24 नवंबर से 5 दिसम्बर 2025 तक आयोजित होंगे। इसमें 23 मेडल स्पोर्ट्स और एक डेमोंस्ट्रेशन स्पोर्ट (खो-खो) में प्रतियोगिताएं होंगी। इसी साल कुछ समय पहले में बिहार में हुए खेलो इंडिया यूथ गेम्स की तरह, यूनिवर्सिटी गेम्स भी राजस्थान के सात शहरों जयपुर, अजमेर, उदयपुर, जोधपुर, बीकानेर, कोटा और भरतपुर में आयोजित होंगे। इस 12 दिनों के यूनिवर्सिटी आयोजन में 5,000 से अधिक एथलीटों के आने की उम्मीद है। खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स का आयोजन भारतीय विश्वविद्यालय संघ के सहयोग से किया जाता है।

केन्द्रीय युवा मामले एवं खेल मंत्री डॉ. मनसुख मंडाविया ने कहा कि 'खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स' भारत के खेल मार्ग में एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं। दुनिया भर में विश्वविद्यालय, चैंपियनों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और केआईयूजी हमारे युवा एथलीटों को राष्ट्रीय स्तर पर अपनी क्षमता दिखाने का मंच प्रदान करता है। इन खेलों का राजस्थान संस्करण भारत के विस्तृत खेल परिदृश्य को उजागर करेगा और वैश्विक स्तर पर राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने की आकांक्षा रखने वालों के लिए पहला कदम साबित होगा।

डॉ. मंडाविया ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विज़न के तहत खेलो इंडिया पहल ने भागीदारी, प्रतिभा विकास और उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करने वाला एक ठोस पारिस्थितिकी तंत्र बनाया है। राजस्थान में आयोजित होने वाले ये यूनिवर्सिटी गेम्स हजारों छात्रों को न केवल खेलों को पढ़ाई के समानांतर ही आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेंगे। साथ ही प्रतियोगिता एवं सौहार्द्र के माध्यम से 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना को मजबूत भी करेंगे।

केआईयूजी-2025 में 23 मेडल स्पोर्ट्स और एक डेमोंस्ट्रेशन श्रेणी के स्पोर्ट्स होंगे। मेडल स्पोर्ट्स में तीरंदाजी, एथलेटिक्स, बैडमिंटन, बास्केटबॉल, बॉक्सिंग, फेंसिंग, फुटबॉल, हॉकी, जूडो, कबड्डी, मल्लखंब, रग्बी, शूटिंग, तैराकी, टेबल टेनिस, टेनिस, वॉलीबॉल, वेटलिफ्टिंग, कुश्ती, योगासन, साइक्लिंग, बीच वॉलीबॉल, कैनोइंग और कयाकिंग शामिल हैं।

खो-खो एक डेमोंस्ट्रेशन इवेंट होगा। पहली बार केआईयूजी कार्यक्रम में कैनोइंग, बीच वॉलीबॉल, और कयाकिंग तथा साइक्लिंग को शामिल किया जा रहा है। पूर्वोत्तर भारत में आयोजित हुए पिछले खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स में चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी चैंपियन बनी। लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी और गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर ने क्रमशः दूसरा और तीसरा स्थान हासिल किया था।

केआईयूजी 'गौरव की दिशा में पहला कदम' : मंडाविया

खेलो इंडिया के विषय में

खेलो इंडिया योजना युवा मामले एवं खेल मंत्रालय की प्रमुख केंद्रीय क्षेत्र की योजना है। खेलो इंडिया गेम्स खेल कौशल प्रदर्शन का आधारभूत मंच हैं, जो प्रतिभा की पहचान करने और प्रतिभाशाली बच्चों को उत्कृष्टता हासिल करने हेतु एक विकास का मार्ग प्रदान करने का प्लेटफॉर्म बनते हैं। ये राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताएं ओलंपिक आंदोलन की सच्ची भावना में आयोजित की जा रही हैं, जिसमें संबंधित एनएसएफ, एसजीएफआई, एआईयू आदि जैसे विभिन्न हितधारकों को शामिल किया जाता है। इस कार्यक्रम के तहत अब तक देश भर में 20 संस्करणों का आयोजन हो चुका है, जिसमें 7 संस्करण खेलो इंडिया यूथ गेम्स (केआईव्हायजी), 4 संस्करण खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स (केआईयूजी), 5 संस्करण खेलो इंडिया विंटर गेम्स (केआईव्हीजी), 2 संस्करण खेलो इंडिया पैरा गेम्स (केआईपीजी), 1 संस्करण खेलो इंडिया बीच गेम्स (केआईबीजी), और 1 संस्करण खेलो इंडिया वाटर स्पोर्ट्स फेस्टिवल (केआईडब्ल्यूएसएफ) शामिल हैं।

ब्यूटी अवॉड्र्स में बिखेरा उर्वशी रौतेला ने जलवा

उर्वशी रौतेला ने एक बार फिर साबित कर दिया कि उन्हें ग्लोबल फैशन आइकन क्यों कहा जाता है।प्रतिष्ठित ELLE ब्यूटी अवॉर्ड्स में उन्होंने DASHA द्वारा तैयार किया गया ₹52 लाख का शानदार कस्टम परिधान पहनकर सबका ध्यान अपनी ओर खींच लिया। 'ग्लोबल सुपरस्टार गॉडेस' के नाम से मशहूर उर्वशी ने रेड कार्पेट पर ग्लैमर, आत्मविश्वास और हाई-फैशन की ऐसी झलक दिखाई जिसने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। यह आउटफिट बेहतरीन डिटेलिंग और अंतरराष्ट्रीय कुट्योर की बारीकी के साथ तैयार किया गया था, जिसने उर्वशी की आकर्षक काया को और निखारा और उनकी भव्य शख्सियत को बखूबी पूरा किया। हाथ से की गई एम्बेलिशमेंट से लेकर कुट्योर सिल्हूट तक पोशाक का हर हिस्सा लक्ज़री, कला और शाही अंदाज़ का प्रतीक था। जैसे ही वह सहज और गरिमामय अंदाज़ में समारोह में पहुँचीं, दर्शकों की नज़रें उन पर थम गईं। इस लुक को खास बनाने वाली सिर्फ इसकी कीमत नहीं थी, बल्कि जिस अंदाज़ में उर्वशी ने इसे कैरी किया–वह था असली आकर्षण। उन्होंने अपनी सिग्नेचर ग्लैम लुक के साथ मिनिमल लेकिन दमकता मेकअप, स्लीक स्टाइलिंग और गज़ब का आत्मविश्वास–पूरे रेड कार्पेट पर राज किया।

DASHA की इस लक्ज़री कृति में उर्वशी की मौजूदगी ने न सिर्फ रात के फैशन स्तर को ऊँचा उठाया बल्कि यह भी साबित कर दिया कि वह वैश्विक मंच पर सबसे अधिक सराही जाने वाली स्टाइल आइकन्स में से एक हैं।

'द ताज स्टोरी' का दमदार प्रोमो रिलीज

मशहूर अभिनेता परेश रावल की फिल्म 'द ताज स्टोरी' अपनी स्टोरी लाइन को लेकर चर्चा का विषय बन रही है। बीते दिनों फिल्म का एक और डायलॉग प्रोमो रिलीज कर दिया गया। तुषार अमरीश गोयल द्वारा लिखित और निर्देशित फिल्म 'द ताज स्टोरी' अपने नए अपडेट के साथ दर्शकों के बीच जबरदस्त चर्चा का विषय बन रही है। मंगलवार को मेकर्स ने इंस्टाग्राम पर फिल्म का प्रोमो रिलीज कर दिया, जिसमें परेश रावल का दमदार कोर्टरूम मोनोलॉग देखने को मिल रहा है। उन्होंने प्रोमो रिलीज कर कैप्शन में लिखा, 'हमारी किताबें हमें इतिहास का सिर्फ एक ही चेहरा क्यों दिखाती हैं? अब सवाल पूछने का समय आ गया है।'

UPI
UNIVERSAL
Plasto Industries
सी-216, सेक्टर-63 नोएडा, गौतम बुद्धनगर
उत्तर प्रदेश पिन-201309 मो0 - 9811191394

Quality through Technology & Innovation

D.K. Singh
Managing Director

Kamlesh Tiwari
Manager

Mr. D.K. Singh **Mob. 9793566999**

Excel Pharmaceuticals

B.O. Plot No. 147, Phase-1, Chandigarh
E-mail : excelpharma.singh@gmail.com, www.excelpharmaceuticals.com